1998 से निरंतर प्रकाशित

RNI No. MPHIN/2017/73838

ISSN 2581-446X

वर्ष-3, अंक-1, अगस्त-सितम्बर 2019 ₹ 25/-

कला समय

कला, संस्कृति और विचार की द्वैमासिक पत्रिका

सांस्कृतिक भूमिका के सार्थक 22 वर्ष : 100वाँ अंक

संपादक
भँवरलाल श्रीवास

कला समय

1998 से निरंतर प्रकाशित

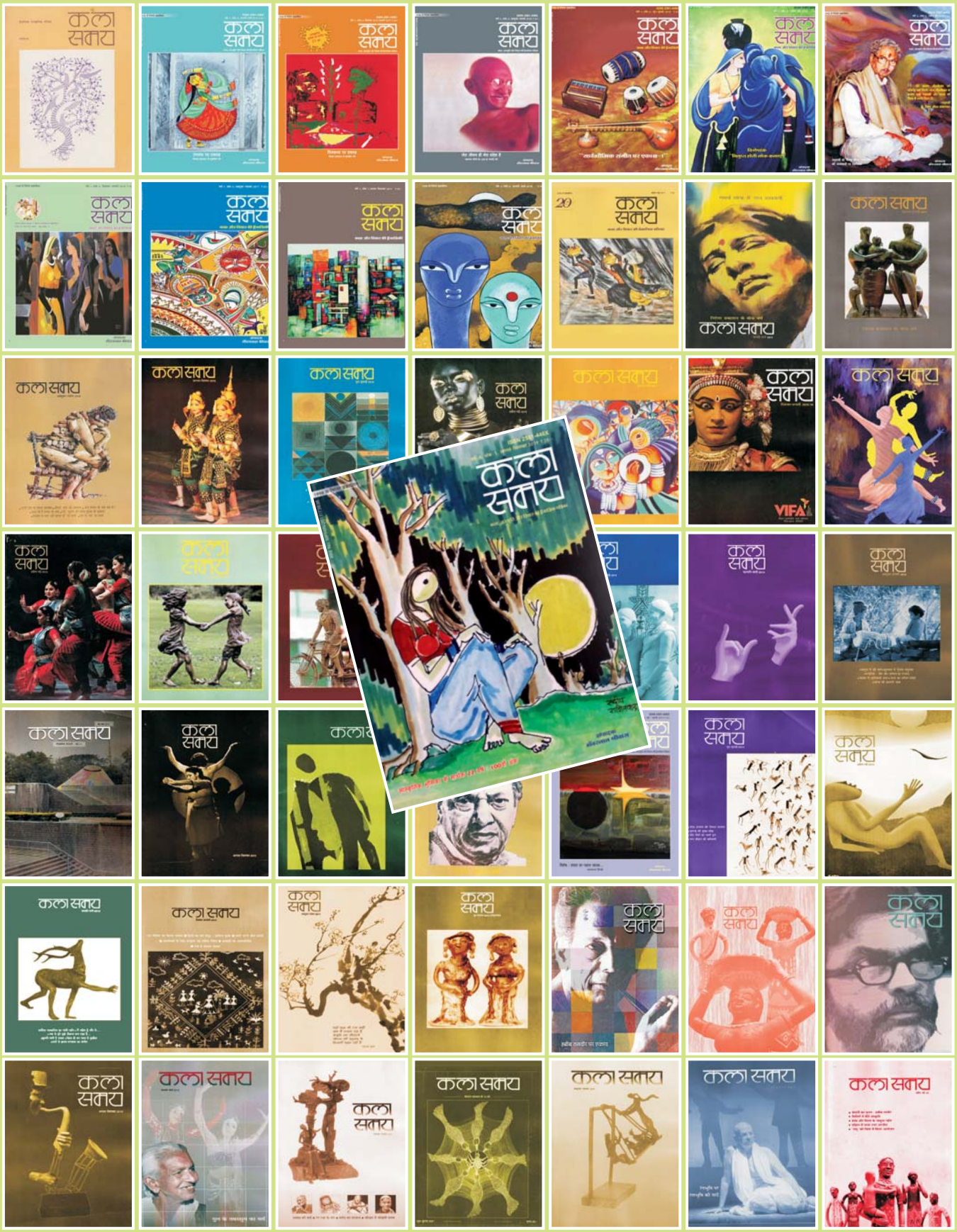

निरंतर यात्रा के 22 वर्ष...

1998 से निरंतर प्रकाशित
RNI NO. MPHIN/2017/73838

कला समय पत्रिका अब वेबसाइट पर उपलब्ध
www.kalasamaymagazine.com

ISSN 2581-446X
(वर्ष : 22+3) पूर्णांक-100,
वर्ष-3, अंक-1, अगस्त-सितम्बर 2019

माधवराव सप्रे समाचार पत्र संग्रहालय एवं शोध संस्थान, भोपाल द्वारा पुरस्कृत
श्री भारतेन्दु समिति कोटा (राज.) द्वारा 'साहित्यश्री' सम्मान एवं
साहित्य मण्डल श्री नाथद्वारा (राज.) द्वारा 'सम्पादक रत्न' सम्मान से सम्मानित

कला समय

कला, संस्कृति और विचार की द्वैमासिक पत्रिका

संरक्षक
नर्मदा प्रसाद उपाध्याय
डॉ. महेन्द्र भानावत
पं. विजय शंकर मिश्र
श्यामसुंदर दुबे
पं. सुरेश तातेड़
कैलाशचन्द्र घनश्याम पाण्डेय

परामर्श
लक्ष्मीनारायण पयोधि
ललित शर्मा
राग तेलंग
प्रो. सज्जनलाल ब्रह्मभट्ट 'रसरंग'
प्रो. सुधा अग्रवाल

सांस्कृतिक प्रतिनिधि
चेतना श्रीवास
डॉ. वर्षा नालमे
उमेश कुमार पाठक
बंशीधर 'बंधु'
पं. देवेन्द्र वर्मा

वेबसाइट प्रबंधन
मयंक अग्रवाल

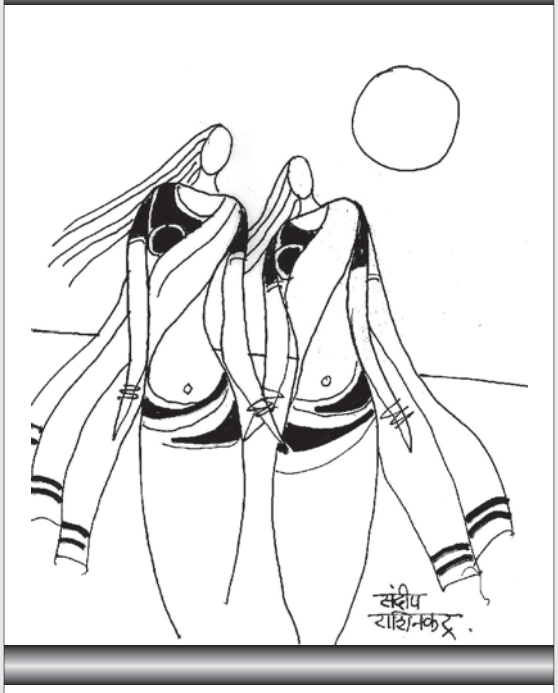

रेखांकन : संदीप राशिनकर

संपादक
भँवरलाल श्रीवास
bhanwarlalshrivas@gmail.com
94256 78058

सह संपादक
डॉ. मधु भट्ट तैलंग

उप संपादक
राहुल श्रीवास

संपादक मंडल
रामेश्वर शर्मा 'रामूभैया'
साहित्य
हरीश श्रीवास
कला
डॉ. मुक्ति पाराशर
संस्कृति
नरिन्दर कौर
प्रबंध

कानूनी सलाहकार
जयंत कुमार मेढ़े (एडवोकेट)

सहयोग राशि

वार्षिक	**: 150 /-**	**(व्यक्तिगत)**
	: 175 /-	**(संस्थागत)**
द्वैवार्षिक	**: 300 /-**	**(व्यक्तिगत)**
	: 350 /-	**(संस्थागत)**
चार वर्ष	**: 500 /-**	**(व्यक्तिगत)**
	: 600 /-	**(संस्थागत)**
आजीवन	**: 5,000/-**	**(व्यक्तिगत)**
	: 6,000/-	**(संस्थागत)**

(कृपया सदस्यता शुल्क- ऑनलाइन/ड्राफ्ट/मनीआर्डर द्वारा कला समय के नाम से उक्त पते पर भेजें)

संपादकीय एवं सदस्यता सहयोग संपर्क -
जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर,
अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.)- 462016
फोन : 0755-2562294, मो.-94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com
वेबसाइट : **www.kalasamaymagazine.com**

ऑनलाइन सुविधा : 'कला समय' का बैंक खाता विवरण
ओरियण्टल बैंक ऑफ कॉमर्स की शाखा **(IFSC : ORBC0100932)** में **KALA SAMAY** के नाम देय, खाता संख्या **A/No. 09321011000775** में नगद राशि जमा कराने के बाद रसीद की फोटोकॉपी अपने पूर्ण पते के साथ हमें भेज दें।

कला समय पत्रिका में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं, यह जरूरी नहीं कि संपादक, प्रकाशक, मुद्रक उनसे सहमत हों। पत्रिका से सम्बन्धित समस्त विवाद, भोपाल न्यायालय के अधीन ही रहेंगे।
सम्पादन, संचालन, प्रबंधन एवं प्रकाशन- अवैतनिक/अव्यवसायिक

विशेष नोट : © सर्वाधिकार सुरक्षित 'कला समय' प्रबंधन यह स्पष्ट करना आवश्यक समझता है कि 'कला समय' में प्रवेशांक फरवरी-मार्च 1998 से लेकर अब तक प्रकाशित होने वाली समस्त सामग्री या सामग्री के अंश के पुनर्प्रकाशन तथा पुनरुत्पादन के सर्वाधिकार कॉपीराइट अधिनियम के अंतर्गत 'कला समय' के पास सुरक्षित हैं। अत: कोई भी व्यक्ति या संस्था 'कला समय' की इस सामग्री या इस सामग्री के अंश का उपयोग प्रबंधन की पूर्वानुमति के बिना न करें।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा दृष्टि ऑफसेट, 36-37, प्रेस काम्पलेक्स, जोन नं-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक- भँवरलाल श्रीवास

नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

नन्दकिशोर शर्मा

डॉ. महेन्द्र भानावत

सुधा अग्रवाल

संदीप राशिनकर

हरि भटनागर

डॉ. कहानी भानावत

इस बार

- संपादकीय / 5

  मनुष्य के पास भाषा से भी पूर्व संगीत था

- आलेख / 6

  प्राचीनकाल में चित्रकला के रंग कैसे बनते थे ?/ नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

- संस्मरण / 8

  एक माह मणिपुरी आदिम जातियों के संग / डॉ. महेन्द्र भानावत

- आलेख / 11

  राजा भृर्तहरि की रम्मत / नन्दकिशोर शर्मा

- आलेख / 20

  कुमारिकाओं में सांझी मांडने की महिमा / डॉ. कहानी भानावत

- आलेख / 23

  रेखाएँ कहना जानती हैं... / नवल जायसवाल

- विश्व कविता / 26

  लैग्स्टन ह्यूज की कविताएँ, अनुवाद : मणि मोहन

  राम सनेही लाल शर्मा 'यायावर' के गीत / 27

  रामेश्वर शर्मा की कविता / 28

  मयंक श्रीवास्तव की ग़ज़लें / 29

- कहानी / 30

  बदबू / हरि भटनागर

- आलेख / 34

  राग-रस-दर्शन / डॉ. तारूणी कारिया

- साक्षात्कार / 36

  एकल विद्यालय फाउण्डेशन यू.एस.ए. / सुधा अग्रवाल

- पुस्तक समीक्षा / 39

  लोक से लुप्त होती माटी की गंध को सहेजने का स्तुत्य प्रयास :
  कृति - मालवा के लोक छंद उदभव और विकास / घनश्याम मैथिल 'अमृत'

- आयोजन / 41

  छोटे से गांव बकायन में मना 125 वर्षीय शास्त्रीय संगीत समारोह

- समवेत / 49

  कला विशेषज्ञा डॉ. मुक्ति पाराशर को राज्य स्तरीय महिला सशक्तिकरण अवार्ड / एक शाम मिर्ज़ा ग़ालिब के नाम / सुर-ताल के आनन्द में झूमे श्रोता / संगीत विदूषी सुधा अग्रवाल का सम्मान / लंदन में संदीप राशिनकर की कलाकृतियों का प्रदर्शन / राष्ट्रीय ख्याति के बाईसवें अम्बिका प्रसाद दिव्य स्मृति पुरस्कारों हेतु कृतियाँ आमंत्रित / ओटला पार्टी समूह प्रदर्शनी इंदौर / मुंशी प्रेमचंद जयंती का आयोजन / डॉ. आशीष जैन आचार्य, सुपार्श्वमती माताजी पुरस्कार से सम्मानित / डॉ. भानावत लिखित कठपुतली पुस्तक का लोकार्पण

शब्द संयोजन एवं आकल्पन - गणेश ग्राफिक्स, भोपाल, 9981984888 | **आवरण चित्र** - संदीप राशिनकर | **अंतिम आवरण चित्र** - संदीप राशिनकर | **छायाचित्र** - मनीष सराठे, सुनील सेन | **रेखांकन** - संदीप राशिनकर, राजेन्द्र नागदेव | **सहयोग** - धन सिंह, लता श्रीवास

संपादकीय

मनुष्य के पास भाषा से भी पूर्व संगीत था

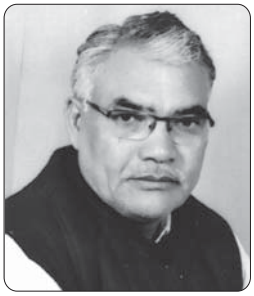

''जिंदगी जीत है विश्वास है तैयारी है
मौत विश्राम है संघर्ष की लाचारी है
यों तो कंधों को हिमालय का बोझ भी हल्का
पर प्यार का भार बहुत भारी है।''

– डॉ. शिवमंगल सिंह 'सुमन'

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी प्रथम कला संगीत को ही मानते हैं। उनके अनुसार ''कविता चित्र और अभिनय अधिक आदिम मानव सिसृक्षा के रूप हैं संगीत और नृत्य तो मानव-पूर्व सहजात धर्म है। मनुष्य के श्वास-प्रश्वास और नाड़ी के रक्त-स्पन्दन में जो छन्द है, लय है, ताल है, गति है, उसी में उनका निवास है। परवर्ती काल में संगीत और नृत्य वाक-तत्व और अर्थ तत्व के यत्न साधित मिश्रण है। यति-तत्व ही उन्हें कला का रूप देता है। मनुष्य के पास भाषा से भी पूर्व संगीत था।'' सभ्यता की ओर अग्रसर होते समय मनुष्य संगीत को छोड़कर संगीत विरहित भाषा प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील हुआ था। संघर्ष की वृद्धि और सहयोग की अत्यधिक आवश्यकता के कारण उसे संगीतात्मक को छोड़कर गद्यात्मकता की ओर अग्रसर होना पड़ा। सभ्यता की ओर अग्रसर होने को वह अपनी अंतर्निहित आवश्यकताओं से ही बाह्य था। जिजीविषा की दुर्वार शक्ति ने उसे उधर ढेल दिया, पर संगीत के लिए वह व्याकुल था। इसी व्याकुलता ने कलाओं को जन्म दिया। कविता आई, अभिनय आया चित्र आया, संगीत के माध्यम से मनुष्य ने अपनी अभिव्यक्ति की शक्तियों का विकास किया और अनेक विधाएँ प्रकाश में आयी। अत: प्रत्येक शब्द एक संकेत-मात्र, इस विश्वव्यापी संगीत की अस्फुट झंकार मात्र है।

"मनुष्य के श्वास-प्रश्वास और नाड़ी के रक्त-स्पन्दन में जो छन्द है, लय है, ताल है, गति है, उसी में उनका निवास है। परवर्ती काल में संगीत और नृत्य वाक-तत्व और अर्थ तत्व के यत्न साधित मिश्रण है। यति-तत्व ही उन्हें कला का रूप देता है।"

इस समय 'कला समय' के सार्थक बाईस वर्ष और सौवें अंक पर एक लघु सांस्कृतिक पत्रिका के लिये आश्वस्त की गहरी सांस लेने का वक्त तो है ही इन बाईस साल और सौवें अंक के कई खट्टे-मीठे अनुभव उतार-चढ़ाव थपेड़े, खरोचें, मिलना-बिछुड़ना, मान-सम्मान, अपमान अपनों का अपनों ने खूब दिया पर यह अवसर एक शतकीय पारी का है। इसके पीछे रचनाकारों, लेखकों का भरपूर सहयोग और पाठकों की प्रतिक्रियाएँ और सदस्यों का आर्थिक संबल के बिना शायद यह रास्ता इतना लम्बा सफर तय कर पाना असंभव सा था। कला समय ने अपनी हद, मर्यादा और गरिमा का पूरा-पूरा हर समय ध्यान रखा है। आर्थिक संकट खूब आये पर स्तरीय सामग्री, विज्ञापनों को ही स्थान 'कला समय' में दिया गया। रचनाएँ, आलेख खूब आये पर कला समय के तेवर, मिजाज को ध्यान में रखकर ही रचनाओं का चयन किया गया। पत्रिका के कलेवर, छपाई, कागज, स्तरीय चित्रों को हमेशा पाक-साफ रखा इसमें कभी समझौता नहीं किया गया। आज भी खूब याद है 'कला समय' का प्रवेशांक फरवरी-मार्च 1998रवीन्द्र भवन की वासंती शाम गोधूली बेला दिन 29 जनवरी 1998उपस्थित गुरु द्वैय का अजर-अमर अभय वरदानी पुरुष परम श्रद्धेय राजेश्वर आचार्य और डॉ. श्रीराम परिहार दोनों का चिर स्थाई आशीर्वाद को हमने दोनों हाथों से अपना दामन फैलाकर समेटा। आज तक उसी पूँजी की बरकत से 'कला समय' अपनी मौन साधना में लीन नन्हें-नन्हें पैरों से बाईस साल की युवा देहली पर अपने सौवें अंक के साथ आपसे मुखातिब हैं। अब पाठकों और गुणी जनों की मांग व सलाह अनुसार और पत्रिका के मिजाज अनुसार विविध कलाओं का समावेश करते हुए रूपंकर कला, रंगमंच, कविता, साहित्य, फिल्म, व्यंग्य, कहानी, साक्षात्कर, कला शख्सियत, धरोहर, बाल कलाकार, समवेत (समाचार) सांस्कृतिक गतिविधिया, शोध पत्र, समीक्षा, संस्था कला समय की गतिविधियों का समावेश किया जा रहा है। आप सुधि लेखक, पाठकों से हमारा विनम्र आग्रह है कि पूर्व की भाँति हमें आपका सहयोग यथावत बना रहेगा।

कृपया अपनी प्रतिक्रिया अवश्य भेजें।

–भँवरलाल श्रीवास ■

आलेख

प्राचीनकाल में चित्रकला के रंग कैसे बनते थे ?

नर्मदा प्रसाद उपाध्याय

कहते हैं कि रूप शाश्वत नहीं होता। समय के साथ रूप भी ढल जाया करता है, लेकिन यह अधूरा सच है। वह रूप जिसे किसी चितेरे ने अपने रंगों में ढाल दिया है, उसका अस्तित्व मिटता नहीं। इतिहास इसका साक्षी है। चाहे किशनगढ़ शैली के महान चित्रकार निहालचंद की बणी-ठणी हो या लियोनॉर्ड दि विंशी की अमर कृति मोनालिसा। ये रंगों में अपने स्थायित्व को आज भी बरकरार रखे हुए हैं।

अजंता के भित्ति चित्रों से लेकर मुग़ल शैली व राजपूत शैली में बनाए गए लघुचित्रों तक, जो भारतीय चित्रांकन की परम्परा है, वह इस तथ्य की साक्षी है कि रंगों ने रूप को जीवंत रखा, अमिट रखा, अमर रखा।

भारतीय चित्रकला की परम्परा में रंगों का अपना अलग स्थान है। अजंता के भित्ति चित्रों के रंग आज भी शोध के विषय हैं। अजंता के भित्ति चित्रों के बाद एक लम्बे अन्तराल तक हमारे इतिहास में चित्रांकन की परम्परा लुप्त दिखाई देती है, लेकिन 16वीं शताब्दी से 18वीं शताब्दी के बीच जो चित्र बने, उन्होंने यह सिद्ध किया कि इस परम्परा को समय के प्रहारों ने भले विलुप्त कर दिया हो लेकिन वह अपनी पूरी प्रखरता के साथ जीवित रही है।

मध्यकालीन चित्रों को चाहे वे मुग़ल शैली के हों या राजपूत और पहाड़ी शैली के, उन्हें देखने पर यह प्रतीत होता है कि हमारे चित्रकार रंगों के प्रति कितने संवेदनशील थे। यह जानना बड़ा रोचक होगा कि इन मध्यकालीन चित्रों में प्रयुक्त रंग कौन-कौन से थे तथा उन्हें किस प्रकार तैयार किया जाता था ?

विष्णुधर्मोत्तर पुराण में मूल रंग 5 माने गए हैं-

मूलरंगाः स्मृताः पंच श्वेतः पीतो विलोमतः।
कृष्णो नीलश्च राजेन्द्र शतशोन्यरसाः स्मृताः।।

इसी पुराण में यह सिद्धांत भी प्रतिपादित किया गया है कि स्वविवेक से अनेक प्रकार के रंग उपलब्ध हो सकते हैं। बाण ने भी पाँच ही मूल रंग माने हैं। हर्ष और सोड्ढल भी मूल रंग चार मानते हैं। ये सभी विद्वान लाल, पीले व नीले से सफेद रंग को अलग मानते हैं।

उपलब्ध रंगों को शिला पर घिसकर उसका चूर्ण बनाया जाता है, फिर उस रंग को पानी में घोलकर गोंद डालने के बाद निथार लिया जाता है। यह प्रक्रिया निरन्तर दोहराई जाती है, जब तक कि मिट्टी का अंश अलग न हो जाए। इसके बाद पानी अलग कर रंग या तो सुखा लिया जाता है या उसकी गोली बना ली जाती है। ज़रूरत पड़ने पर रंग में सूखा गोंद डालकर उँगली या अँगूठे से पानी के साथ धीरे-धीरे घोंटकर रंग तैयार कर लिया जाता है। घुलते-घुलते रंग पेस्ट की तरह गाढ़ा होने लगता है, तब ताकत लगानी पड़ती है। इस प्रक्रिया को ताव देना कहा जाता है। खड़िया, पाला, रामरज, गेरू और हराभाटा आदि रंग इसी तरह तैयार किए जाते हैं। चित्रों में जो रंग प्रयुक्त किए गए, उन्हें चार भागों में बाँटा जा सकता है।

खनिज रंग, वनस्पति रंग, आक्साइड रंग व धातु रंग।

खनिज रंग को भूमि रंग या मूल रंग भी कहा जाता है। सफ़ेद रंग को खड़िया से तैयार किया जाता है। यह खदानों से प्राप्त होता है। काले रंग को काजल से प्राप्त किया जाता है। इस काजल में बबूल की गोंद व पानी मिलाकर धीरे-धीरे घोटते हुए ताव देकर काला रंग तैयार करते हैं। शिंगरफ जिसे हंसराज हिंगलू भी कहते हैं, भारी पत्थर के रूप में मिलता है। इसे भेड़ के दूध में घोटकर नींबू के रस के साथ कई बार पानी डालकर निथारा जाता है।

रामरज भी पत्थर रूप में होता है तथा इसे भी निथारकर इसकी मिट्टी अलग की जाती है। गेरू भी रामरज की ही तरह होता है। हराभाटा भी पत्थर से प्राप्त किया जाता है। खनिज रंग के रूप में मुलतानी मिट्टी भी प्रयुक्त की गई है। लाजवन नीला रंग है। मानसोल्लास में इसका नाम राजावर्त भी है। यह हल्के नीलम का चूर्ण है। बूँदी शैली के चित्रों में इसका सबसे अधिक प्रयोग किया गया है।

हरताल का रंग पीली तुरई के फूल जैसा होता है। इसे थोर के दूध में घोंटकर नींबू के रस से साफ किया जाता है। पीला रंग पेवड़ी से तैयार किया जाता है। गहरा पीला रंग मेन्सिल से प्राप्त होता है। सीली एक प्रकार का पत्थर होता है, जिसे पीसकर हरा रंग प्राप्त करते हैं। 19वीं शताब्दी के चित्रों में इसका बहुतायत से प्रयोग मिलता है।

वनस्पति रंग पेड़-पौधों आदि से प्राप्त होते हैं। देशी नील, नील के वृक्ष से प्राप्त किया जाता है। पलाश के फूलों से गहरा लाल रंग मिलता है। विष्णुधर्मोत्तर पुराण में किये उल्लेखानुसार पलाश का लाल रंग नीले में मिलने पर तथा उसमें सफेद रंग मिलाने पर नील अधिक नीला लगने लगता है। लालरंग, बेरी, पलाश या पीपल की छाल से भी प्राप्त किया जाता था। पीले रंग को केसुला के फूलों से प्राप्त किया जाता था। वास्तव में यह पूरी तरह पीला रंग नहीं होता था। इसे केशरिया रंग कहा जा सकता है। इस रंग में चूने को मिला दें तो यह लाल हो जाता है।

सारारेवण से पारदर्शी पीला रंग प्राप्त होता है। काले रंग की

प्राप्ति के लिए त्रिफला (हर्र, बहेड़ा, आँवला) का प्रयोग किया जाता था। त्रिफला को लोहे के पात्र में भिंगोया जाए तो काला रंग मिलता है। आँवलों को जलाकर भी काला रंग प्राप्त किया जा सकता है। जानवरों के खाने के चारे से हरा रंग प्राप्त किया जाता था।

यद्यपि जामुन, गाजर, थोहर के ढोढे के फल से भी रंग प्राप्त होते हैं लेकिन मध्यकालीन लघुचित्रों में इनका प्रयोग नहीं किया गया। कत्थई रंग कत्थे से प्राप्त किया जाता था। मध्यकाल में गोकल गाय नामक एक कृमि से गहरा लाल रंग व गुलाबी रंग बनाया जाता था।

आक्साइड के रासायनिक रंग भी मध्यकालीन चित्रों में प्रयुक्त किए गए तथा सीसे, सांभर, सुहागे व शोरे की रासायनिक प्रक्रिया द्वारा सिंदूर भी बनाया गया। ताँबे, नौसादर व नींबू के रस से जंगाल प्राप्त किया गया, जो हरे रंग का होता था। पुराने चित्रों में इसका बहुतायत से प्रयोग मिलता है। 18वीं से 19वीं शताब्दी के बीच गहरे नीले रंग का भी प्रयोग किया गया। यह फ्रांस से आयात किया जाता था। लाल रंग के लिए एक विशेष प्रकार के कृमि का उपयोग किया जाता था। कृमि दाने से प्राप्त रंग से गहरा लाल रंग व गुलाबी रंग भी बनाया जा सकता था।

गऊ गोली रंग एक विवादास्पद रंग है, जिसके प्राप्त किए जाने से सम्बंधित कई भ्रांतियाँ जुड़ी हुई हैं। यह रंग गहरा पीला व केशरिया झलक लिए होता है। गो रोचन का भी इसी सन्दर्भ में उपयोग करते हैं। डॉ. मोतीचंद्र ने विस्तार से इस बाबत् व्याख्या की है। विद्वानों का अंत में यही निष्कर्ष है कि यह पेवड़ी की तरह तैयार किया जाने वाला पीला रंग है। मध्यकालीन चित्रों में धातु रंगों का भी प्रयोग हुआ है। सोना, चाँदी, रांगे की हिल व ताँबे से धातु रंग प्राप्त किए जाते थे। सोने का वर्क बनाकर उसका उपयोग होता था। चाँदी के वर्क भी बनाए जाते थे। इन वर्कों को घोंटने पर प्रयुक्त किए जाने वाले रंग प्राप्त होते थे।

मध्यकालीन चित्रों में जो रंग प्रयोग किए जाते थे, उन्हें नाम भी दिया जाता था। जैसे कबूतरी, फाकतई, बादामी, तोतई, ओगिया, तरबूजी, तोरूफूरा, जामुनी, गुलाबी, शिंगरफ, अम्बरी, किरन, सिंदूरी, खाकी व मोरपंखी आदि। गोंद का माध्यम के रूप में प्रयोग किया जाता था, इसके अलावा सरेस को भी उपयोगी माना जाता था।

मध्यकालीन चित्रों में प्रयुक्त होने वाले रंगों के सम्बंध में बहुलता से जानकारियाँ उपलब्ध हैं। विभिन्न प्रकार की पृष्ठभूमियों को तैयार करने के लिए खनिज रंगों का उपयोग किया जाता था। सोने व चाँदी के बुरादे व काली तथा लाल स्याही का उपयोग लिखने तथा चित्रकारी के लिए होता था। सचित्र पोथियाँ सोने और चाँदी के रंगों से बनाई जाती थीं। सोलहवीं से अट्ठारहवीं शताब्दी में लाल, पीले व नीले रंगों से सफेद रंग को अलग माना जाता था।

16वीं शताब्दी में लिखे गए एक संस्कृत ग्रंथ शिल्प शास्त्र में मध्यकालीन चित्रों में प्रयोग किए जाने वाले रंगों के बारे में काफी जानकारी दी गई है। विभिन्न प्रकार के रंगों को बनाए जाने की विधियाँ भी इस ग्रन्थ में दी गई हैं। विभिन्न प्रकार के रंगों को परस्पर मिलाने से कौन से नए रंग प्राप्त हो सकते हैं, यह वर्णन भी मिलता है।

उक्त वर्णन मध्यकालीन चित्रों में प्रयुक्त होने वाले रंगों की एक झाँकी भर है। तत्कालीन चित्रकार मौलिक प्रयोग विधि के पक्षधर थे, इसलिए उन्होंने अपनी कल्पना को सजीव करने के लिए विभिन्न माध्यमों से रंग प्राप्त किए। इन कलाकारों की मौलिक प्रतिभा और अपूर्व साधना का दूसरा उदाहरण मिल पाना मुश्किल है। इन महान कलाकारों ने रंगों को साधकर रूप को सदैव के लिए अमर कर दिया।

– 85, इंदिरा गांधी नगर, आर.टी.ओ.कार्यालय के पास,
केसर बाग रोड़ इंदौर–9 (म.प्र.)
मो. 09425092893

सप्तवर्णी कला-साहित्य सृजन-शोध पीठ भोपाल (स्थापना : 2012)

साहित्य एवं रूपांकन कलाओं के बहुआयामी शोध-सृजन, संग्रहण तथा प्रकाशन को समर्पित

श्री उमावल्लभ षडंगी भाषा-संस्कृति साहित्यालोचना सम्मान

सम्मान राशि : 50000/-

संकल्प बिंदु

1. **खंगाल :** अर्वाचीन मध्यप्रदेश के पुरोधा कलावंतो की स्थायी कलादीर्घा एवं विविध प्रादर्श संग्रह।
2. **स्टूडिओ आवाँ-गार्द :** कला-सृजन एवं आधुनिक कला-विज्ञान की प्रयोगशाला।
3. **आसन्दी –** साहित्य-सृजन।
4. **हिन्दी-ओड़िया** साहित्य सेतु।
5. **ग्रीक-भारत सेतु –** बौद्ध एवं ऑर्थोडॉक्स ईसाई कला-साहित्य-शोध।
6. **विविध भाषा-**भाषी संदर्भ-साहित्य प्रकोष्ठ।
7. **रूपध्वनि –** कला-साहित्य की आलोचना-पत्रिका (पूर्व आर्ट-फोकस शीर्षक का परिवर्तित नाम)।

प्रतिष्ठापक : प्रो. राजाराम **निदेशक : डॉ. बिनय षडंगी राजाराम**

संरक्षक : सौमित्र शर्मा, निदेशक, ओनेट डिजिटल नेटवर्क्स प्रा.लि./ओनेट डिजिटल इंफ्रास्ट्रक्चर प्रा.लि. इंदौर

डॉ. कौस्तुम शर्मा, विश्व-समन्वयक जीएसएलईपीपी, बिशकेक किर्गिज़स्तान एवं वरिष्ठ वन्य-जीव पारिस्थितिकीविद्-अंतर्राष्ट्रीय स्नोलेपर्ड ट्रस्ट डीएम, सिएटल (यूएसए)

एच-8, सप्तवर्णी, सूर्या परिसर, सर्वधर्म, सी-सेक्टर, डॉ. श्यामाप्रसाद मुखर्जी नगर, कोलार रोड, भोपाल-462042

दूरभाष: 0755 2493678, 4907977, मो.: 09826215072, 09826051959, ई-मेल : binayrajaram8@gmail.com, profrajaram22@gmail.com

संस्मरण

एक माह मणिपुरी आदिम जातियों के संग

डॉ. महेन्द्र भानावत

उदयपुर के भारतीय लोक कला मण्डल की एक परियोजना के तहत वहां रहते मैंने मणिपुर की आदिम जातियों के सांस्कृतिक सर्वे के लिए एक माह की यात्रा की। यह यात्रा 20 नवम्बर से 10 दिसम्बर 1960 तक रही। इस काल में उखरूल तथा चुराचान्दपोल नामक डाकघर हमारे प्रवास स्थल बने। इस यात्रा में मेरे साथ खोज-विभाग के अधिकारी राजेन्द्रसिंह बारहठ तथा सुनील कोठारी थे जिन्होंने बाद में भारतीय नृत्यों के ख्यातिलब्ध अध्येता के रूप में अपनी विशिष्ट पहचान बनाई। हमारे खाने-पीने की व्यवस्था के लिए हमने अपने साथ एक आदिवासी सेवादार ले लिया।

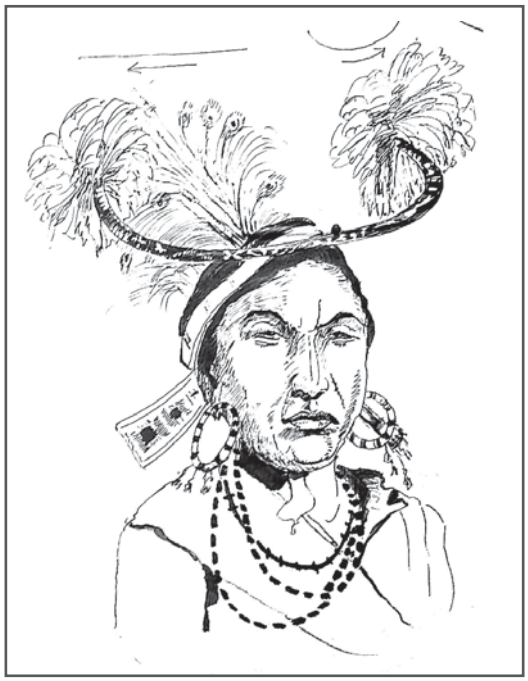

मणिपुर की प्राकृतिक छटा का क्या कहना! ईश्वर की एक ऐसी अद्‌भुत देन ही कहा जाएगा, जो अन्यत्र शायद ही कहीं मिले। सदा हरे रहने वाले भालू के बालों की तरह घने जंगल, सीधे तने ऊंचे-ऊंचे गगनचुम्बी वृक्ष जैसे मिलेट्री के नौजवान हर समय लड़ने-मारने के लिए तैयार खड़े हैं और उनके बीच जाती हुई पगडंडी जैसे घने बालों के बीच मांग। चावल के फ-पकाये खेत जैसे चांदी की पतली-पतली शलाकें धरती पर आंख गड़ाये, क्षण-प्रतिक्षण दायें-बायें हिलती-डुलती अपने प्रिय मिलन की चिर प्रतीक्षा कर रही हो अथवा किसी ने बड़े-बूढ़े के फ-पकाये सुन्दर सफेद कठोर बाल बिखेर रखे हों। छोटी-छोटी बकरियां जैसे हिरण के सुडौल स्वस्थ भोले-भाले बच्चे बस्ती में आकर छलांग भर रहे हैं। पहाड़ियों पर का कुहरा जैसे किसी ने वेलवेट बिछा रखा हो अथवा पर्वतीय महलों पर पहल ही पहल उड़ेला जा रहा है।

मैदानों और विशेषकर पहाड़ियों के बीच बसी नृत्य और गीतों की धनी, संस्कृति और सभ्यता की रक्षक मणिपुर की आदिम जातियों ने पहाड़ों के गर्भ, मैदानों की ओट और वृक्षों की खोखलों में अब तक अपनी संस्कृति और सभ्यता को कायम रखा है। ये जातियां अपनी संस्कृति और सभ्यता में सुसंस्कृत एवं सुसभ्य हैं। विविध रूपों एवं रंगों की डिजाइनदार चित्ताकर्षक पोशाकों को पहन जब जवां-मर्द-औरतें नृत्य करने को उतारू होते हैं तब लगता है कहीं तो भयंकर युद्ध हो रहा है, धरती फटी जा रही है। कहीं जैसे रासरंग, कीर्तन एवं भजन हो रहे हैं। कहीं छनक-छनक छुमरियां तो कहीं रूनक-झुनक और होली की डांडियाँ, कहीं कण्व के आश्रम में जैसे शकुन्तला बालाएँ और कहीं ग्राम गोपिकाओं के साथ नटवर नागर की क्रीड़ाएँ, शान्त संगीत, नृत्य और गीत। स्नेह सुख और स्वर्ग! आनंद, उत्साह, उल्लास और आश्चर्य!!

नृत्य कुछ गोलाकार और अधिकतर चन्द्राकार होते हैं। नाचते समय इनकी अलग पोशाकें होती हैं जो बहुत ही कीमती होती हैं। प्राय: सभी एक ही प्रकार की पोशाकें पहनते हैं। नृत्य के साथ वाद्यों में प्राय: झालर, ढोलक अथवा ढोलकी, बाँस की बनी बाँसुरी और सिरकी (सींग का बना वाद्य) ही प्रमुख होते हैं। नृत्यों के कदम अत्यन्त हल्के तथा सीमा में बंधे होते हैं। गीतों के बोल भी अत्यन्त मंद गति लिये होते हैं इसलिए दर्शकों को इनसे कोई विशेष मनोरंजन प्राप्त नहीं होता है कारण कि इनके नृत्य दूसरों के लिए न होकर स्वयं अपने ही लिये स्वान्त:सुखाय होते हैं।

इन्हें नृत्य के लिए तैयार नहीं करना पड़ता बल्कि नृत्य ही स्वयं नाचने को उतारू हो जाता है। जीवन के प्रत्येक पहलू पर नाच और गान है। इनके नृत्य अपने नृत्य होते हैं। प्रत्येक नृत्य के साथ उससे सम्बन्धित गीत गूंथे हुए हैं। स्त्री-पुरुषों के अलग-अलग नृत्य नहीं के बराबर हैं। गीतों की एक लाइन मुखिया बोलता जाता है और उसी के इशारे के अनुरूप सभी नाचते-गाते रहते हैं।

मणिपुर नामकरण के सम्बन्ध में विभिन्न लोककथाएँ प्रचलित हैं लेकिन सबसे मूल में राधा-कृष्ण और उनके द्वारा अभिनीत रासलीला के प्रसंग ही अधिक सुनने को मिलते हैं। ऐसी प्रसिद्धि है कि एक बार इसी रंगस्थली में राधा-कृष्ण ने रास रचाया। उसे देख शिव-

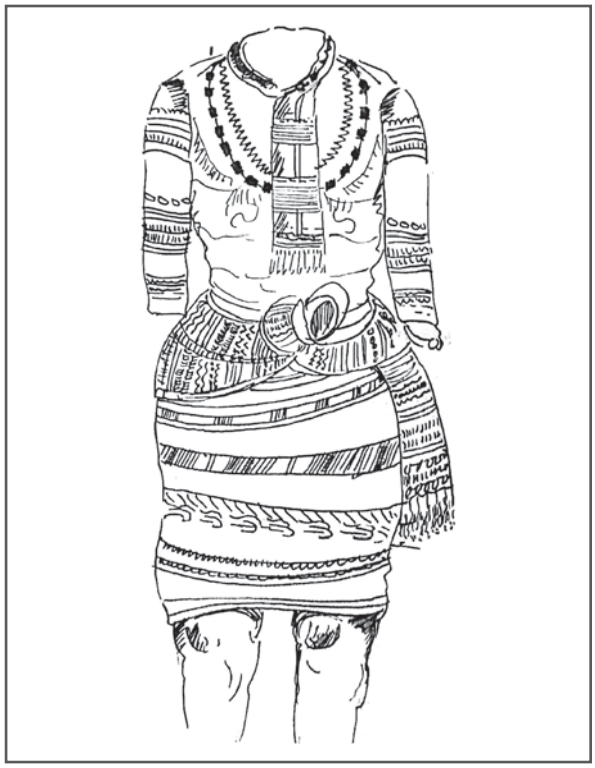

पार्वती इतने मोहित हो गये कि लगातार सात दिन वे भी रासलीला करते रहे। जिस रंगस्थली पर यह प्रदर्शन हुआ उसे शेषनाग द्वारा बड़े भव्य रूप में मणि-मालाओं से सज्जित कर आकर्षक रूप दिया गया। मणि-मालाओं की यह सज्जा इतनी भव्यता लिये थी कि दर्शकों ने वहीं अपना निवास बना लिया जो आगे जाकर एक पुर के रूप में दृष्टिगोचर हुआ और मणिपुर के रूप में जाना गया।

रासलीला के आयोजन देश के कई भागों में होते हैं किन्तु मणिपुर की रासलीला सबसे निराली अपना वैशिष्ट्य लिये हैं। इस नृत्य की ख्याति पूरे विश्व में है। रास के अलावा लाईहराओबा, थाबल चोडबा, खूंबा थोइबी तथा जनजातियों में प्रचलित नृत्य मणिपुरी संस्कृति के उज्ज्वल दास्तान हैं।

बसन्त से वर्षा त्रतु तक लाईहराओबा का आयोजन देवता को प्रसन्न करने के लिए किया जाता है। लाई का अर्थ ही देवता है। हराओबा से तात्पर्य उत्सवजनित आनन्द प्राप्ति से है। सृष्टि के उद्भव एवं विकास की कथा को नृत्य-संगीत रूप में आबद्ध कर गर्भधारण से लेकर प्राणी के विकास एवं जीवन निर्वाह के लिए कृषि, बुवाई, बुनाई, गृह निर्माण, ईश आराधना जैसे प्रसंगों को बहुत ही खूबसूरती से प्रस्तुत किया जाता है। यह एकल, युगल और समूह रूप में भी किया जाता है।

थाबल चोड़बा से तात्पर्य चाँदनी रात के नृत्य से है। फाल्गुनी पूर्णिमा को युवक-युवतियाँ समूहबद्ध घेरे में हाथ में हाथ डाले ढोल नगाड़े की धुन पर थिरकते हैं। गीतों में सृष्टि निर्माण के प्रसंग, प्रचलित प्रेमकथाएँ तथा पौराणिक कथा-प्रसंग वर्णित रहते हैं। खंबा थोइबी में खंबा और थोइबी की प्रेमकथा पिरोई मिलती है। एकतारा पर संगीत की सुहानी धुन पर मोइरांग की राजकुमारी थोइबी तथा सामन्त पुत्र खंबा के अटूट प्रेम की कथाबद्ध गीति रचना का कमाल मिलता है।

रास दो तरह के प्रचलन में है। कृष्ण अपने गोप-सखाओं के साथ गाय चराने का जो भाव व्यक्त करते हैं वह गोप रास है जबकि रासलीला में राधा गोपियों के साथ कृष्ण के दिव्य प्रेम को प्रदर्शित किया जाता है।

नागा मूलतः आदिवासी हैं। इनमें प्रमुख आओ, चांग, कोन्याक, सेमा, फोम, लोथा, अंगामी, कुकी, रेंगमा, चकेसांग, पोचुरी, यिमचुंगवार हैं। मणिपुरी समाज नारी का प्राधान्य लिये है। महिलाएँ ही सारा व्यापार तथा कारोबार करती हैं। ऐसे बाजार जगह-जगह मिल जायेंगे जहाँ महिलाएँ ही मिलेगी। ये बाजार इमा बाजार अर्थात् महिला बाजार के नाम से जाने जाते हैं।

यहाँ के लोग बहुत भोले-भाले, अंगूर अथवा आगरे के पेठों जैसे भीतर-बाहर से एक सरीखे होते हैं। इन्हें न किसी से लेना होता है न किसी को देना। न इन्हें डाक्टर की जरूरत पड़ती है, न खाने-पीने अथवा काम-कमाई की चिंता ही रहती है। स्वयं ही डाक्टर, नाई और धोबी, स्वयं ही किसान, शिकारी, बुनकर तथा स्वयं ही मालिक, मजदूर और खाती।

अतिथि सत्कार में ये लोग बड़े प्रवीण होते हैं। प्रत्येक के साथ बहुत जल्दी घुलमिल जाना, उनके दुख में दुख महसूस करना, उनकी हर तरह से देखभाल करना ये खूब जानते हैं। बड़े-बूढ़े सलाम-

सलाम कर झुक जाते हैं। छोटे-छोटे बालक-बालिकाएँ फूलों की मालाएँ पहनाकर झुक जाती हैं। वे झुकते कि हमारे हृदय और मस्तिष्क एक साथ झुक जाते। कितना अतिथि सत्कार! लगता है प्राचीन भारत की अतिथि सत्कार की कथा-कहानियाँ जैसे लुप्त होते-होते यहाँ आकर अटक गई और आज भी अपनी प्राचीनता लिये अपने शेषपन पर अभिमान कर रही हैं।

जाते समय, उनसे मिलते समय, स्वागत गीतों की बहारें, हर्ष में आँसू और विदा होते समय 'गुडबाई ब्रदर, गुडबाई ब्रदरज; केवल दो घण्टे का मिलन जैसे जन्म भर से साथ रहते आये हैं और आज अचानक बिछुड़ रहे हैं। उन्हें विश्वास है कि हमारा फिर से मिलना होगा। यदि यहाँ नहीं मिल सके तो स्वर्ग में तो मिलेंगे ही मिलेंगे। वे हमें पानी की बजाय राईस बीयर पिलाते। स्वागत के लिये नाचते-गाते। अच्छा खिलाते-पिलाते परन्तु फिर भी बार-बार ये ही शब्द उनके मुँह से निकला करते कि हम आपका अच्छा स्वागत नहीं कर पा रहे हैं। ये ही सच्चे अर्थों में मेहमानदारी करने वाले लगे। हम उनसे जो भी प्रश्न पूछते वे बड़े धैर्य, शान्ति तथा दिलचस्पी के साथ उनका उत्तर देते।

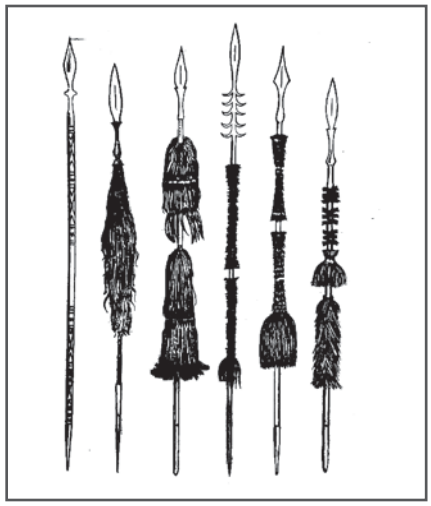

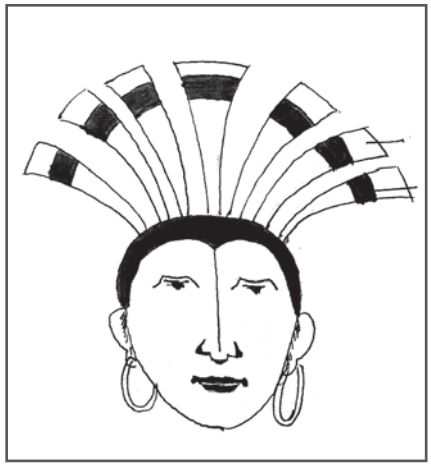

लकड़ी के पाटियों के बने एक मंजिल के अत्यन्त साफ-सुथरे मकान और लकड़ी के दरवाजों पर जानवरों के नाक, सींग, नरमुण्ड तथा गायों के पिछले पांवों की शक्ल के उभरांकन। मकानों की दीवालों पर जैसे अपने इधर हाथी और संतरी चित्रित किये जाते हैं, उसी प्रकार उनके वहाँ लम्बे-लम्बे सींग वाले हट्टे-कट्टे जानवरों के मुंह टंगे रहते हैं और घरों में भी तस्वीरों और बान्दरवारी की जगह छोटे-बड़े जानवरों के सिर ही सिर लटके, टंगे मिलेंगे। ये ही चीजें इनकी श्री-सम्पन्नता तथा गौरव की प्रतीक मानी जाती हैं। मकानों के बाहर चार-चार, पाँच-पाँच शाखाओं वाले ठूंठ रोपे रखे होते हैं। ऐसा कहते हैं कि जो व्यक्ति जितने जानवर एक साथ मारकर दावत रूप में समाज को खिलाता है वह उतनी ही शाखा वाला वृक्ष जंगल से लाकर अपने घर के बाहर रोपता है। जिस आदमी के बाहर ज्यादा वृक्ष होते हैं वह उतना ही धनी तथा इज्जतदार समझा जाता है।

इधर चावल के साथ-साथ मकई भी बहुत पैदा होती है परन्तु मकई को ये लोग खाते नहीं हैं, बल्कि जलाते हैं तथा सुअरों को खिलाते हैं। छिलके सहित भुट्टे घरों में औंधे लटके रहते हैं जैसे वृक्ष की शाखाओं से चिमगादड़ लटके हों अथवा कि बया पक्षी के घोंसले लटक रहे हों। लड़के मांस के लौंदों के साथ खेलते-कूदते और मनोरंजन करते हैं। घरों में सुअर, मुर्गे-मुर्गी तथा कुत्ते पाले जाते हैं। ये लोग गाय, भैंसा, हिरन, कुत्ता, सुअर, साँप तथा मुर्गे-मुर्गी मार कर खाते हैं। इनके हर त्यौहार, उत्सव तथा मांगलिक पर्व पर जानवरों की बलि होती है। वैसे इनको दैनिक भोजन ही इन जानवरों को मारकर खाना और चावल की बनी शराब पीना है।

एक जगह अच्छे मनोरम खुले स्थान पर हमने नागा स्त्री-पुरुषों का झुण्ड देखा। उनके बीच में एक खम्भा रोप रखा था जिससे एक भीमकाय भैंसा बँधा हुआ था। उसके चारों ओर सजेधजे स्त्री-पुरुष उस भैंसे के शरीर पर हर कहीं तीर की मार करते हुए नृत्यमग्न थे। भैंसा लहूलुहान हुए घायल था। जब वह अधमरा हो गया तो उसका सिर अलग कर दिया गया। ऐसा दृश्य मैंने पहले कभी नहीं देखा था। मुझे उल्टियाँ होने लगीं और बेचैनी बढ़ती देख वहाँ से अपनी राह नापनी पड़ी।

पुरुष और स्त्रियाँ नीचे कमर में लाइन क्लाथ पहनती हैं और शरीर पर चादर ओढ़े रहती हैं। कहीं-कहीं आदमी अर्धनग्न भी रहते हैं। स्त्रियाँ अधिक मेहनती होती हैं। औरतें अपने बच्चे-बच्चियों को पीठ पर चादर में लपेटे रहती हैं जैसे बन्दरी अपने बच्चे को अपने सीने से चिपकाये रहती है उसी प्रकार बच्चा भी माँ की पीठ पर चिपका रहता है और अपने आपको अधिक प्रसन्न और सुखी अनुभव करता है। समाज में पुरुष और स्त्रियों का समान दर्जा है। इनका जाति संगठन बड़ा सुदृढ़ है। प्राय: हर गाँव में इनका अपना मुखिया होता है जिसकी सभी इज्जत करते हैं। एक-दूसरे के कामकाज में सभी मदद करते हैं।

सारे मणिपुर में करीब बीस प्रकार की भाषा बोली जाती है इसलिए एक-दूसरे की भाषा समझना बड़ा कठिन हो जाता है। आवागमन के साधनों के नितान्त अभाव के कारण इन लोगों ने पहाड़ों और जंगलों की आड़ में अपनी सभ्यता, संस्कृति तथा सत्ता को बचाये रखा है परन्तु आने वाले समय में ये वैसे के वैसे रह पायेंगे, नहीं कहा जा सकता।

-352, श्रीकृष्णपुरा, सेंट पॉल्स स्कूल के पास, उदयपुर
मो. 9351609040

■

आलेख

राजा भृर्तहरि की रम्मत

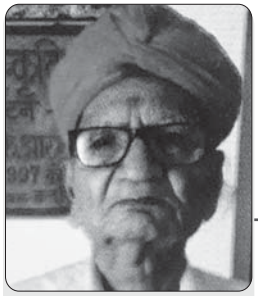

नन्दकिशोर शर्मा

उज्जैन, मालवा (मध्यप्रदेश) के राजा भृर्तहरि के जीवन पर आधारित मारवाड़ और मालवा की संस्कृति को जोड़ने वाली रम्मत। जैसलमेर के कवि तेज द्वारा मारवाड़ी, राजस्थानी भाषा में गेय शैली में रचीराजा भृर्तहरि की रम्मत।

नन्दकिशोर शर्मा
इतिहासकार, संस्थापक मरू सांस्कृतिक केन्द्र, जैसलमेर

गायन, वादन, नृत्य अभिनय और संवाद से जन जन का लोकरंजन करने वाली हमारी प्राचीन पारस्परिक लोक नाट्य शैलियों में रम्मत अपना विशेष महत्व रखती है। रातभर चलने वाली रम्मत अभिनय कर्ता और दर्शक दोनों को परस्पर आनंदित करती है। टेरिये लम्बी आलाप के साथ टेर दोहराते है। तब अभिनय कर्त्ता नृत्य करता है। सम पर अभिनयकर्त्ता को लाने के लिये बोला जाता है। जय जय जगदम्ब मात की जय।

जैसलमेर के रंगकर्मी नन्दकिशोर शर्मा 83 वर्षीय स्वयं रम्मतों में स्त्री-पुरुष की भूमिकाओं में अभिनय कर चुके हैं तथा रम्मतों के रचनाकार है। बता रहे है जैसलमेर की कवि तेज द्वारा रचित मारवाड़ जैसलमेर, बीकानेर, फलौदी, पोकरण, वाप, मलार आदि क्षेत्रों में खेली जाने वाली राजा जोग भृर्तहमिध्यर की रम्मत की कहानी और प्रस्तुती।

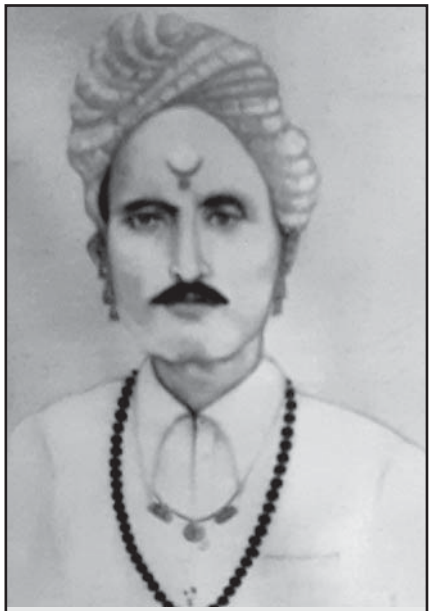

लोकनाट्य 'रम्मत' के महान खिलाड़ी कवि तेज

रम्मत ख्याल, खेल, तमाशा आदि नामों से जानी जाने वाली लोकरंजन कलाविद्या रम्मत विलुप्त होती जा रही है। यह जैसलमेर, पोकरण, फलौदी और बीकानेर में अभी भी जीवित है। शौकीन कलाप्रेमी किसी भी जाति, धर्म या सम्प्रदाय के हो इसमें अभिनय कर सकते हैं।

जब मनोरंजन के आज की तरह वैज्ञानिक साधनों का अभाव था, उस समय लोग रात-रात भर जागकर रम्मत लोक नाट्य कला का आनंद लेते थे तथा कलाकार गायन, वादन, नृत्य एवं संवादों से उनका मनोरंजन करते थे।

रम्मत केवल मनोरंजन का साधन नहीं है बल्कि रम्मत समाज में व्याप्त बुराईयों, समय-समय पर आने वाले बदलावों, मानवीय बर्ताओं, दुष्कर्मों, दुराचारों, ईर्ष्या-द्वेष आदि मनोभावों को दूर कर मानव को सत्य, प्रेम सद्भाव के पथ पर लाना हुआ करता था। इसमें लोक रंजन के साथ-साथ समाज को नैतिक शिक्षा देने का उद्देश्य निहित होता था। इसी कारण इन रम्मतों के कथानक परिवार, पति-पत्नि, बहु-बेटी, पुत्र-पुत्री, माता-पिता के सम्बन्धों पर आधारित होते हैं। इसमें कुछ कथानक पौराणिक, ऐतिहासिक और धार्मिक ग्रंथों की कथाओं और घटनाओं से जुड़े होते थे। कुछ समाज में व्याप्त कुरीतियों जैसे बाल-विवाह, कन्या-विक्रय, अनमोल-विवाह आदि विषयों पर कथाएँ आधारित होती थीं। उसी कथा के अनुसार रचनाकार पात्रों का सृजन करता था।

जय जय जगदम्बा माता की प्रतिध्वनी दर्शक वादक और अभिनेता को परस्पर आनंद प्रदान करने वाली मौलिक जो जैसलमेरी रम्मत शैली के रूप में पहिचानी जाती है, और इसके प्रणेता कवि तेज हुए हैं। जिनका जन्म 1881 ई. और स्वर्गवास 1926ई. में हुआ है। आपने अनेक रम्मतें लिखी हैं। जिसमें छेला, तम्बोलन, मूमल महेन्द्रा, गांधी का खेल, शैतान, सुन्दरी, नैना-खसम आदि के अलावा राजा जोग भर्तृहरि का ख्याल अधिक लोकप्रिय है।

जैसलमेर में रम्मत की मौलिक शौली के प्रणेता कवि तेज ने उज्जैन, मालवा, मध्यप्रदेश के राजा भृर्तहरि के जीवनी के आधार पर रम्मत लिखी है। जो संवादात्मक शैली अभिन्यता और संगीतात्मक काव्य पर आधारित है जो इस क्षेत्र में अत्यन्त लोकप्रिय है। इसमें योग और भोग दोनों की विवेचना है। श्रृंगार नीति और वैराग्य जीवन पर आधारित है। उनकी दूसरी रचना नैना खसम का ख्याल उनकी मौलिक रचना है। इस क्षेत्र में अनेक कवि हुए हैं जिन्होंने कवि तेज की रचना शैली को आधार मानकर रचनाएँ की है।

रम्मत चित्र

रम्मत चित्र, उदयपुर

इसमें मोतीलाल, सुगनलाल, तेजमाल बिस्सा और भैरूलाल जी का नाम मुख्य है। आधुनिक और लघु रम्मतों के माई होटल ब्यूटीफुल और पोंपों बाई का राज रम्मतों के रचनाकार नन्दकिशोर शर्मा है।

प्रारंभ और प्रस्तुति

ख्याल रम्मत रात्रि को 10 बजे प्रारम्भ होता है। सर्वप्रथम गणपति, सरस्वती, दुर्गा एवं गुरु की पूजा होती है। विघ्न हरन के लिये दशों दिशाओं में बल बाकल उड़ाये जाते हैं।

खेल में त्रिदिशीय मंच बनाया जाता है। जिसके बीच में झरोखानामा तख्तों का एक मंच बनाया जाता है। इसके आगे पाट बिछाये जाते हैं। इस पर अभिनेता अभिनय करते हैं। सामने नीचे दरी पर टेरिये तथा वादक लोग बैठा करते हैं।

खेल का प्रारंभ पारम्परिक रम्मत शैली के आधार पर होता है। इसमें मेहतर (सफाई कर्मचारी) मंच पर आता है। जिसे मिठू भी कहा जाता है। यह सफाई का अभिनय करता है। सर्वप्रथम गुरु वंदना खेल तथा अपना परिचय देता है।

शेर :-

पहले मनाऊं शारदा, गणराज मेरे साथ है।
उस्ताद जो कवि तेज का सिर पे हमारे हाथ है।।
जिनके अखाड़े खेलता उनका सवाया मान है।
वासी मैं जैसलमेर का नन्दु जो मेरा नाम है।।

टेर :-

मीठू उज्जैन का रंगदार मेहतर आया रे।

(सर्वप्रथम सफाई करने का अभिनय कर्ता मंच पर आता है।) मीठू की टेर को मीठू उज्जैन का रंगदार मेहतर आया रे। और इस समय मेहतर नृत्य करता है। टेरिये खिलाड़ी को सम पर लाने के लिये बोलते हैं जय जय जगतम्ब मात की जय। इसके बाद वह अपना दोहा बोलता है। टेरिये टेर को दोहराते हैं और मीठू मेहतर मंच पर अभिनय करता है। सफाई कर्मचारी के बाद पानी का छिड़काव करने के लिये भिश्ती मंच पर आता है और छिड़काव करने का अभिनय करता है।

भिश्ती : टेर-

छिड़काव करण कूं भिश्ती आया रे भगत पंवार का।

छिड़काव करने का अभिनय करने के बाद भिश्ती लौट जाता है। इसके बाद फरास व हलकारा मंच पर क्रमश: आते हैं और वो अपना परिचय देते हैं। यह सब गायन शैली में होता है।

फरास : टेर-

मैं तख्त सजाऊं आया फरास नगर उज्जैन का।

उसके बाद हलकारा आता है। राजा के आने की सूचना देता है। राजा, राणी, मंत्री आदि मंच पर आकर विराज जाते हैं। उस समय गणिका (वैश्या) आती है। गणिका (वैश्या) का गयन एवं नृत्य होता है।

नृत्य एवं गायन

वैश्या : टेर-

राजा की वैश्या आई है नगर उज्जैन।

दोहा :-

सरसत समरू मैं शारदा जी हे गुनियन की रीत।।
तेज कवि उस्ताद की जी रहियो अखाड़े जीत।। राजा।।1।।
तीन ग्राम सुरसप्त को जी जांनु अर्थ तमांम।
ठमके नाचु ताल सेजी करत सवाया काम।। राजा।।2।।

टेर :-

तजो पातरियों से प्यार ठग मुश खावे एतो मोकलों।
पातर नार न जाणिये, नृप जाणें मति यार,
मुंजी की पूंजी किण काम की, जुग जीवो दातार।।

इसके बाद खेल का द्वितीय चरण प्रारंभ होता है। कहीं-कहीं पर नटी एवं सूत्रधार गायन एवं अभिनय साथ-साथ होता है। टेरिये टेर की पंक्तियों को दोहराते हैं। उस समय अभिनेता नृत्य करता है।

मुख्य खेल का प्रारंभ

राज दरबार लगने के बाद मुख्य कथा के साथ खेल प्रारम्भ होता है। यह कथा भृर्तहरि के जीवनी पर आधारित है। राजा भृर्तहरि उज्जैन का राजा है। और उसके कई राणियां हैं। जिसमें पिंगला नामक रूपवान पटराणी होती है। राजा उससे बहुत प्यार करता है। राजा को अद्वितीय वस्तु अमरफल भेंट में मिलती है वह उसे राणी पंगला को जाकर देता है। पंगला उस अमरफल को अपने दोस्त कोचवान को देती है। कोचवान उसी अमरफल को अपनी प्रेमिका पातर को देता है। पातर

उसी अमरफल को राजा को भेंट करने के लिये जाती है। इस प्रकार उसका रहस्य प्रकट होता है। **प्रथम चरण राजा भृर्तहरि के छोटे भाई विक्रम और राणी के संवादों से प्रारंभ होता है।**

पंगला एक भोग विलासी दुश्चरित्र राणी है। वह अपने छोटे देवर को अपने महल में भोग विलास के लिये आमंत्रित करती है। मगर विक्रम उसे ठुकरा देता है। इस पर वह राणी कोचवान जो बगियों का अधिकारी होता है उसे महल में बुलाती है। विक्रम राजा का भाई और राठी पिंगला का छोटा देवर है। विक्रम ब्रह्मचर्य का पालन करने वाला सत्य पथ पर धर्म और मर्यादा पर चलने वाला एक उच्चकोटि थे।

विक्रम राजमहल में जागकर महलों और राजा की सुरक्षा के लिए पहरा देता है। जब वह राणी के महल के समीप से निकलता है। उस समय राणी विक्रम के रूप, यौवन और उसके मुखारविन्द पर चमक रहे तेज के कारण उस पर मोहित हो जाती है। राणी अपने आप को रोक नहीं पाती और वह अपने देवर विक्रम के पास जाकर उसे महल में आने और उससे सेज रमण करने का न्योता देती है।

सती सावित्री 'रम्मत' जैसलमेर, 08 जुलाई, 2000

खेल का प्रारंभ श्रृंगार रस से परिपूर्ण परस्पर संवादों से होता है। पंगला उसे भोग की ओर आकर्षित करती है। अनुनय विनय करती है। मगर विक्रम मेरू पर्वत की तरह अड़िग और मर्यादा में चलने वाला अपने बड़े भाई की पत्नी को माता कहकर उसे मर्यादा में रहने की शिक्षा देता है। परस्पर संवाद सरल हृदय को स्पर्श करने वाले समाज को, व्यक्तियों को नैतिकता का संदेश देने वाले होते हैं।

संवादों के उदाहरण

राणी की टेर :-

खोलो दिल भीना देवर महलों में पधार।

विक्रम की टेर :-

बोलो थे सुरंगा भाभी वचन संभार।

राणी का दोहा :-

अंग छे शुरंगों थारों रूप छै अपार।
देख्या ही दुरंगों जीवड़ों आवें छे अबार।। खोलो।।

विक्रम का दोहा

जीवड़ों जमावों थारे भर्त भरतार।
मैं छां थरों छोटो देवर दयातो विचार।।बोलो।।

विक्रम द्वारा राणी की उपेक्षा करने पर वह क्रोधित हो जाती है और विक्रम को धमकी देती है मैं एक दिन तुमको इसका सबक सिखा कर रहूंगी। दूसरे चरण में राणी अपनी प्रिय दासी को घुड़शाला में काम करने वाले बगियों के कर्मचारी कोचवान को महलों में लुक छिपकर बुला लाने की आज्ञा देती है।

राणी की टेर :-

दासी जल्दी बुलाय ला दौसतदार ने । टेर।

दासी की टेर:-

बाई जी मालम पड़ जावे जो भरतार ने ।।दोहा।।

दोहा

दोसत बिन जीवड़ो दुख पावे विरह सयो नहि जावे।
देवरने दुरी करीस अब कोचवान चित चावे।।दासी।।1।।
गुप चुप बैठो महल में समे कोचवान कुं लाऊँ।
मोज उड़ावों हरघड़ी समें पेरा बार लगाऊँ।।बाईजी।।2।।

राणी को कोचवान को पास जाकर उसे महलों में राणी साहिबा द्वारा बुलाने का निमंत्रण देती है और राणी द्वारा भेजी गयी प्रेम की निशानी देती है। दासी और कोचवान के परस्पर संवाद होते हैं।

दासी की टेर :-

कोचवान रंगमहल पधारों बाईसाब बोलाया है।। टेर।। दासी।।

कोचान की टेर :-

राणी मुझ पर दया करी धन भाग्य हमारी काया हे ।। दोहा।।

कोचवान का राणी के महल में आने जाने के क्रम में एक दिन महलों में पहरा दे रहे विक्रम की नजर राणी के महल से निकलते कोचवान पर पड़ जाती है। विक्रम राणी साहिबा से अपनी राजकीय मान मर्यादा में रहने का अनुरोध करता है। मगर राणी उस पर क्रोधित होती है और उसे अपने चरित्र पर झूठा आरोप लगाने हेतु देश से निकलवा देने की धमकी देती है। इस समय के परस्पर संवाद का मान-मर्यादा, नैतिकता और सामाजिक शिक्षा का अच्छा आदर्श प्रस्तुत करने वाले संवाद होते हैं।

देवर की टेर :-

भाभी मर्यादा मत छोड़ों रे थोरों भूप जिसोभरतार।

राणी की टेर :-

देवर पड़सी खबर तैयारी रे तनों करो देश सूं बार।

इसके बाद त्रिया चरित्र प्रारम्भ होता है। राणी कोप महल में अपने सिर के बाल बिखेर कर कपड़े फाड़ कर रूठ कर उल्टी बैठ जाती है। राजा जो राणी के प्रेम, भोग-विलास और मोह में सदा मोहित रहता है वह राणी के महल में जाकर राणी को इस तरह रूठकर बाल बिखेरकर बैठने का कारण पूछता है। उसको लाड़ लड़ाता है। मान मनोहार करता है। इस समय की रागनियाँ श्रृंगार से परिपूर्ण होती है।

इसके बाद राणी और राजा के संवाद होता है। राणी राजा से वचन मांगती है कि आप मेरा कहना मानोगे। राजा उसे वचन देता है। इस समय राणी पंगला उनके छोटे भाई विक्रम के द्वारा शील भंग करने का आरोप लगाती हैं और उसे देश से निकाला देने को कहती है। राजा को विश्वास नहीं होता है कि मेरा छोटा भाई ऐसा कर सकता है। वह उसे समझाता है लेकिन राणी उनके लिये वचन के अनुसार विक्रम को तुरंत देश से निकालने का फरमान चाहती है। इस समय राणी और राजा के संवाद रागनियां में होते हैं। इस समय राजा और विक्रम के संवाद होते हैं। राजा पूर्ण तरह भोग विलास से लिप्त अपनी दुश्चरित्र राणी पंगला के कथन पर विश्वास करता है और विक्रम को राणी से बलात सहावास करने के प्रसंग के कारण देश छोड़ने की आज्ञा देता है।

राजा की टेर :-

देश छोड़ आज विक्रमा भला मान हो जा नारा।
औरत के मतलब को सिखाने भाई जग में है प्यारा।।

राजा और विक्रम के संवादों में विक्रम अपनी सच्चाई बताने का प्रयास करता रहता है। मगर राजा उसकी एक नहीं सुनता और उसे देश छोड़कर जाने की आज्ञा देता है।

दोहा

जो हुकुम महाराज आपको धरयो हमारे शिश
मेरे बयान झूठ नहीं राणी बिगड़ी विशवा वीश।। जी औरत।।

राजा और विक्रम के संवाद

विक्रम राजा की आज्ञा को स्वीकार कर वन में प्रस्थान करता है। इस समय कालिगडें (केरवे) की राग में विक्रम गाता है। इस गायन में राणी के द्वारा परिवारों को तोड़ने भाई से भाई को लड़ाने तथा सामाजिक सम्बन्धों में दरारें डालने में नारियों की भूमिका का संदेश देता हुआ जंगल की ओर प्रस्थान करता है।

विक्रम की टेर :-

सब जाने किरतार कठिन समय कलु काल को।

दोहा

कठिन समय कलु काल को, कुल प्रगटयों हे खार।
भाई से प्यारी लागे औरतों सुंण लीजों संसार ।। कठिन।।
सथल उघाडयां आपकी, जावे सरम अपार।
बिघड़ी भोजाई मारी पंगला, लीनी निजर निहार ।। कठिन।।

विक्रम वन की ओर जाता है। जाते समय वह एक शेर बोलता है-

बनवास धारयों विक्रमा विधना बनाया जोग है।
परमात्मा के विश्व में सब भोगना सुख भोग है।
यह अमर फल बगस्यों इन खाय अंग निरोग है।
अब भेंट कर दूं विप्र जगत गुरू मुनी लोक है।

तीसरा चरण

जीव दया, अहिंसा का संदेश देने वाला है। जो मूक पशुओं की हिंसा करता है उसे नरक मिलता है। राजा जोग भर्तहरि का ख्याल का दूसरा चरण विक्रम को वनवास जाने के बाद राजा का शिकार के लिये जंगल प्रस्थान से होता है। राजा भर्तहरि काले मृग का शिकार करने की दृष्टि से जंगल-जंगल अपने साथियों के साथ जाता है। **(टेर घोर जंगल में काले मृगले रो करो शिकार हो।)** इस समय जैसे ही उसे श्याम (काला) मृग दिखाई देता है। उसके साथ उनके सित्तर मृगनियाँ हैं। जैसे ही राजा मृग को मारने के लिये अपने हथियार उठाता है सभी मृगनिया आकर श्याम मृग उनके पति के प्राणों की भीख मांगती है। लेकिन राजा अपने मद में ग्रस्त उनकी एक नहीं सुनता है।

मृग और राजा की टेर :-

राजा श्याम मृग को प्राण दया कर दीजे जी।
मृगणी मैं नहिं मानु एक जिकर मत कीजे जी।।

मृगनियां उसके आगे अनुनय विनय करती है। उसको श्राप देने को भी कहती है। मगर राजा मृगनियों पर दया नहीं करता और मृग को मार देता है। इस समय मृगनियां राजा को श्राप देती है कि तुमने

लोकनाट्य 'रम्मत' सती सावित्री सन् 1953, वरीष्ठ कलाकार नंदकिशोर शर्मा के पिता श्री सागतमल शर्मा के साथ सहयोगी कलाकार

जिस तरह हमारा सुहाग छीना है। उसी तरह तेरी राणियां तुम्हारे जीवन रहते दुहाग भोगेगी।

मृगले की टेर :-

महाराज आज तुं होग्यो अपराधी मिरघो मार के।

इस समय मरता हुआ मृगला कहता है तुमने बिना किसी गुनाह के मेरी सित्तर मृगनियां को विधवा बनाया है। उसी तरह तुम्हारी राणियां भी मेरी मृगनियों की तरह जीवित महलों में विलाप करती तड़पती झुर-झुर कर मरेगी। हे वेदरदी निर्दयी राजा तेरे राज में शोर (कलह) होगी।

गोरखनाथ का आगमन

इस समय गुरु गोरखनाथ जी उस जंगल से विचरण करते

लोकनाट्य 'रम्मत' के कलाकारों का सामूहिक चित्र

आ निकलते हैं। मृग का और राजा का संवाद सुनकर राजा को कहते हैं–

गोरखनाथ की टेर :-

वेदरदी राजा मृगलों क्युं मारयों रे गिवार।। टेर।।
क्युं करे तनाजा देख्यो जोगीडो रे उदार।। दोहा।।

हे वेदरदी राजा तुमने काले मृग को बिना कसूर के क्यों मारा है ? राजा कहता है कि है जोगी तू क्यों तकरार कर रहा है तुम्हारे जैसे उद्धार जोगी मैंने कई इस संसार में देखे है। हे राजा बिना अपराधी मृग को मारने वाला मनुष्य नरकगामी होता है। ऐसे पशुओं पर दया करनी चाहिए। राजा उसे कहता है कि जोगी का जमारा (जीवन) पाकर तुम दया से भरे लगते हो या तो अपनी बकवास बंद कर। यदि तुम चमत्कारी हो तो इस को पुन: जीवित कर दो। गोरख और राजा का वार्तालाप चलता है। गोरख राजा को कहता है तुमने मृग को मारा है और मैं उसे पुन: जीवित करूं पाप तुमको भोगना पड़ेगा। राजा कहता है तारने वाला (भव सागर से पार उतारने का मोक्ष प्रदान करने वाला) वह परमाब्रह्म है। जिसने ये संसार बनाया है तू तो जोगी बनकर घर–घर भिक्षा मांगने वाला है।

दोहा :-

डूबे तारे आप हीरे आप ही सिरजन हार।
द्वारे योगी दूसरा रे मैं गोरख अवतार।। वेदरदी।।
गोरख जाणुं आपने जी मिरघो देवो जीवाय।
मन में सतगुरू मान के जी पड़सु थारे पाय।। क्युं करे।।
झोली स ले आशका जी मृग पर दीनी डार।
जीवत होकर भागियों जी पहुच्यों मृगणीलार।। वेदरदी।।

गोरख– डूबने वाला और उबारने वाला तो आप ही सिरजनहार (ईश्वर) हैं। अन्य जोगी दूसरे तुमने देखे होंगे। मैं गोरख अवतार हूँ। मैं जब गोरख आपको जानुंगा जब आप इस मृग को जीवित कर देंगे। अपने मन में आपको सतगुरु मानकर आपके चरण स्पर्श करूंगा। गोरख झोली से आष्का (राख) निकाल कर मृग पर डालता है। वह उठकर भाग जाता है। राजा उसके चरणों में प्रणाम कर अपने को धन्य मानता है। फिर कभी दर्शन देने को विनम्र निवेदन कर अपने को चेला बनाने की प्रार्थना करता है।

दूसरे चरण का दूसरा दृश्य

एक ब्राह्मण अमर फल जिसे वीर विक्रम भृर्तहरि के भाई ने दिया था, लेकर उज्जैन नगरी जहाँ राजा भृर्तहरि राज करता है पहुँचता है। अपना परिचय देता है तथा हलकारे को राजा के पास जाकर ब्राह्मण के आने की सूचना देने को कहता है। हलकारा महाराजा के पास जाकर ब्राह्मण प्रदेशी के आगमन और राजा से मिलने की इच्छा हेतु राजा से प्रार्थना करता है। राजा उसे आदरपूर्वक सभा में लाने की आज्ञा देता है। ब्राह्मण राजा को अमर फल भेंट करता है तथा उसकी महत्ता बताता है। राजा प्रसन्न होकर ब्राह्मण को दान एवं आदर देता है। राजा सुन्दर अमर फल को देखकर उसकी प्रशंसा में गाता है–

देख अमर फल कैसा रचाया।। दोहा।।
क्या हरि इसमें कुदरत डारी।
मीठा सुस्वादी, सुड़ोल बनाया।। देख।।
काची मीट्टी का तन नर–नारी।
घड़ी फिर छण भंगकाया।। देख।।

दूसरा चरण तीसरा दृश्य

राजा अमर फल लेकर राणी के पास जाता है। वह यह अमर फल राणी को अमर बनाने (सुख भोगने) हेतु प्रदान करना चाहता है। इस समय राणी महल में राजा का स्वागत करती है। केरवा गाती है।

अहा मेरा राजन मेला में पधारिया।
आ मेरी दासी तूं सेज संवार दे। धर दे चोसर मजे दारिया। हो मेरा।।
अतर छिड़कर फूलड़ा बिछादे भरदे गुलाब जल झारीया। मेरा।।

राजा प्रसन्न होकर अमर फल राणी को प्रदान करता है। राणी उसे स्वीकार कर राजा को धन्यवाद ज्ञापित करती है। राणी यह अमर फल अपने प्रेमी कोंचवान को देती है। कोंचवान उसे ग्रहण कर अपनी प्रेमिका पातर को प्रदान करता है। पातर इस अमर फल को अपने आदरणीय प्रेमी और राज रक्षक राजा भृर्तहरि को प्रदान करने के लिये जाती है। राजा अमर फल पातर के पास देखकर अचंभित एवं क्रोधित हो जाता है। उससे पूछता है कि तुम्हारे पास यह अमर फल कहाँ से आया। पातर घबराकर कोंचवान का नाम बताती है। राजा कोंचवान को बुलाकर पूछता है कि तुमको यह फल कहाँ से मिला है ? किसने दिया है ? कोचवान घबरा कर कहता है कि यह अमर फल मुझको राणी सहाब ने राज दुहाई के रूप में प्रदान किया है। राजा उस पर क्रोधित होकर निकालता है।

दोहा–

कहनार अमर फल है कठे जलदी वतादे आनके ।।राजा।।
महाराज मैंने खालिया लिजो सही नृप जान के ।। राणी।।
झुठीन भाखे पंगला मैंने लही पहचान के (राजा)
महाराजसोगंद आपकी राख्यो नछांनो छांन के (राणी)

राजा राणी के पास आता है और पूछता है कि अमर फल

कहाँ है ? वह कहती है महाराजा मैंने खा लिया। राजा उसे कहता है झूठ मत बोलो। राणी महाराज की कसम खाती है और कहती है मैंने खा लिया, इसमें कोई संदेह नहीं। महाराजा अमर फल दिखाते हैं। इस समय उनको वैराग्य हो जाता है। अपने आपको राणी को तथा जीवन एवं सोच को धिकारता है। वह अपना राज विक्रम के लिये अपने दीवान को सौंपकर जंगल की ओर प्रस्थान कर जाते हैं।

वैराग्य

तीसरा चरण पहला दृश्य

राजा भगवा वेष पहनकर जंगल की ओर जाता है।

राजा की टेर :-

जोगलियों रे राजा भृर्तहरि सब झूठों रे संसार।

दोहा

जोग लियोरे राजा भृर्तहरि तज्या राज कवार।
परचोतो दीनों रांणी पंगला कियो दूजो भरतार।। जोग।।
छोटो हे भाई मेरो विक्रमा दियो नगर निकार।
लाग्यो सीखाणें झुठीनार के नहीं सोची में लिंगार।। जोग।।

वैराग्य संसार असारता, रिश्तेनाते, माया-मोह, राजपाट, परिवार सब पर विचार करता कालिगंड़े (केरवे) में गाता जंगल की ओर जाता है।

दूसरा दृश्य

गुरु गोरखनाथ अपने शिष्यों जमात के साथ पीलू राग में आत्म स्मरण करते आते हैं।

गोरखनाथ की टेर :-

आतम पति को स्मर पियारे परमात्मा का दरसन पावों।।

दोहा :-

जादिन सो जनम्या जननीसो।
तादिनका क्युं कवल भुलावो।। आतम।।
धनदारा स्वप्ने की माया।
मुरख होय मत फंद फसावो।। आतम।।

राजा गुरु गोरख को देखकर उनके पांव पड़ता है और प्रार्थना करता है। गुरुवर मैं आपका शिष्य बनना चाहता हूँ। कृपा करके मुझे ज्ञान दीजिये। गोरख उसे समझाता है कि हमारा जोग मार्ग बड़ा कठिन है। तुम इस पर पुन: विचार करो। तुम राजा का जीवन जीने वाले कैसे इस मार्ग पर चलोगे ?

टेर :-

मैं चेला महाराज तुम्हारा गुरु गोरख दीजे ज्ञान ।। टेक।।
तू बालक हठ त्याग पियारा कया तो हमारा मान।। टेर।।

दोहा :-

ये संसार असार समझ मन लीनो निश्चय जान।
राज पाटसुख भोग जगतका सबकुं कर लिया म्यान।। मैं।।

टेर :-

गुरु गोरखनाथ जी निरगुण रा झीणा मारग देखसां।। टेर।।
लैख पर हाथ में भिक्षा फिरलाना भगुवा वेश सों।। टेर।।

दोहा :-

निरगुण मारग कठिन जोग पर गुरु विन मिलने ज्ञान।
चेला करल्यो चरण कास में धरों तुमारा ध्यान।। जी गुरु।।

टेर :-

हठ त्याग हठीला अर्ज करों रे अंगीकार ।। टेर।।
तेरी सांमत लीला खपर में फेरी देरी डार ।। दोहा।।

दोहा :-

मैं विनती कर हार गही जी पिया ना सुणी रे पुकार।
ला दासी संग महल से जी भर मोतियन को थाल।।
जोगी होवे सो क्या करे भाई मोती माणक जोहार।
बासीतो टुकड़ा धालरी माई क्युं तु लगावे एतीवार।। तेरी।।

तीसरे चरण का तीसरा दृश्य

राणी पंगला के महल के द्वार पर राणी से पुकारता है। पंगला पटराणी भिक्षा देरादे थारे हाथ की। राणी भाग कर आती है। राजा से क्षमा याचना बकरती है। मुझसे बहुत बड़ी भूल हुई है। आप मेरे ओंगणों (अवगुणों) को क्षमा करें। राजा कहता है कि हे मातेश्वरी मैंने तुम्हारे समस्त अवगुणों को क्षमा कर दिया है। तुम जल्दी लाकर भिक्षा दो। पंगला विलाप करती है महाराजा मुझ पापण नारी पर आप ध्यान नहीं दे। आप नीतिवान, सुजान एवं ज्ञानी है। मैंने बहुत बुरे कर्म किये है। मैं औरत जात हूँ। जूती के समान मेरा जीवन है। इन पदों में राणी अनुरोध करती है, रोती है, विलाप करती है। लेकिन राजा अपनी प्रतिज्ञा पर अड़िग है। वह गुरु गोरखनाथ की आज्ञा मानकर भिक्षा लेने आया है। वह पुन: अपना हठ त्यागने को कहती है। अपनी प्रार्थना स्वीकार करने को कहती है।

हठ त्याग हठिला अर्ज करो अंगीकार।

राणी माणक मोती जवाहर की भीक्षा लाती है। मगर भृर्तहरि उससे केवल बासी रोटी के टुकड़ों की भिक्षा मांग करता है। उसने धन, माया सब त्याग दी है। राणी मजबूर होकर राजा को भिक्षा देती है। वह भिक्षा लेकर रवाना होता है। उस समय उसकी बेटी का मिलन और बिछुरन का यह झोरावा करुण रस से भरा हुआ है। इससे राजा और बेटी का विलाप एवं राजा द्वारा बेटी को समझाने के नीतिगत संवाद पद बड़े मार्मिक एवं ज्ञान वर्धक होते हैं।

टेर :-

वावल जोग ले चालिया रे बाबा कर पंगला पर रीश रे।
बेटी तो बोले बाप से रे बाबा करों चूक बगसी सरे।

दोहा-

चूक्यांही चौरासीपड़े एबेटी चूक तज्यो सज्यो जोग रे।
मोह माया सब त्यागियारे बेटी, तज्यो राज सुख भोगरे।। मोहमाया।।

पाँचवा दृश्य

इस समय राजा की अन्य राणियां आती है और राजा को राजपाट न त्यागने की प्रार्थना करती है। इन पदों में ज्ञान, भक्ति, दर्शन,

जीवन की क्षण भंगुरता, माया, भौतिकवाद, आवागमन, वैराग्य जीवन की महता आदि सम्बन्धित परस्पर संवाद भारतीय संस्कृति, धर्म नीति एवं जीवन शैली को काव्य में विविध रागनियों में हृदयस्पर्शी स्वरूप प्रदान किया गया है। इसमें कवि के ज्ञान, अनुभव, राग-रागनियों की जानकारी परिलक्षित होती है। ज्ञोरावों को सुनकर कठोर से कठोर व्यक्ति का मन भी द्रवित हो जाता है। जीवन का मूल्य एवं जीवन के महत्व को समझने लगता है। द्वेतवाद निर्गुण कर्मफल विचार को कवि ने सरल एवं सहज ढंग से प्रस्तुत किया है। मेरे प्यारे प्रियतम आपने अपनी कैसी दशा बना ली है। भगवान की यह कैसी लीला है ? आज मेरा प्रियतम भगवे वेश में घर में है। यह सब अपने कर्म का फल एवं नियती है। जैसा कर्म करता है उसको वैसा फल भोगना पड़ता है। घट के भीतर (हृदय के अन्दर) चित्त को एकाग्र कर ध्यान लगाओं। धीरे-धीरे स्वयं को ज्ञान हो जायेगा। माला जपों, ईश्वर का स्मरण करो इससे तुम्हारा जीवन सुधर जायेगा।

टेर राजा और रानियों की परस्पर

टेर राणीयों की-

पिया पे अजब जमाना है जोग में जन्म गमाना है।

हे प्रियतम यह संसार अजब है। यदि सुख, भोग, आनंद इसी में है तो जोग लेकर आप क्यों अपना जीवन गंवा रहे हैं।

टेर राजा की-

जगत में शुजश कमाना है के आखिर सबकुं जाना है।।

यदि संसार में सुयश कमाना है तो इस भौतिक संसार का त्याग करना पड़ेगा।

रानी का संवाद

जाना है इस जगत में से फिर आना निश्चय होय।
मरे सो जनमें मानवी स पिया जीव जंतु सब कोय।।
दोय की है सब माया।। जुगल से जगत रचाया।।
अनेकों भोग भुगावें, भाग प्रबल सो पावें।।1।।

इससे आशय है कि इस संसार से जाना और आना यह क्रम बना ही रहेगा। जीव-जन्तु, मनुष्य, पशु-पक्षी किसी भी योनी में हो आना जाना बना ही रहेगा। अपने कर्म के अनुसार हर योनी अपने कर्म के अनुसार भोग भोगता हुआ भाग्य के अनुसार सुख-दुख, आमोद-प्रमोद प्राप्त करता है।

राजा का संवाद

भाग बड़े घर जनमिया सं मो पाया वक्त उज्जैन।।
राज पाट रस भोगियो सं मों इता वरस सुख चैन।।
रेंन रणवास विताई।। दिवस फिर नगर दुहाई।।
पंगला देख विरानी।। त्याग दिवी रजधांनी।। जगत ।।2।।

मेरा भाग्य बहुत बड़ा था ? पूर्वजन्म में अच्छे कर्म किये थे इस कारण मुझे इस जीवन में उज्जैन का राज सिंहासन मिला। राज पद सुख, भोग मैंने इतने वर्ष तक आनंद पूर्वक प्राप्त किये। रणवास राजमहलों में रातें बिताई। राजसभा में बैठाकर राज कार्य किया। लेकिन पिंगला को कुमार्ग पर चलते देखकर मुझे वैराग्य हो गया और मैंने राजधानी का त्याग कर जोग धार लिया।

राणियां संवाद

जान पदमणी पंगलासरे भूल्या फिरया हमेश।।
राज हमरे मेंल में सकब धारयो नहि लव लेश।।
एस आरांम न कीना।। लुट जोभन नहि लीना।।
प्रेम रस पियान प्याला, कियान भोग विलाला।। पिया।।3।।

आपने सदा पंगला को महत्व दिया। आप उसके स्वरूप में ऐसे खो गये कि आपने हमारी ओर ध्यान नहीं दिया। हमारे मेलों में आप कभी नहीं पधारे। हमारे साथ भोग-विलास रमण नहीं किया। हमारे यौवन का आपने उपभोग नहीं किया। प्रेम रस का प्याला न पिया और न पिलाया। हमारे साथ आपने मोह नहीं किया।

राजा संवाद

भोग रोग भेला वसे समां जोग लियो शिर धार।।
परतक परचा देख पलक में त्याग दिया संसार।।
हार कर भया निराला।। जपूं सत गुरु की माला।।
बात इक पकी पछांनी।। नारी नर्क निशांनी।। जगत।। 4।।

हे राणियों भोग और योग दोनों एक साथ रहते हैं। इस कारण दोनों का त्याग कर जोग का मार्ग अपनाया है। प्रत्यक्ष भोग विलास का रूप देखकर ही वैराग्य हुआ है। इसी कारण संसार को त्यागा है। संसार से हार मानकर अब मैं। सतगुरु के नाम की माला जपना चाहता हूँ। अब मुझे इस बात का भी ज्ञान हो गया है कि नारी एक नरक की निशानी है।

राणियों का संवाद

नार बिना कहां निपृजता सपिया अटलरूप अवतार।।
सत वादी नर सुरमा स पीव बड़े भक्त दातार।।
नारकीहे सब माया।। पिया क्युं भरम भुलाया।।
च्यार दिन मोज करावों फेंरजोग पद पावों।। पिलाये।। 5।।

संसार में अगर नारी नहीं होती तो आपका जन्म नहीं होता। संसार में जितने सूरवीर, सत्यवादी योद्धा आदि मेरे पिवजी (प्रियतम) नारी से ही उत्पन्न है। संसार में यह सब उसी नारी की माया है। नारी बहिन, माता और संगनि है। आप जिस भ्रम में हैं इसलिये आप चार दिन जब तक का भोग है भौतिक संसार का आनंद लो और आगे के जीवन में वैराग्य लेकर जीवन सुधार लेना।

राजा का संवाद

पल भर का विश्वास नहीं प्यारी च्यार दिवस कुण जांने।
कालघूंम रयो शीश पेस मांने दिखत मोत सिराने।।
मूढ़ मूरख नहि जानें। त्रिया अपनी पखतांने।
भरत को छलने चाया। जांन लीवी सब माया।। जगत में।।6।।

मुझे पलभर का भी विश्वास नहीं है कि थोड़ी देर में क्या होने वाला है। तो चार दिन की किसे क्या मालूम है ? काल सदा सिर पर घुमति रहता है। मृत्यु मुझे सदा मेरे सिराने दिखाई देती है। मूर्ख लोग

इसको नहीं जानते। हे त्रिया तुम अपने पक्ष में बात कर रही हो भरत को भ्रमित करना चाहती हो। भरत ने इस मायामयी संसार को पहचान लिया है।

राणियों का संवाद

माया काया में वसे स पिया जोग भोग शिध होय।
आद आनादी काल में स पिया जहां देखों जहां दोय।।
सोय पद ग्रंथ उचारे, पिया नादया विचारे।
साथ जोगन होय चालूं। सेंबा टेले संभालू।। पियाये।।7।।

हे राजन माया व्यक्ति के शरीर में निवास करती है। उसे योग के द्वारा सिद्ध किया जा सकता है। आदि अनादि काल से संसार में जहाँ देखो वहाँ दो-दो दिखाई देती है। आत्मा, परमात्मा या शरीर आत्मा एवं स्त्री-पुरुष सभी दोय है। यह ही वेद, पुराण, धर्म ग्रन्थ बताते हैं। हे प्रियतम हमारे पर दया विचारों। आप हमें जोगन बनाकर साथ ले चलो हम वहाँ आपकी सेवा चाकरी करेंगे।

राजा का संवाद

योगभोग दोय भेलां भया सप्यारी जोग एक एकंत।
सीधो वाट मिले नहि सीढ़ी जांणे विरला संत।।
अंत किन को नहि आवें। भेद सतगुरु बतावे।
राम धुनि हिरदे लागी। भूल भर मना भागी।। जगत में।। 8।।

योग भोग दोनों साथ होने से योग की साधना नहीं की जा सकती। जोग की साधना के लिये एकांत चाहिए। सीधे मार्ग चलने से कभी सफलता नहीं मिलती है। इस सम्बन्ध को विरले संत ही जानते हैं। और संसार में हर चीज का अंत आता है। यह भेद केवल सतगुरु ही बताते हैं। मेरे तो हृदय में राम की धुन लग गई है। संसार का मोह छूट गया है।

राणियों का संवाद

भागी भूल भर मना केसी भोग विना भर तार।
कैसा जग में रचा पदारथ कायम थिर किर तार।।
सार विरला नर जाने। गुनी सोतत्व पिछांने।
वृथा दिन भटक गमावें। माया भूलन पावे।। पिया।। 9।।

भोग बिना है प्रियतम कैसा भरमना आप ने भूली है। संसार में विविध प्रकार के पदारथ हैं। इस पर ही संसार खड़ा है। इस रहस्य को केवल विरले ही जानते हैं कि संसार का रहस्य क्या है ? गुणवान ही इसके तत्व को समझ सकते हैं। अपने जीवन को धन माया के पीछे भागता हुआ बिताता है। मगर माया उसको नहीं मिलती है।

राजा का संवाद

माया सब भगवान की सप्यारी खोद फकीरी खांन।
पुरषार्थ कर खोज नगीना पायापद निरंबान।।
जांन कर जोग सजाया। भोगमें नहीं भर्रमाया।
करे पुरुर्षारथपूरा। शायब कारन पूरा।। जगत।।10।।

माया सब भगवान की है। संसार में खोदकर तपस्या से पुरुषार्थ से व्यक्ति उसे प्राप्त करता है। उसी पुरुषार्थ से मैंने निर्वाण पद (मोक्ष) प्राप्त करने का मार्ग प्राप्त किया है। उसी पुरुषार्थ को जानकर मैंने जोग रूप धारण किया है। मैं भोग में कभी भ्रमित नहीं हुआ हूँ। मैं पुरुषार्थ तपस्या एवं योग के बल पर और गुरु की कृपा से उसे प्राप्त करूंगा।

राणियों का संवाद

पुरषार्थ पर पोंचिया सरे पढ़ कर वेद पुरांन।
खोज पदारथ काढ़िया सवो भोगत भागेवांन।।
मांन पिंव वचन हमारा। जिनाका सफल जमारा।
नाम कर लेनी प्यारा। उम्मर रहो तुमारा।। पिया।। 1।।

अमर पुरुषार्थ के उच्च ज्ञान को प्राप्त कर चुके हैं। वेद, पुराण पढ़कर आपने सही तत्व को पहिचान लिया है। इसको विरला ही प्राप्त करता है। यह प्रियतम हमारा वचन है कि तुम इस मार्ग पर चलकर अपना नाम करो और अपने को अमर करो।

राजा का संवाद

उमर गोरखनाथ जगत में है शिव रूप समान।
मेदू वेद पुरान ध्यान कर मुझको दीना ज्ञान।।
म्यान कर लीनी माया, जीव थिर रहे नहि काया।
भरतरी भया वैरागी, मोह माया सब त्यागी ।। जगत् में।।12।।

अमर गोरखनाथ इस संसार में है। वह शिव के अवतार है। मुझे वेद, पुराण ध्यान सबका ज्ञान उनसे ही प्राप्त हुआ है। मैंने उनके द्वारा दी गई शिक्षा को अपने मन में ग्रहण कर ली है। जिससे मेरा जीव (आत्मा) सदा स्थिर रहती है। भृर्तहरि अब वैरागी हो गया है उसने संसार की मोह माया का त्याग कर दिया है।

राजा का जंगल की ओर जाना

राजा जंगल की ओर जा रहा है राणियां झोली पकड़ कर जाती है। कालीगड़ों कैरवों झौरवों गाती है।

टेर-

मेलों (महलों) में झुर रही सब राणीयां नहीं दुजी दरकार।
दरश देरावों सागी रूपका जैसा परणया भरतार।।मेलों में।।

प्रिया हमारी प्रार्थना सुनो मेहलों में राणियां झुर रही है। विलाप करती है। राणियां कहती है कि एकल जीवन का कोई महत्व नहीं है। वह कहती है कि प्रियतम हमको एक बार वह रूप के दर्शन करावों जैसा हमें विवाह कर लाये थे। आपने विवाह करने के बाद हमें महलों में वैरागी आपने केवल पटराणी पंगला के महल में वास किया हमारी ओर आप कभी नहीं आये। आपने हमें भुला दिया। जंगल बिना मृग के सूना खागल, (गुफा) पहाड़। जल के बिना तालाब, झरना और दरखत वृक्ष सुने होते हैं। वैसे ही प्रियतम के बिना यह संसार निरर्थक है। सूर्य के बिना दिन, रात के बिना चन्द्रमा और तारे सूने होते हैं उसी प्रकार प्रियतम के बिना जीवन में अंधियारा होता है।

सामन (पति) बिना घर, बिना नारी के परिवार, बिना बिजली के गर्जन और बिना ग्रामवासियों के गाँव सूने होते हैं उसी प्रकार पति के बिना सारा जीवन सूना है। मेरे प्रियतम जोगी होकर जंगल चले गये हैं। मैं भी

उनके साथ जोगन बनकर साथ चली जाऊँ। कवि तेज तपस्या करके अपने जीवन को सफल बनाकर मोक्ष को प्राप्त हो जाऊँ। उसके बाद किसी तरह काझोरावा भी कालीगड़े केरवे की तर्ज पर है इसे राणी पंगला गाती है और अपने कर्मों को रोती और पश्चाताप करती है। पंगला सहित दूसरी राणिया मिलकर गाती है कि सारा मालवा नगर और राजा के जोगी होने पर रो रहा है। घर-घर शौक व्याप्त है। जिस प्रकार गोपिया कृष्ण के लिए विलाप करती है। उसी तरह मालवे की नारियाँ कर रही है।

लोकनाट्य 'भर्तहरि'
कलाकारः नंदकिशोर शर्मा एवं सुश्री प्रेराज सेवक

राजा का गुरु गोरखनाथ के पास जाना

अंतिम चरण में राजा भिक्षा लेकर गुरू गोरखनाथ के पास जाता है और गुरू से कहता है कि मैं आपकी आज्ञा अनुसार राणी पिंगला को माता नाम से सम्बोधित कर भिक्षा लेकर आया हूँ। गुरू गोरखनाथ जी उनसे प्रसन्न होकर उसको आशीर्वाद देते हैं कि मेरे आज्ञाकारी चेले जाओ तपस्या कर इस संसार से तिर जाओ।

राजा की टेर-

गुरू गोरख ज्ञानी भिक्षा ले आयो पंगला नार से।

गोरखनाथ की टेर-

चेला अगवाणी जल्दी तिर जावो रे इस संसार से।। दोहा।।

राजा और गुरू के संवाद में राणी के भिक्षा मांगने की स्थिति-परिस्थिति, राणी के हाव-भाव, राणी के द्वारा राजा को अपने तर्कों से भ्रमित करने आदि की जानकारी लेता है। और उसके बाद में उसे अपना चेला स्वीकार करता है।

गोरखनाथ की टेर-

सतगुरू प्याला पाया प्रेम का कीनी निरमल काया है।

राजा की टेर-

धन धन चेला भूप भरतरी तूं करनी कर आया है।। टेक।।

गोरख का शिष्य बनने के बाद जोगी भरतरी गोरख से निर्गुण भेद पूछता है। गुरू द्वारा शिष्य को पिलाये ज्ञान के प्याले को पीकर भृर्तहरि गाता है।

राजा की टेर-

प्याला प्याया भ्रम भुलाया अमृत उर वरसाताहे।
मैं तेरे चरणका चेला तीन लोक दरशाताहे।।

हे गुरु ज्ञान रूपी अमृत के प्याले को पीकर मेरा भरम दूर हो गया मेरे बदन में अमृत बरसने लगा है। मेरा सौभाग्य की मैं आपका चेला बना आज मुझे तीन लोकों के दर्शन हो रहे हैं।

गोरखनाथ की टेर-

झूठी काया भरम भुलाया माया जाल फलाताहे।।
झूठा जग संसार समझ ज्युं सपना रैंन बिलाताहे।। 2।।

यह शरीर (काया) झूठी है। व्यक्ति इसमें भ्रमित है। उस भ्रम में फंसा है। यह संसार झूठा है। जिस प्रकार समाज जिस तरह रात्रि के स्वप्न को व्यक्ति भूल जाता है। उसी तरह यह संसार माया जाल है।

इन पदों में कवि तेज ने इतिहास, साहित्य, संस्कृति-संगीत और भारतीय समाज के जीवन दर्शन, आगम-निगम, साधु-सन्यासियों, सूफी-संतों तथा योग साधनों द्वारा शरीर और आत्मा का विवेचन बहुत ही सुन्दर और सहज ढंग से किया है। इस खेल में साधारण व्यक्ति जिसमें नर-नारी बच्चों के अलावा तत्व ज्ञानी पुरुष भी लाभान्वित होते हैं। राजा भृर्तहरि का खेल कवि तेज की अमर कृति है। जो भारतीय समाज को सदा प्रेरणा देती रहेगी। आने वाली पीढ़ियाँ इस पर गर्व करेगी। संवत् 1975 में रची गई यह रचना आज अपने 100 वर्ष पूर्ण करने जा रही है।

खेल समाप्ति के बाद में देश काल और परिस्थिति के अनुसार जहां खेल प्रस्तुत किया जाता है। उन नगरों की शोभा, राजाओं के गौरव, उस देश की संस्कृति तथा बाजार नगर मंदिर सरोवरों की शोभा गाई जाती है। रम्मत आयोजन में सहयोग देने वालों का संस्मरण और उनके प्रति कृतज्ञता गुरू द्वारा आशीर्वाद और उनके कल्याण के लिये प्रार्थना की जाती है। राजाओं के समय में मंड़ली राजदरबार में जाती थी। पुरस्कार सम्मान पाती थी।

हमारी प्राचीन पारम्परिक शैलियों में रची रम्मते, समाज, संस्कृति और सुदृढ़ संस्कार देने वाली हमारी विरासतें हैं। अमूल्य धरोहरें हैं। माजवा (मध्यप्रदेश), मारवाड़ (राजस्थान) की समाज संस्कृति को परस्पर जोड़ने वाली अमूल्य लोकनाट्य विधाएँ हैं। जो तत्कालीन इतिहास, कला, संस्कृति और धर्म की साक्षी है। भृर्तहरि की रम्मत उज्जैन में शिव भक्तों के विश्वास, नाथ सम्प्रदाय के वर्चस्व और निराकार, निर्गुण विचारधारा का समाज पर प्रभाव दर्शाने वाली साक्षी हैं रम्मत कला विधायें। यह कलाविधाएँ समाज को गायक, नृतक, वादक, अभिनेता और रचनाकार, कवि तथा नाटककार देती है। आज उस उच्चकोटी की कला विद्या को ग्रस्त रही है। टी.वी., सिनेमा, मोबाईल और डी.जे. जैसे आधुनिक यंत्रों से कलायें मर रही है। चिन्ता है, एक दिन भूले बिसरे इतिहास प्रसंगों की तरह यह भी दफन न हो जाए। आवश्यकता है इसके संरक्षण, संवर्धन, प्रदर्शन एवं प्रोत्सहान की।

- मरू सांस्कृतिक केन्द्र, जैसलमेल (राज.)
मो.: 9413865665

आलेख

कुमारिकाओं में सांझी मांडने की महिमा

डॉ. कहानी भानावत

राजस्थान में बालिकाओं के जो विविध उत्सव एवं अनुष्ठान प्रचलित हैं उनमें श्राद्ध पक्ष में प्रतिदिन घर के मुख्य द्वार पर बनाई जाने वाली संझ्या अथवा सांझी कला का विशेष महत्व है। यह सांझी एक देवी के रूप में समपूजित है। प्रतिदिन संध्या को गोबर की विविध आकृतियों में बालिकाएं अपनी मां-बहिनों के सहयोग से तिथि के अनुसार उससे मिलते जुलते अंकन उभारती हैं और उन्हें नाना प्रकार के रंग-बिरंगे फूलों से सजाकर सांझी को सौंदर्यपूरित श्रद्धा अर्पित करती हैं।

श्राद्ध में हमारे यहां पितरों अथवा पूर्वजों को तिथि अनुसार स्मरण करने की परंपरा रही है। इसे विचित्र संयोग ही कहा जायेगा कि सांझी कैसे लड़कियों में पूर्वज के प्रतीक रूप में लोकप्रिय हो गई और हिन्दू जाति की समस्त छत्तीसी कोमों में इसका मंडनांकन प्रचलित हुआ। ऐसी अनोखी, अद्भुत और अनमोल परंपरा शायद ही कहीं अन्यत्र देखने को मिलती है।

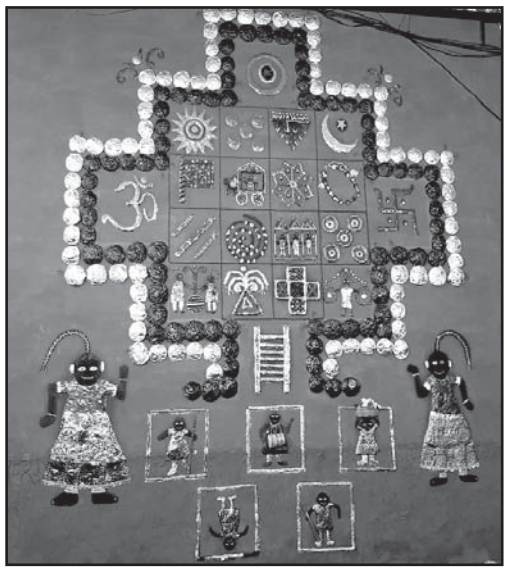

चित्र डॉ. दीपिका के सौजन्य से

राजस्थान में अनेक लोकदेवी-देवता मान्य हैं जो अपने विविध गुणों एवं अद्भुत कार्यों के लिए अपने जीवन को न्यौछावर करने के कारण पूजित हैं किंतु सांझी के साथ ऐसी कोई घटना नहीं मिलती है। हां, बगड़ावत लोकगाथा में 24 रणबांकुरे भाइयों का उल्लेख मिलता है। यह गाथा अजमेर के राजा बीसलदेव चौहान से जुड़ी है। उनके भाई मांडलजी के पुत्र हरीजी के बाघजी नामक एक ऐसी भीमकाय संतान हुई जिसका मुंह शेर का तथा धड़ मनुष्य का था।

ऐसे विचित्रकाय व्यक्ति को अलग बाग में शरण दे उसकी सेवा के लिए एक लंगड़ा (खोड्या) ब्राह्मण नियुक्त कर दिया। सावन के माह में परंपरानुसार सभी लड़कियां खेलने के लिए बाग में उपस्थित हुईं। ज्योतिष विद्या में प्रवीण ब्राह्मण के परामर्श से बाघजी ने अपनी भुजाओं में तेरह लड़कियां समेट लीं। उनमें से एक सबसे सुंदर सांझी नामक लडक़ी बाघजी ने ब्राह्मण खोड्या को दे दी और शेष बारह लड़कियों के साथ विवाह कर लिया। कालांतर में उनसे दो-दो पुत्ररत्न हुए जो 24 बगड़ावत के रूप में ख्यात हुए।

पहलीबार इसका उल्लेख करते डॉ. महेंद्र भानावत ने सांझी मंडन की प्रमुख नायिका संज्या अथवा सांझी को खोज निकाला। यही सांझी कब किस तरह लड़कियों में सर्वाधिक लोकप्रिय बनकर धीरे-धीरे उनमें पूजित और प्रतिष्ठित होती हुई पूरे राजस्थान में श्राद्ध पक्ष में प्रतिष्ठा अर्जित करते हुए सदा-सदा के लिए स्मरणीय बन गई। यह जितनी अचरज भरी कहानी है उतनी ही विस्मयकारी अकल्पनिक और शोधपूर्ण है। राजा बीसलदेव चौहान का समय सन् 1153 से लेकर 1163 तक का रहा।

बारहवीं शताब्दी से लेकर अब तक पूर्व घटित यह दास्तान कैसे अधिकाधिक लोकप्रियता प्राप्त कर सर्वचर्चित होती न केवल पूरे राजस्थान में अपितु आगे जाकर मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र, गुजरात, उत्तरप्रदेश, पंजाब, हरियाणा, हिमाचलप्रदेश आदि प्रांतों में अपना फैलाव देती हुई नेपाल तक पहुंच गई। इसके विविध नामों में सांजी, संजुल, गुलाबाई, धूंधा, सांझीफूली नाम मिलते हैं। सच तो यह है कि सांझी ही है जो गोबर को फूलों से सजाकर उसे गोबरफूली बनाती है।

सांझी के विविध अंकनों में सांझी और उससे जुड़े हम सबके मानव जीवनचक्र को प्रभावित करने वाले चांद, सूरज, तारे, फूल, छाबड़ी, चौपड़, नगाड़े की जोड़, तीन तिबारी, चरती-भरती खेल, बीजणी, बिजोरा, घेवर, सातिया, सप्तऋषि, अष्ट पंखूड़ी फूल, कुंवारे-कुंवारी, पंखी, केले का पेड़, गाड़ी, घट्टी, जलेबी, छड़ी, बंदरवाल, डोली, पान-सुपारी, नाव, बेलन, पछेटे, ढाल, तलवार, थाली-कटोरा, छाछ-बिलौना, निसरनी, खजूर, डोकरा-डोकरी, गिरिराज पर्वत, मोर-मोरनी, जनेऊ, पत्तल-दोने, हाथी की सवारी जैसे अनेकानेक अंकन उभारे जाने लगे।

इन अंकनों में बालिकाओं की इच्छा अनुरूप स्थानीयता को प्रभावित करने वाले और अंकन भी जुड़ते रहते हैं। इन्हें सजाने के लिए उस अंचल विशेष में उपलब्ध नानाप्रकार के फूल और उनकी पंखुडियों

से संझ्या को बड़ी ही चित्ताकर्षक सज्जा दी जाती है। होड़ा-होड़ी के कारण भी हर लडक़ी अपनी-अपनी संझ्या को अलग एवं अनूठे रूप में सिणगारने में कोई कसर बाकी नहीं रखती है। संझ्या पूर्ण करने पर अनुष्ठान रूप में उसकी आरती की जाती है और दूध, कूलर का छिडक़ाव किया जाता है।

उल्लेखनीय पक्ष यह है कि संझ्या मंडन के समय पूर्णत: स्वच्छ वातावरण और पवित्र परिवेश का ध्यान रखा जाता है। गोबर-मिट्टी की गोहली दी जाती है। कुंवारी केरड़ी अर्थात् गाय की बछिया का गोबर काम में लिया जाता है। जो फूल एकत्र किये जाते हैं वे तोड़े नहीं जाकर बड़े अदब से चूंट कर लाये जाते हैं।

कहने का तात्पर्य यह है कि देवता की पूजा अर्चना के समय जितनी पवित्रता, स्वच्छता, तन शुद्धि और मन निर्मलता रखी जाती है उतनी ही सावधानी संझ्या चितरावण के समय रखी जाती है।

श्राद्ध पक्ष में अंतिम तीन दिन संझ्या की छोटी-छोटी आकृतियां नहीं बनाई जाकर एक बड़ा सा कोट बनाया जाता है। यह कोट जैसे शहर के चारों ओर का परकोटा होता है उसी तरह अपेक्षाकृत बड़ी और मोटी गोबर से बनी दीवारनुमा होता है।

इसमें ऊपर ही ऊपर चांद-सूरज और दोनों ओर तोते तथा कौवे, भीतर बीच में पनवाड़ी, जोगियों की जमात, गाड़ी चलाता कोचवान तथा मुख्यत: रथ-गाड़ी होती है जिसमें संझ्या की विदाई दिखाई जाती है। यों कोट में छोटी-छोटी वे सारी प्रमुख चीजें होती हैं जो प्रतिदिन की संझ्या में चितराई जाती हैं। कोट के बाहर नीचे की ओर जाड़ी जसोदा, पतली पेमा, गुजरणी, खापर्या चोर, हरिजनी तथा ढोली और मालन दिखाये जाते हैं। ये सब कारू कहलाते हैं जिनका प्रवेश कोट के भीतर नहीं रहता है।

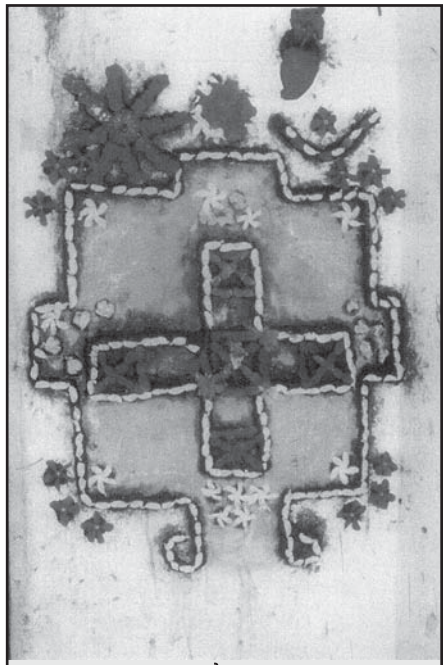

चौपड़

खापर्या चोर की टांगें ऊपर उठी हुई और सिर नीचे, गुजरणी के सिर पर दूध-दही से भरी एक के ऊपर एक चूड़ी उतार मटकियां अर्थात् जावणियां होती हैं। हरिजनी के हाथ में झाड़ू के प्रतीक के रूप में दो-तीन सीकें तथा टोकरी रहती है।

ढोली के साथ ढोल के रूप में मकई का डंठल, डूंडा और एक हाथ में ढोल बजाने के डंडे का प्रतीक तिनका लगा दिया जाता है। मालन के सिर पर फूलों की छाबड़ी बना दी जाती है। खापर्या चोर की मूंछों की जगह भुट्टे की पूंछियां लगा दी जाती हैं। जाड़ी जोधा अपेक्षाकृत मोटी होती है जबकि पतली पेमा क्षीणकाय बनाई जाती है। इन सबको तरह-तरह के फूलों, पंखुडियों के अलावा छोटी-छोटी पत्तियों, मकई-ज्वार, गेहूं-चावल के दानों, कपड़े की छोटी-छोटी रंगीन चिंदियों मालीपन्नियों एवं घास के बीजों जैसे उपकरणों से सजाई जाती हैं। तीनों दिन कोट को सुरक्षित रखते हुए प्रतिदिन संध्या की विविध गीतों और आरतियों के साथ आनुष्ठानिक पूजा की जाती है।

अंतिम दिन संझ्या विसर्जन का होता है। प्रतिदिन बनाई जाने वाली संझ्या जो एकत्र कर सुरक्षित करली जाती है, उसके साथ कोट की सांझी को मिलाकर लड़कियां नवीन वस्त्राभूषणों से सज्जित हो जुलूस के साथ पास के तालाब, सरवर अथवा नदी-तट पर एकत्रित हों पानी में विसर्जित कर विदाई देती हैं। संझ्या संबंधी अनेक छोटे-छोटे गीत मिलते हैं। इन गीतों में अपनी अबोध एवं भोली सहज मनोभावनाओं के साथ लड़कियां जो कुछ कल्पना करती हैं उन सबका चितरावण मिलता है जिनका कहीं कोई तालमेल नहीं बैठता और न सांझी के संबंध में कोई प्रामाणिक जीवन-दर्शन ही हाथ लगता है। केवल कल्पनाओं के आधार पर जितनी भी बालिकाओं की उमंगें और महत्वाकांक्षाएं हो सकती हैं वे सब मुखरित हुई मिलती हैं। इससे उनके मनोविज्ञान का भी अच्छा-खासा विश्लेषण किया जा सकता है।

संझ्या विसर्जन के बाद बालिकाएं बहुत सारे उन भावों में खो जाती हैं जो उनके लिए भी कल्पनाजीवी सकारात्मक संजीवनी का काम करती हैं। एक गीत में बालिकाएं खोड्ये से पूछती हैं कि अब सांझी कहां होगी ? क्या तुमने उसे कहीं देखा है ? इस पर खोड्या जवाब देता है, कई बार, कई रूपों में उसे देखी थी। कभी एक पहाड़ी पर अनमनी सी उदास जाती हुई तो कभी छाछ बिलौती हुई। कभी हाथ में कांगसी-डोरा लिए अपना सिर गूंथाती हुई तो कभी सोने की थाली में भोजन परोसती अपने हाथ में रजत निर्मित जारी से पानी पीती देखी। अब सब स्मृति शेष हैं। जितने रूपों में उसकी छवि स्मृति पटल पर उभरती लगे, उतने अनेक रूप उसकी यादगार के बन सकते हैं।

वर्ष भर बाद प्रतिवर्ष ही श्राद्ध पक्ष आता है किंतु वे लड़कियाँ जो एक उम्र के बाद विवाहित हो पराये घर की पाहुन बन जाती हैं, संझ्या को धीरे-धीरे स्मृतिशेष करती हुई अपनी आत्मजाओं में स्मृति रूप में हस्तांतरित करती हुई पाई जाती हैं। नियति का कैसा अजीब लेखांकन है कि एक लडक़ी अपने मां-बाप से बिछुड़ कर न जाने कितनी स्मृतियां अपने साथ ले जाती हैं। सांझी जैसी केवल सांझी ही है जो फूल सी कोमल और सबकी चितेरी बनी हुई प्रत्येक बालिका के जीवन को न जाने कितने रंगों, स्वप्नों, परिकल्पनाओं और मिथकों में अपनी उपस्थिति दर्ज कराती हुई सृष्टि के क्रम में अपने वंशानुक्रम से

अपना जीवन सार्थक करती हैं।

सांझी विषयक डॉ. महेन्द्र भानावत के प्रयास

राजस्थान, मुख्यत: मेवाड़ के ऐसे कई महत्वपूर्ण लोक-कला-रूप हैं जिन्हें आजादी के बाद अस्त होते पुनर्जीवन दिया। पुनर्जीवन ही नहीं, अपितु उन्हें विश्व-ख्याति तक मिली, चाहे बदलते सन्दर्भ में समय के पछाट से उनका वह स्वरूप नहीं रहा हो। इनमें पड़कला, भीलों में प्रचलित गवरी नृत्यानुष्ठान कठपुतली, बालिकाओं में प्रचलित सांझी तथा कावड़ कला को लिया जा सकता है।

श्राद्ध पक्ष पर डॉ. भानावत ने राजस्थानी कुमारिकाओं की संझ्या 'गुडगुड़ गुड़ल्यो गुड़ तो जाय' शीर्षक से पहली बार धर्मयुग साप्ताहिक में 25 सितम्बर 1960 के अंक में सचित्र आलेख लिखा था। उसके बाद देश की अनेक पत्र-पत्रिकाओं में उनके लेख प्रकाशित होते रहे। इसी क्रम में ठीक 50 वर्ष बाद 25 सितम्बर 2015 को उज्जैन में वहां की प्रतिकल्पा संस्था की पल्लवी द्वारा सांझी पर एक राष्ट्रीय संगोष्ठी डॉ. शैलेन्द्रकुमार शर्मा के प्रयत्नों से आयोजित हुई जिसमें बालकवि बैरागी, डॉ. पूरन सहगल के साथ डॉ. भानावत ने भाग लिया और सांझी पर उनके द्वारा किये गए प्रयत्नों को संगोष्ठी में आश्चर्यजनक सराहना मिली।

इसी क्रम में मालवी लोकसाहित्य के वरिष्ठ अध्येता डॉ. श्याम परमार ने सांझी पर किये अध्ययन पर डॉ. भानावत को लिखा कि सांझी संबंधी केवल तीन-चार छोटे-छोटे गीत ही मिलते हैं। इस सूचना से डॉ. भानावत को प्रेरणा मिली और उन्होंने सांझी संबंधी विशेष खोजबीन कर पचास के करीब गीत इकट्ठे किये और 1977 में उन्होंने 'राजस्थान की संझ्या' नामक पुस्तक लिखी जिसका प्रकाशन भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर से हुआ। यहीं से इसका द्वितीय संस्करण 2017 में राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर ने किया।

उसके बाद मोहन स्वरूप भाटिया ने ब्रज की सांझी, बसंत निरगुणे ने निमाड़ की सांझी, शंकरलाल यादव ने हरियाणा की सांझी तथा मालती शर्मा ने महाराष्ट्र की सांझी पर आलेख लिखे। भोपाल की आदिवासी लोककला परिषद ने डॉ. कपिल तिवारी के निर्देशन में सांझी नामक मोनोग्राफ दिया। डॉ. भानावत चाहते थे कि सांझी पर कोई बड़ा शोधपूर्ण कार्य हो अत: उन्होंने मुझे ही प्रेरणा देकर राजस्थान विश्वविद्यालय जयपुर से राजस्थान की सांझी कला पर शोधप्रबन्ध लिखवा कर पीएच.डी. के योग्य बनाया। उसका संक्षिप्त रूप राजस्थान हिन्दी ग्रंथ अकादमी द्वारा प्रकाशित हुआ।

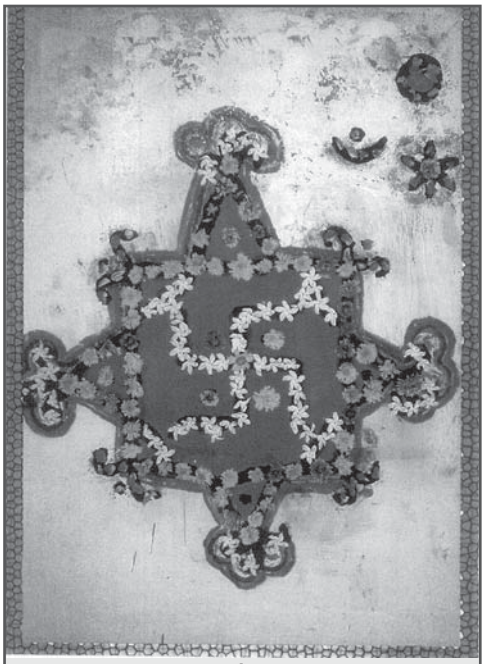

सातिया

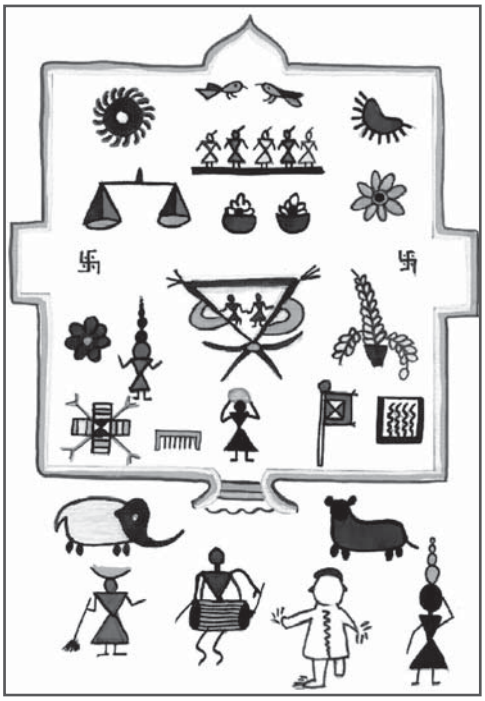

विगत तीन-चार दशक में देखते-देखते सांझी मंडन लुप्त-सा होता गया। अब वैसा उत्साह कहीं देखने को नहीं मिलता तब भी इक्की-दुक्की कुछेक संस्थाएं हैं जो अपनी पुरातन विरासत के संरक्षण के लिए कभी-कभी होश में आ जाती हैं।

यह प्रसन्नता की बात है कि उदयपुर के पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र द्वारा इस श्राद्ध पक्ष में अपने विश्व प्रसिद्ध शिल्पग्राम में 16 से 20 सितम्बर तक वहां की 25 फीट ऊंची और इतनी ही लम्बी दीवार प्रदान की करने पर डॉ. दीपिका माली ने संझ्या की विविध पारंपरिक परिकल्पनाएं मंडित कीं। डॉ. दीपिका स्थानी सुखाडिया विश्वविद्यालय के दृश्यकला विभाग की असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। उन्होंने बताया कि जब मैं चार वर्ष की थी तब से ही सांझी बनाती रही हूँ। मेरे मन में लगातार यह भावना रही कि सांझी पर मैं एक बड़ा से बड़ा ऐसा रूपांकन तैयार करूं जो अपने में अनूठा, अकल्पनीय और सर्वथा नया हो। इसके लिए मैंने डॉ. भानावत तथा डॉ. कहानी के लेखन का गहन अध्ययन कर तीन दिनों के भरसक परिश्रम द्वारा अपनी माता तथा बहिनों के सहयोग से बड़ा ही दिव्य एवं भावपूर्ण मंडन उभारा जो शिल्पग्राम की शोभा बढ़ाते हुए प्रतिदिन देश-विदेश तथा स्थानीय लोगों के लिए लुभावना आकर्षण बना रहा।

-16,वृन्दावन धाम,गली नं. -2,
न्यू भूपालपुरा,उदयपुर, मो. 9460352480

■

आलेख

रेखाएँ कहना जानती हैं...

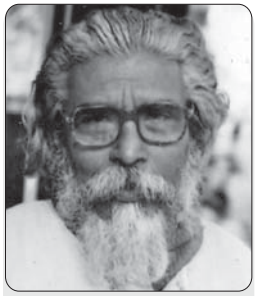

नवल जायसवाल

रेखाओं से हम कुछ बात करें उससे पूर्व हमें रेखाएँ रचना आनी चाहिए अन्यथा हम किससे बात करेंगे। हर अमूर्त को अपनी बात कहने के लिए एक मूर्त यानि सजीव आकार चाहिए, जीवन्त। इसके लिए हमें कम से कम शब्दों में सृष्टि के उद्विकास का तनिक सा अध्ययन कर लेना चाहिए। यह इसलिए आवश्यक है कि रेखाओं का उद्गम और अतीत का पता चल जायेगा। अन्ततः बात तो यह है कि रेखाओं की उत्पत्ति का रहस्य क्या है। मुझे यह भी ज्ञात है कि सृष्टि के उद्विकास के बाद मानव उद्विकास का क्रम आता है और मेरे बहुत से मित्र इसे जानते भी होंगे। मेरे एक परिचित साहित्यकार हैं जिनका मानना यह था भारतीयों अर्थात् आर्यों के जीन्स अफ्रीका में हैं। मैंने मानव उद्विकास पर भी कुछ काम किया है अतः जानता था कि मानव का उद्विकास और प्रथम साक्ष्य चण्डीगढ़ के पास स्थित शिवालिक की पहाड़ियों से प्राप्त हुआ था। सूचनार्थ यह बताना आवश्यक है कि मानव का पूरा कंकाल आज भी पाकिस्तान में रखा है। मेरे मित्र श्री ए.के. सोनकिया ने नर्मदा के कंधार, हरदा के पास से मानव की एक खोपड़ी और हाथी की खोपड़ी दोनों दाँतों के साथ खोजा है मानव की खोपड़ी का प्रतिरूप और हाथी का एक दांत आज भी मानव संग्रहालय में देखा जा सकता है। इस तथ्य को जानने लिए मेरे द्वारा रचित पुस्तक ''प्रेमचन्द का दृश्य विधान'' के पृष्ठ क्रमांक 80 पर देखा जा सकता है। प्रथम मानव विश्व में रामापीथीकस'' को माना गया है जो आज से 15 मिलियन वर्ष पूर्व पाया गया था किन्तु मनुष्य बनने की प्रक्रिया इससे भी पूर्व से चली आ रही थी। इसी मनुष्य को आदिमानव का नाम दिया गया था और इसी मानव ने या इसके बाद के मानव ने गुफाओं में चित्रकारी आरम्भ कर दी थी जिन्हें आज भी सारे भारत में देखा जा सकता। स्वयं भोपाल इसका उदाहरण है। मानव संग्रहालय के परिसर में और उसके पीछे के भाग में इस प्रकार की प्रागेतिहासिक चित्रकला का अध्ययन किया जा सकता है। लालघाटी पर उपलब्ध चित्रकला तो गिट्टियों में परिवर्तित हो गई है। मैंने और मि. खान ने मिलकर मिरर पत्रिका के लिए एक आलेख लगभग 1963-64 में लिखा था। प्रसिद्ध पुरातत्ववेत्ता स्व. श्री वी.एस. वाकणकर ने होशंगाबाद मार्ग पर भीम बैठका की खोज की थी। होशंगाबाद ही नहीं सारा देश ऐसी कलाकृतियों से समृद्ध है। दक्षिण में केरल तक इसका विस्तार है। मैंने उड़ीसा सहित कई स्थानों का छायांकन किया है। ये चित्र हजारों वर्षों बाद भी जीवित है।

नृतत्व शास्त्र द्वारा मान्य, ये ही वे चित्र हैं जिनमें आकृतियाँ रचने के लिए रेखाओं का उपयोग किया गया। शास्त्र ने इस बात को भी स्वीकार किया है कि विश्व की प्रथम कला ''चित्रकला'' ही है। अन्य कलाएँ इसके बाद अस्तित्व में आई। यह एक सच है और कोई भी इसे विवाद में न डाले। भारत ने ही इसे दिशा दी है जैसे आये बाहर से नहीं आये बल्कि भारत से बाहर गये। उसी प्रकार जिस प्रकार शून्य और दशमलव भारत की देन है। इसकी चर्चा मैं बाद में भी करूँगा। प्रागेतिहासिक चित्रों में सीधी रेखाओं का अधिक उपयोग है जबकि वक्र अर्थात वृत के आकार में चलने वाली रेखाएँ कम हैं। जब हम रेखा की बात करते हैं तो प्रत्येक रेखा जो सीधी चलती है बिन्दुओं के द्वारा रची जाती है। एक रेखा में हजारों बिन्दु हो सकते हैं और यह निर्भर करता है रेखा की मोटाई और लम्बाई पर। इसके अलावा वक्र में भी रेखाएँ चलती हैं जिनका समापन वृत पर जाकर होता है। वृत की रेखाएँ जब अपना खण्डन करती हैं और विभिन्न दिशाओं में चलती हैं विभिन्न आकार ले लेती हैं। विभिन्न आकार यदि मानक की परिधि में आ जाये तो लय बनाते हैं जो अभिव्यक्ति के लिए आवश्यक हैं। पूर्व में कहा जा चुका है कि आदि मानव ने जो चित्र रचे हैं उनमें सीधी रेखाओं का उपयोग अधिक हुआ है वक्र का कम। इस छोटे से सिद्धान्त ने एक बड़े नियम और मापदण्ड की रचना की है। इस नियमावली में प्रवेश करें हमें मान लेना चाहिए कि कोई, समय का ऐसा, एक मील का पत्थर आया था जिसने ज्यामितिय आकृतियों और पुष्पित आकृतियों की रचना कर डाली। ज्यामितिय आकृतियों में चाहे वे सीधी रेखाओं से बने या पुष्पित आकृतियों से बने वे एक निर्धारित आकार में ही अपना स्वरूप रच पाती हैं जबकि पुष्पित आकार वाली रेखाएँ लय की रचना कर जाती हैं। ज्यामितिय आकृतियों ने अपना

संसार सीमित कर रखा है जबकि पुष्पित रेखाओं में आकार असीमित हैं। सीधे शब्दों में कहा जा सकता है जितने प्रकार के फूल और पत्तियाँ होगें उतने प्रकार के आकार तो बनाये ही जा सकते हैं। पुष्पित रचनाओं का उपयोग साज-सज्जा के ज़्यादा काम आता है किन्तु उन्हें ज्यामितिय आकारों में समायोजित किया जाता है जैसे वस्त्रों की छपाई, प्रमाण पत्रों की सज्जा आदि में। सीधी रेखाएँ जहाँ गति की प्रतीक बन जाती हैं वहीं वक्र रेखाएँ लय के कारण अन्य विचारों को जो शायद कविता तक जा सकें, अपना योगदान दे जाती हैं। रेखाओं को उनके कर्म के अनुसार विभाजित तो कर दिया है किन्तु दोनों शैलियाँ अनिवार्य रूप से एक दूसरे की पूरक हैं। एक भौतिकता का प्रतिनिधित्व करती हैं तो दूसरी श्रेणी आध्यात्म तक जा सकती हैं। इस यात्रा को सम्पन्न करने और उनकी व्याख्या में अमूर्त भाव को लाने में कलाकार, चित्रकार और रेखाकार को भी उतना ही सक्षम होना चाहिए जितना विषय हो। सारगर्भित रेखाएँ स्वयं बोलने लगेंगी। इस प्रकार रेखाओं के पाठक को भी वाचन में परिपूर्ण होना चाहिए।

अब हमारे सामने प्रश्न है कि रेखाकार की क्षमता कैसी हो। कई प्रश्न मेरे सामने उभर रहे हैं जिनका समाधान करना मैं चाहूँगा। सबसे पहले जो व्यक्ति इस क्षेत्र में आना चाहता है उसे अपनी लगन साबित करनी होगी। स्वयं भी वह अपना परीक्षण कर सकता है। विश्वव्यापी सिद्धांत है कि प्रत्येक कला में गुरु का साथ और आशीष चाहिए क्योंकि रेखांकन करना एक व्यवहारिक कला है जिसे समय-समय पर मौखिक रूप से मार्ग दर्शन चाहिए, केवल शब्द ज्ञान पर्याप्त नहीं होता है। गुरु चयन भी एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। सामने वाले को बुरा भी न लगे और आपको एक समर्थ गुरु मिल जाये। आज शिक्षण संस्थाओं में जो प्रशिक्षक मिलते हैं वे केवल शिक्षक की भूमिका ही निभा सकते हैं। सत्र समाप्त होने के बाद हम कहाँ और तुम कहाँ। गुरु सदैव आपके साथ रहता है, जब चाहे उसका मार्ग दर्शन प्राप्त कर सकते हैं। जहाँ से मैंने चित्रकला में प्रशिक्षण प्राप्त किया वहाँ का वातावरण एक गुरुकुल की तरह ही था। वे शिक्षक अवश्य थे किन्तु उनका आचरण गुरुओं की तरह रहा। शिष्य को भी एक आदर्श शिष्य बनना आना चाहिए। अपनी क्षमता वह अपनी शारीरिक शक्ति, कलम पकड़ने की पद्धति, एक लम्बे समय तक एक ही जगह पर एक ही मुद्रा में बैठे रहने की योग्यता, समस्त विषयों का ज्ञान खासकर उसके आकार का अध्ययन, आसपास में रहने वालों का पूरा सहयोग, अपनी स्वयं की शैली विकसित करने की क्षमता और एक शैली जब कण्ठस्थ हो जाये तो नई शैली विकसित करने की योग्यता भी हासिल करते रहना चाहिए। इस सिद्धान्त से आप कलाकार बने रहेंगे अन्यथा 'मोनोटोनस' की टिप्पणी आपके खाते में बनी रहेगी। यह एक आग का दरिया है और डूब के जाना है। जटिलता को सरलता में बदल देने का नाम ही तपस्या है। कला को कभी शौक या व्यवसाय न बनायें, उसे पूजा का ही स्थान दें, तब ही सफलता आपके पथ पर आगे-आगे चलेगी। कलाकार में वह विश्वास होना चाहिए कि रेखा जिसे उसने अपनी कल्पना में दिशा देने की सोच रखा है, वह उसी दिशा में अपनी मंज़िल तक उसी प्रकार जाये जैसी कल्पना ने मस्तिष्क में स्थान पाया है। हर कल्पित रेखा का मार्ग निर्धारित होता है। हर रेखा का मार्ग निर्धारित करने से पूर्व सब कुछ कला सम्मत होनी चाहिए। जब कलम हाथ में आ जाये उसकी पकड़ सुदृढ़ हो ताकि वह कलाकार की पकड़ में रहे। कलम जब चलती है उस समय हाथ एक जगह स्थिर ही रहता है। ऐसी स्थिति में रेखा की लम्बाई सीमित ही रहती है और यदि लम्बी रेखा खींचनी हो तो धरातल पर हाथ स्थिर न रहे। इस प्रकार की दोनों स्थितियाँ वक्र रेखा खींचने के समय भी हो सकती है। रेखाओं की रचना विषय के अनुरूप ही होना चाहिए। किसी चित्र में किसी एक आकार को भरने के लिए भी छोटी-छोटी रेखाओं का उपयोग किया जा सकता है। मालवा के मांडणे इस शैली के लिए सर्वोपरि हैं। दोनों प्रकार की शैलियों का उपयोग आदि मानव कर चुका है अत: यहाँ भी हम कह सकते हैं कि इस रचना के लिए भारत सर्व प्रथम है।

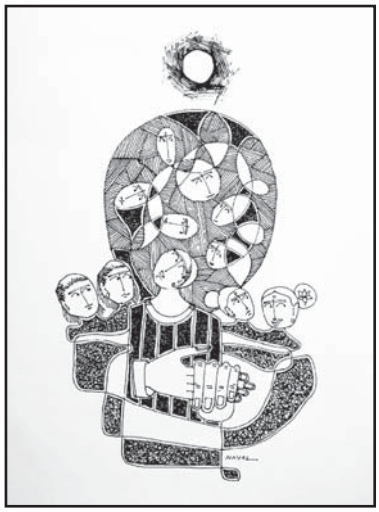

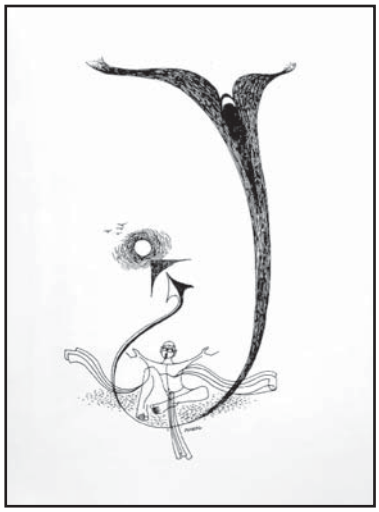

चूँकि रेखांकन चित्रकला की आरम्भिक क्रिया है इसलिए इसका सुदृढ़ होना अति आवश्यक है। आदि मानव ने चित्र अर्थात् दृश्य की रचना करने को प्राथमिकता माना या सहज मान लिया, विचारणीय प्रश्न है। उसने यह कार्य एक योजनाबद्ध तरीके से ही किया है अन्यथा उसके प्रमाण आज जीवित नहीं मिलते। चित्रकला की परिकल्पना को तो सहज ही स्वीकार किया जा सकता है किन्तु उसमें लगने वाले रंग को तैयार करने में जो सूझ-बूझ सामने आई है वह निश्चित ही तकनीक के विकास की बात कहेगी। हाँ! एक बात अवश्य है, इन

चित्रों पर पानी पड़ने से इनके रंग और प्रखर हो जाते हैं। सभी वैज्ञानिक इन पर पानी डालने के लिए मना करते हैं किन्तु वर्षा का जल उन पर अपने आप पड़ जाता है। फोटोग्राफिक प्रलेखन करने के लिए इन चित्रों पर पानी डालना आम बात है ताकि रंगों की तीव्रत में ही क्लिक किया जा सके।

जब हम दृश्य की चर्चा कर रहे हैं तो हमें यह भी जानना चाहिए कि पृथ्वी पर दृश्य का सिलसिला कहाँ से आरम्भ होता है सौर मण्डल की रचना के समय से ही दृश्य की रचना माना जाना चाहिए, पृथ्वी भी उनमें से एक हिस्सा है। पृथ्वी के उद्विकास की रचना के साथ ही, उस प्रक्रिया में जल की रचना प्रमुख है। हम आज भी बिना जल के नहीं रह सकते। जल रचना के समय से जलीय प्राणी भी अस्तित्व में आ गया था। यह बात अलग है कि यही जलीय प्राणी आगे चलकर मिट्टी वाले भाग में भी आ गया और एक लम्बी अवधि के बाद आज का मानव अस्तित्व में आ गया। इस अवधि की चर्चा कर लेने से ज्ञात होता है कि दृश्य तो पहले से थे किन्तु आँख न होने से दोनों का परस्पर सम्बन्ध स्थापित न हो सका। अत: कहा जा सकता है कि आँख है तो दृश्य है और यह भी कहा जा सकता है कि दृश्य को पहली बार देखने का श्रेय किसी न किसी जलीय प्राणी को दिया जा सकता है। मानव के अस्तित्व ने इस महत्ता को आगे बढ़ाया और कला का दर्जा दिया। रेखांकन इस सम्पूर्ण प्रक्रिया की आत्मा है जो दृश्य को हूबहू ही नहीं एक कलात्मक स्वरूप देने में सक्षम है इसलिए कलाकार की रेखा रूपी नींव बहुत समृद्ध होनी चाहिए। रंग और आकार अगली पायदान पर अच्छी रेखाओं की राह देखते हैं। इसका अर्थ यह भी नहीं कि रेखाओं का उपयोग केल चित्रवीथि तक जाता है ऐसा नहीं है, वह अपने आप में सम्पूर्ण एवं सशक्त विधा है जो अपने वक्तव्य में हज़ारों शब्द रच सकती है। सम्पूर्ण कला संसार भावनाओं और स्पन्दनों की परिधि में अपनी सांस लेता है इसलिए रेखांकन को इससे प्रथक करके नहीं देखा जा सकता है अत: कलाकार का दायित्व है वह ललित ही माने।

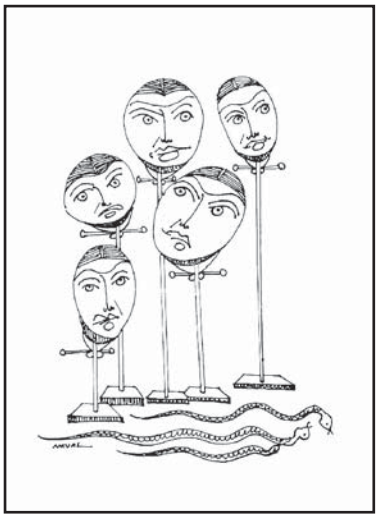

संसार में विषयों की कमी नहीं है। हर विषय को अपनी स्वयं की शैली और सुविधा से रचने का प्रयास कलाकार को शीर्ष पर पहुँचा सकता है। मनुष्य की भावनाओं को मूर्त से अमूर्त तक ले जाया जा सकता है। मूर्त के लिए तो आकार और स्वरूप सहजता से मिल जाते हैं किन्तु अमूर्त के लिए प्रतीकों का ही सहारा एकमात्र साधन है। प्रतीक तो स्वयं कुछ नहीं कहते, वे केवल अपने मूल का प्रतिनिधित्व करते हैं इसलिए प्रतीकों का सहारा समझ-बूझकर करना सफलता का पर्याय है। चित्र में तो सभी रेखाएँ हों या अन्य तकनीक से बनाये आकार हों मूर्त रूप में सामने आते हैं, परीक्षा तो इस बात की है कि वे सब मूर्त आकार अमूर्त का आभास दें। उदाहरण के लिए ज्ञानेन्द्रियों और कर्मेन्द्रियों का उचित ज्ञान आवश्यक है। मनुष्य के कटि प्रदेश के ऊपर पेट पर ठीक सामने की ओर नाभि है जो नाद का केन्द्र है। ध्वनि ही अक्षर की जननी है। यदि वाचिका का अस्तित्व नहीं होता तो लिपिका भी अस्तित्व में नहीं आती। बावन अक्षरों वाला वर्णमाला में 'ओउम्' जैसे शब्द की रचनाकर 'नाद' का नाम दे दिया। नाद सम्पूर्ण वाचिका और लिपिका का प्रतिनिधित्व करती है। इसी प्रकार शरीर ने प्रमुख अवयवों में एक निराकार के वास को सिद्ध कर दिया। हम चाहें तो तंत्र और मंत्र का अध्ययन कर उन आकारों को समाज के सामने ला सकते हैं जो चेतना के केन्द्र में सदैव रहते हैं। हम हर आध्यात्म को चित्रित कर सकते हैं। हमने उस निराकार को आवश्यकता और उद्देश्यों के साथ ही साथ प्रदाता के रूप में नये नये आकार दिए हैं, नया स्वरूप प्रदान किया है, नई वेश भूषा से अलंकृत किया है और उसी स्वरूप की आराधना करते हैं। ओउम् को ध्वनि से जोड़ा, शिवलिंग को सृष्टि से जोड़ा, स्वास्तिक को अनन्त से जोड़ा, शंख, चक्र, गदा, पद्म, तीसरा नेत्र आदि से सम्भावनाओं को साक्षात किया है। कुछ लोग कह सकते है कि ईश्वर का अस्तित्व ही नहीं है, वे झूठ बोलकर खुद तो भ्रमित होते ही हैं, अन्यों को भी करने का प्रयास करते हैं अन्यथा एक 'रेखा' पर इतना सब लिखना कैसे सम्भव होता। हम सब हाड़-मांस में एक हैं किन्तु आकार प्रकार में भिन्न-भिन्न, गुणों में विविधता, योग्यता में अलग-अलग। कई उदाहरण दिए जा सकते हैं अत: कोई न कोई ऐसी शक्ति है जो व्यक्ति को अलग-अलग प्रकार से रच रही है और हर समय नये नये परिवर्तन कर अपनी उपस्थिति का आभास दे रही है।

रचनाकार ही केवल दृश्य का अहसास नहीं करता अन्य भी करते हैं जिससे समन्वय भाव की अदृश्य रचना स्थापित होती है और यही भंगिमा अनेक लोगों के आध्यात्मिक दृश्य को निराकार रूप में ले जाना चाहते हैं। नवरस की कल्पना इन्हीं सोच का परिणाम है। नवरस अमूर्त भाव का सबसे बड़ा उदाहरण है जो चित्रों में भी व्यक्त किया जा सकता है अत: रेखाकार का दायित्व है कि वह निराकार के संसार से साकार के बीच की दूरी को एक सेतू के रूप में लाने का प्रयास करे। शब्द, दृश्य और भाव सम्पूर्ण कला जगत की तूलिकाएँ हैं जिनका उपयोग समाज के हित में होना चाहिए।

रेखाकार यह भी सोचे कि उसे इस संसार को 'दर्शन' का वह तत्व छोड़कर जाना है जो सदैव 'एमवस्तु' ही बना रहे।

-प्रेमन, बी-201, सर्वधर्म, कोलार रोड, भोपाल-462042
फोन : 0755-2493840

■

लैग्स्टन ह्यूज की कविताएँ

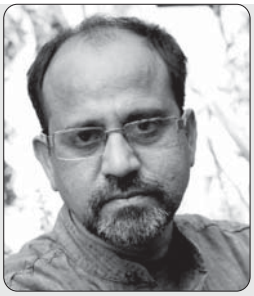

अनुवाद : मणि मोहन

प्रो. मणि मोहन अनुवाद के क्षेत्र में लंबे समय से सक्रिय हैं। अनुवाद के अलावा वे समकालीन हिंदी कविता के समर्थ कवि भी है। अनुवाद के माध्यम से वे हमें विश्व साहित्य की विरासत और हलचल से अवगत कराते रहते हैं।
सम्प्रतिः शा. स्नातकोत्तर महाविद्यालय गंज बासौदा में अंग्रेजी के प्राध्यापक। मो.- 09425150346

लैग्स्टन ह्यूज (1902–1967)

लैग्स्टन ह्यूज जीवन, संघर्ष और सृजन के सहज प्रवाह के कवि हैं। सादगी और सहज अभिव्यक्ति का सौन्दर्य उनकी कविता की ताकत है। उनकी कविताओं का विषय मूल रूप से मेहनतकश आदमी है, चाहे वह किसी भी नस्ल का हो। उनकी कविताओं में अमेरिका की सारी शोषित–पीड़ित और श्रमजीवी जनता की कथा–व्यथा का अनुभव किया जा सकता है।

अब

किस कदर
बोरियत है
हमेशा
गरीब बने रहना भी।

ईश्वर

मैं ईश्वर हूँ–
एक भी मित्र नहीं,
अकेला अपनी पवित्रता से घिरा
इस अंतहीन संसार में।
नीचे, युवा–प्रेमी
मस्ती से घूम रहे हैं धरती पर–
परन्तु मैं ईश्वर हूँ–
नीचे नहीं उतर सकता।
वसन्त!
जीवन प्रेम!

प्रेम ही तो जीवन है!
मनुष्य होना बेहतर है
ईश्वर से – और अकेला होने से।

गीत

मैं वहाँ बैठा रहा
अँधेरे में उसके गीत गुनगुनाते हुए।
उसने कहा
'मुझे समझ नहीं आते
शब्द'।
मैंने कहा :
''यहाँ
शब्द कहाँ हैं''।

अस्पताल का कमरा

कितनी खामोशी है
यहाँ इस बीमार कमरे में
जहाँ बिस्तर पर
एक खामोश स्त्री लेटी हुई है
दो प्रेमियों के बीच–
जीवन और मृत्यु,
और तीनों के ऊपर
पड़ी हुई है
दर्द की एक चादर।

सुसाइड नोट

शांत,
शीतल नदी के चेहरे ने
मुझसे एक चुम्बन माँगा।

खामोशी

कितना शांत
कितने अजीब तरह से शांत है
आज यह पानी,
यह ठीक नहीं
पानी के लिए
इस तरह
इतना शांत....

न्याय

कि न्याय एक अंधी देवी है
एक ऐसी बात
जिसे हम अश्वेत
खूब समझते हैं :
उसकी पट्टियां छुपाती हैं
दो पके हुए घाव
जो पहले कभी आँखें थीं।

■

राम सनेही लाल शर्मा 'यायावर' के गीत

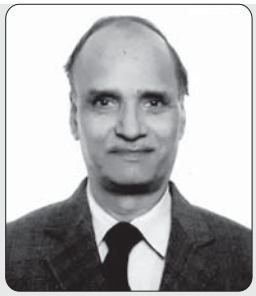

राम सनेही लाल शर्मा 'यायावर'

जन्म : 5 जुलाई, 1949, फिरोज़ाबाद जनपद का ग्राम तिलोकपुर।
प्रकाशन : मन पलाशवन और दहकती संध्या (नवगीत व ग़ज़ल), गलियारे गंध के (नवगीत), पांखुरी-पांखुरी (मुक्तक), काँधे पै घर (हाइकु संग्रह), चीखती टिटहरी : हांफता अलाव (नवगीत) आदि।
86, तिलक नगर, बाईपास रोड, फिरोज़ाबाद, 283203 (उ.प्र.)
मो.: 9412316779

सुन हीरा मन

घना अंधेरा है
डरना मत
सुन हीरामन !

कठिन राह है
बीहड़ जंगल
गरजे तमीचरों का
छल-बल
तमसावृत हैं दशों दिशाएं
भय से काँप रहा
पारावत
सुन हीरामन !

डरा दिया है
डर ने डर को
नहीं सूझता है

कर कर को
घटा टोप मूल्यों के घर में
हिलता है यह
सच का पर्वत
सुन हीरामन !

नहीं सूझता है
पथ, माना
झंझा ने भी
तेवर ताना
जब तक तारनहार न आएं
तब तक रहो
प्रतीक्षा में रत
सुन हीरामन !
दाल समूची ही काली हो
कंस अपरिमित बलशाली हो
अपराजेय लगे दानव दल
छोड़ न पर
लड़ने की आदत
सुन हीरा मन।

हर नदी विश्वास है

हर नदी विश्वास है
मन प्राण का

एक निश्छल चेतना है
चल रही अविराम अनथक
एक भीतर, एक बाहर
थकन को करती निरर्थक
यह थकन से पूर्व
लेती जीत
हर संग्राम जग का
है सतत उद्घोष
मानव-त्राण का

चल रही है
सभ्यता का श्वेत पावन
केतु लेकर
साधना, संकल्प, चेतना सत्व
को आधार देकर
हम नदी के साथ हैं
निश्छल हृदय से
आत्मा से
यह पुनर्भव मन्त्र है
निष्प्राण का

यह चले तो
विश्व की सब यातनायें
काँपती हैं
सोखने वाली रसों को
सब व्यथायें हाँफती हैं
जो करे कुत्सित, अनिर्मल
धूर्त है वह
लक्ष्य होने दो उसे
अव वाण का।।

■

रामेश्वर शर्मा की कविता

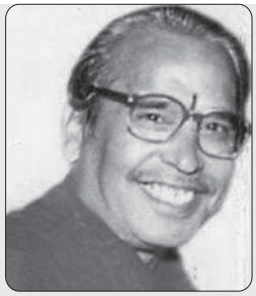

रामेश्वर शर्मा 'रामूभैया'

जन्म : 1 अक्टूबर, 1950, ग्राम लाखेरी, जिला बूँदी (राज.)।
प्रकाशन : राजस्थानी भाषा में म्हाँ सूं असी बणी, चालाँ सूरज ले'र हाथ में, लाताँ लाताँ पींदा गल ग्या, तेरे दुखड़े-मेरे दुखड़े (काव्य संग्रह), रोकड़ खाते के सावन के, भादौ के भगवान (मुक्तक) और लगभग 50 से अधिक विभिन्न चालीसाएँ।
109, शास्त्री नगर, दादाबाड़ी कोटा (राज.)
मो.: 7597705549

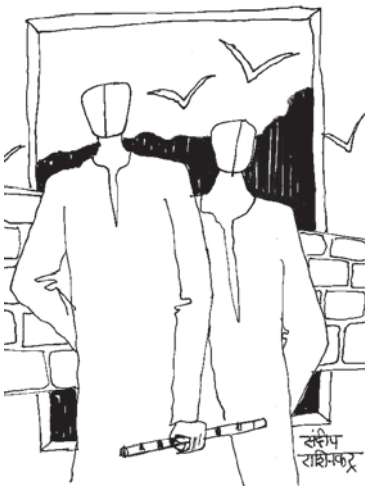

काव्यानुवाद : वन्देमातरम्

सुजलां सुफलां मलयजशीतलाम्
सस्य श्यामलां मातरम्
शुभ्र ज्योत्सनाम पुलकित यामिनीम्
फुल्ल कुसुमित द्रुमदलशोभिनीम्
सुहासिनीं सुमधुर भाषिणीम्
सुखदां वरदा मातरम्।
वन्देमातरम्

जो भी पैदा हुआ बंधुओं, अपने हिन्दुस्तान में।
उसे चाहिये करे वन्दना, मातृभूमि की शान में।।
वन्देमातरम्-वन्देमातरम्।।

हिन्दू मुस्लिम सिक्ख ईसाई, सबको है वरदानी माँ।
मीठे-मीठे फल देती है, मीठा-मीठा पानी माँ।।
चंदन गंधी शीत समीरन, पहने चूनर धानी माँ।।
यही मादरे वतन हमारी, धरती हिन्दुस्तानी माँ।।
फर्ज हमारा पढ़े कसीदे, हम इसके सनमान में।
यही भावना भरी हुई है, वन्दे मातरम् गान में।।
वन्देमातरम्-वन्देमातरम्।।

देखो इसकी धवल चाँदनी, वाली पुलकित रातों को।
परवत से बतियाते निर्झर, करते मीठी बातों को।।
हरियाले पत्तों से शोभित, शाख सुमन मुस्कातों को।
हमें समझना भारत भू से, अपने रिश्ते-नातों को।।

नमक इसी का, हवा इसी की, घुली हमारे प्रान में।
इसी भाव का दर्शन होता, वन्देमातरम् गान में।।
वन्देमातरम्-वन्देमातरम्।।

धरा मादरे वतन हमारी, प्यारी भारत माता है।
हम है इसके बेटे-बेटी, इससे गहरा नाता है।।
भारत माता नाम नहीं है, माटी पत्थर मूरत का।
वन्दे मातरम् नमस्कार है, इसी धरा की सूरत का।।

मूरत पूजा नहीं लिखी है, वन्देमातरम् गान में।
तट पर आई कश्ती वापिस, मत फेंको तूफान में।।
वन्देमातरम्-वन्देमातरम्।।

वन्देमातरम् किसी पंथ के, ऊपर है आघात नहीं।
वन्देमातरम्- कहलाने की जबरन कोई बात नहीं।।
वन्देमातरम्- किसी वर्ण का, अथवा कोई जात नहीं।
वन्देमातरम्- जीत किसी की, और किसी की मात नहीं।।

संस्कारमय शब्दावली है, राष्ट्र-प्रेम गुणगान में।
हर भारतवासी को रखना, अर्थ यही बस ध्यान में।।
वन्देमातरम्-वन्देमातरम्।।

वन्देमातरम् शंखनाद है, आजादी के वीरों का।
वन्देमातरम् प्रतिवाद है, परतंत्री जंजीरों का।।
मंगल आशीर्वाद है अपने, साधु संतों पीरों का।
वन्देमातरम् नव निनाद है, महलों और कुटीरों का।।

वन्देमातरम् का रस घोलें, बचपन से ही कान में।
छुपी हुई पहचान हमारी, इसकी ही पहचान में।।
वन्देमातरम्-वन्देमातरम्।।

■

मयंक श्रीवास्तव की ग़ज़लें

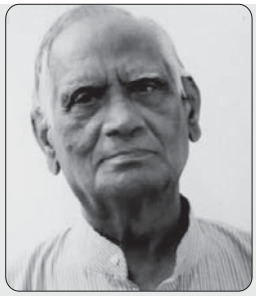

मयंक श्रीवास्तव

जन्म : 11 अप्रैल, 1942, ग्राम ऊंदनी, जिला फिरोज़ाबाद (उ.प्र.)।
प्रकाशन : सूरज दीप धरे, सहमा हुआ घर, इस शहर में आजकल एवं उंगलियां उठती रहें (प्रमुख गीत संग्रह) तथा रामवती (गीतिका संग्रह) इनकी प्रमुख कृतियाँ है। 50 वर्षों से देश की प्रमुख पत्र-पत्रिकाओं में गीतों का प्रकाशन
242, सर्वधर्म कॉलोनी, सी-सेक्टर, कोलार रोड, भोपाल-462042 (म.प्र.)
मो.: 9977121221

निर्धनता में...

घर से जरा निकल कर देखो
कठिन डगर है चल कर देखो

कितनी बुरी ढाल होती है
चढ़कर बंधु फिसल कर देखो

जीवन असल देखना है तो
निर्धनता में पल कर देखो

कभी आग भी अच्छी लगती
प्रेम अगन में जल कर देखो

बहुत सरल है नभ को छूना
इच्छा शक्ति प्रबल कर देखो

कीचड़ नहीं लगेगी गंदी
मन को मीत, कमल कर देखो

सागर कितना छोटा लगता
अपने नयन सजल कर देखो

रिहाई न दो

आंख तुम डबडबाई मत देना
उम्र भर की जुदाई मत देना

ज़िन्दगी भर खत्म जो न हो सके
इतनी लम्बी लड़ाई मत देना

हमने दिल दे दिया है तुमको ही
तुम हमें बेवफ़ाई मत देना

जो ज़मीं से न जुड़ सकीं अब तक
ऐसी बातें हवाई मत देना

ज़ख़्म बेशक हमें भी दे देना
पर हमें जगहंसाई मत देना

तुमसे अपराध हो गया है तो
व्यर्थ है अब सफ़ाई मत देना

जब हमें क़ैद कर लिया तुमने
है गुज़ारिश रिहाई मत देना

बातें हों

ठौर ठिकाने की कुछ बातें हों
चलो ज़माने की कुछ बातें हों

इन हाथों ने पेड़ बहुत काटे
पेड़ लगाने की कुछ बातें हों

उखड़े उखड़े पूरी उमर गई
पांव जमाने की कुछ बातें हों

दर्द बहुत गाया है गीतों में
दर्द मिटाने की कुछ बातें हों

चलो डूब जाने दो सूरज को
चांद उगाने की कुछ बातें हों

प्यार बहुत है मान लिया लेकिन
प्यार जताने की कुछ बातें हों

चलते चलते बहुत थक गए हैं
अब सुस्ताने की कुछ बातें हों

■

कहानी

बदबू

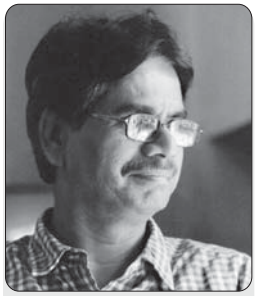

हरि भटनागर

आपके लिए यह घटना गैरज़रूरी, कान न देने वाली, हो सकती है, लेकिन मेरे लिए इसकी अहमियत है। यही वजह है कि मैं इससे बेचैन हूँ और इसके तले मेरा दम घुटा जा रहा है।

इस घटना के बारे में सोचता हूँ जो मेरे साथ घटी, तो समझ में आता है कि इसका संबंध उस बदबू से था जो दो दिन से मेरी नाक में दम किए हुए थी।

लेकिन वह बदबू न माँ को महसूस हो रही थी और न पत्नी-बेटे को। अजब हाल था। मैं बेचैन था। गुस्से से भरा। बेहद गालियाँ बकता हुआ जो थमने का नाम नहीं ले रही थी।

उस दिन सुबह-सुबह जब मुझे तीखी बदबू महसूस हुई- बाहर और बैठके मे जहाँ मैं सोता हूँ, कुछ नज़र नहीं आया, तो मैने माँ से पूछा। माँ ने अग़ल-बग़ल सूँघते हुए मुझे देखा और कहा- कुछ तो नहीं है।

माँ पर मुझे गुस्सा आया- बुढ़िया पत्नी की बुराई तुरंत सूँघ लेती है और उस पर घण्टों किचकिचाती रहती है, बदबू के लिए कह रही है, कुछ तो नहीं है! बहुत ही कमीन है राँड!!!

माँ पर मेरा गुस्सा बढ़ता गया और मैं उसे गंदी-गंदी गालियाँ देने लगा। उसी रौ में पहले मैंने बैठके को उलट-पुलट डाला। जितनी बड़ी माँ की कुठरिया है जिसमें सिर्फ़ माँ की खाट आती है, उतना ही बड़ा मेरा बैठका है जिसमें एक चर्राता तखत पड़ा है। तखत के नीचे घर भर के सूखे-ऐंठे जूते-चप्पलों का हुजूम है। कई सारे मसहरी के डंडे, खाट की पाटियाँ, पुराना स्टोव, कनस्तर, जंगखाए डिब्बे, झाड़ू-कूँची के अवशेष- बैठके की कुल जमा पूँजी थी जिसे मैंने छितरा डाला। बदबू का सुराग न मिला। मिला तो सिर्फ़ तीखी गंध का भभका जिससे मेरे नथुनों में बेतरह खुजाल पड़ गई।

जब सुराग़ न मिला तो गुस्से को बढ़ना था। गालियों की रफ़्तार अब अपने चरम पर थी। चीखते हुए मैंने माँ की कुठरिया को खखोना चाहा।

अब आप यह देखिए कि लम्बे अरसे के बाद, अगर इसकी गणना की जाए तो पाँच-छे साल का समय तो निकल ही गया होगा, मैं माँ की कुठरिया में झाँक रहा हूँ। इस कुठरिया में माँ अपनी दुनिया बसाए है और उसी में मगन है। एक खाट जो गड़हे की शक्ल ले चुकी है, दो टीन के टूटे-पिचके बकसे हैं जो ईंटों के ऊपर रखे हैं जिन पर माँ की पुरानी धूलखाई घिसी धोतियाँ पड़ी हैं। चारों तरफ़ भगवान के कैलेण्डर गँजे हैं जो धूल और धुएँ को गले लगाए हैं जिन्हें दीवाल अपने से दूर करना चाह रही है और वे हैं कि दीवाल छोड़ना नहीं चाह रहे हैं। सिर के ऊपर एक गाँठदार डोरी है जिस पर गूदड़ होते रजाई-कम्बल और कपड़े झूल रहे हैं।

अपनी दुनिया में माँ मुझे घुसने नहीं दे रही है, मैं हूँ कि जबरन घुस आया हूँ और सुराग को पकड़ लेना चाह रहा हूँ और सुराग है कि अंगूठा दिखला रहा है।

बकसों को धकियाने पर माँ उतना नहीं किड़किड़ाई जितना खाट के खींचे जाने पर। वह चीख पड़ी ज़ोरों से जैसे नोंच खाएगी- नासपीटे, टूट जाएगी! कहाँ लेटूँगी मैं, तेरी छाती पर!!!

माँ की मैंने एक न सुनी और खाट को खींच के खड़ा कर दिया। जब से कुठरिया में खाट पड़ी थी, शायद पहली बार अब खड़ी की जा रही थी। जालों, असंख्य मकड़े-मकड़ियों, भुरभुरी सीली मिट्टी के अलावा वहाँ कुछ न था।

मैं बाहर आ खड़ा हुआ। अंदर माँ अपनी फूटी किस्मत को ठोंकती और मुझे कोसती हुई अपनी बिगड़ी दुनिया को पुरानी शक्ल दे रही थी।

अब पत्नी की कुठरिया की तरफ़ मेरी निगाह थी जो सोने की जगह भी थी और चौका भी।

कुठरिया की छत धुएँ से काली, मोर्चाखाई थी जिसमें पपड़ियाँ उधड़ रही थीं जिसमें वह अपने दुखी, भयावने कुनबे को छुपाए थी। कुनबे के सदस्य थे कि झाँकने से बाज़ नहीं आ रहे थे और उसमें से निकल पड़ना चाह रहे थे। दीवारें सीलन से ओदी थीं कि छूने से सहम जाएँगी।

ज़मीन पर एक कोने में स्टोव था और उसके गिर्द रात के ढेर सारे जूठे बर्तन जो जूठे जैसे नहीं लग रहे थे। शायद ये बता रहे थे कि दाल-रोटी की तंगी का गुस्सा उनको बेरहमी से खंगाल के उतारा गया है।

तखत पर पत्नी चित्त पड़ी सो रही थी- किसी गुड़ी-मुड़ी सड़ी कथरी जैसी। अगर कोई उसे देखे तो कथरी और उसमें फ़र्क़ नहीं कर पाए। पता नहीं क्यों पत्नी हर वक्त थकी टूटी उनींदी रहती और ज्यादातर तखत पर पड़ी सोती रहती जैसे कि अभी सोई पड़ी है। सुबह-शाम किसी तरह चाय बना देने या रोटी पाथ के रख देने के अलावा उसकी दिनचर्या निढाल पड़े रहने की थी। बेटा भी हर वक्त उससे चिपटा रहता।

पत्नी मुँह बाए, खर्राटे भरती, खुली आँखों छत देख रही थी

मानो छत के कुनबों से राज की बात कर रही हो। बाल उसके छितरे थे और तकिये से होते हुए फर्श की तरफ़ मुँह किए थे। काले रंग का फीता उनमें उलझा था जो गिरने-गिरने को था। पत्नी के बग़ल, दीवाल की तरफ़ बेटा सो रहा था। गिरने के भय से शायद पत्नी उसे दीवाल की तरफ़ लिटालती थी।

सहसा मेरे दिमाग़ में आया कि पत्नी से मेरी कब बात हुई थी और बेटे से? कोई ऐसा पल पास न था जो जाग रहा हो! क्या मैं किसी सराय में हूँ जिसमें किसी से कोई लेना-देना नहीं! ये तो हद है! - यह सोचते ही बदबू के तीखे झोंके ने मेरा बुरा हाल कर दिया, लेकिन ताज्जुब था कि पत्नी और बेटा, दोनों आराम से, बेसुध-से सो रहे थे। ज़ाहिर है, बदबू का एहसास उन्हें न था।

बदबू के सुराग़ के लिए जब मैं ज़ोरों से किड़किड़ाया, तो पत्नी ने घबराकर आँखें खोलीं और उठकर बैठ गई और उबासियों के बीच बोली- चाय बनाऊं? रोटी पका दूँ?

मुझे गुस्सा छूटा, मन हुआ कि खैंच के एक थबाड़ा दूँ राँड़ को। चाय और रोटी के अलावा कुछ सूझ नहीं रहा है हरामखोर को! गुस्से के बावजूद मैंने अपने पर नियंत्रण रखा। थबाड़ा न सही गालियाँ तो बरसती रहीं और उसी के साथ तखत के नीचे झाँकने लगा। बारीक बारीक ज़र्रों के अलावा सामने कुछ न था, संभव है, पायताने कुछ हो। इसी विचार के तहत मैंने बेटे को खिसकाया तो वह टस से मस न हुआ। गहरी नींद में था।

मैं अपना नियंत्रण खो बैठा और बेटे को ज़ोरों से थबाड़ा मारा।

दुखद था कि बेटे पर थबाड़े का ज़रा भी असर न था। वह पूर्ववत् सोता रहा। दाँत पीसते हुए मैंने मुट्ठी में उसके बाल भरे, झिंझोड़ा दिया और चटाक से फिर थबाड़ा मारा।

बेटा फिर भी बेअसर रहा।

यकायक पत्नी जो कुछ क्षण पूर्व उठकर बैठ गई थी और तुरंत ही लेटकर खर्राटे भरने लगी थी- थबाड़े की आवाज़ से शायद फिर उठ बैठी और उसने वही सवाल किया- चाय बना दूँ? रोटी पका दूँ?

मैंने उसे घूर कर देखा। उसने मेरी तरफ़ देखा भी नहीं और फिर लेट गई और पलक मींचते खर्राटे भरने लगी।

होंठ चाभते हुए मैंने कहा- मुझे न रोटी खानी है न चाय पीनी है राँड़! तू पड़ी-पड़ी सुसा और तेरा यह कमीन चेंचड़ा भी...

और फिर मैंने कुठरिया के सारे सामानों को उलट-पुलट डाला।

लेकिन सुराग़ मिला तो मिला नहीं! नतीज़ा था कि मेरा गुस्सा फिर बढ़ा और बढ़ता चला गया। यह दु:खद ही था कि मेरे गुस्से की किसी को तनिक परवाह न थी। माँ अपनी दुनिया दुरुस्त करके पूजा-पाठ करने और घंटी टुनटुनाने में लग गई थी और पत्नी चाय बनाने और रोटी पाथने में।!

मैं अंदर-बाहर फटफटाता रहा।

पत्नी ने चाय दी तो देखी न गई। रोटी दी तो उबकाई छूटी।

पूरा दिन मेरा अंदर-बाहर होने, सुराग़ ढूँढने में निकल गया। दूसरा दिन भी तकरीबन ऐसा ही गुज़रा।

तीसरे दिन जब भूख से बेहाल था, नाक बंद करके किसी तरह चाय गटकी और पानी के सहारे दो-तीन कौर निगले और बाहर आ खड़ा हुआ- बदबू का सुराग़ हाथ आ गया।

बाहर, बग़लवाले घर के सामने, ईंटों के ढेर पर मक्खियाँ भिनभिना रही थीं। दूर से उड़ती नहीं दीख रही थीं। मैंने यूँ ही ढेला फेंका तो असंख्य मक्खियाँ उड़ीं। शक हुआ। आगे बढ़ा, देखा तो मक्खियाँ ही मक्खियाँ थीं और कुछ नज़र नहीं आ रहा था। आड़े-तिरछे होकर देखा तो ईंटों के ढेर के अंदर कुछ था। पैर से अद्धा हटाया तो कुत्ते का पिल्ला था जिस पर मक्खियों की मारा-मारी थी। पिल्ला कई दिनों का मरा लग रहा था। कुछ-कुछ गला-सा, तीखी बू छोड़ता। लेकिन ताज्जुब कि चिनी ईंटों के अंदर वह था! ख़ैर, मैं बेहद खुश हुआ जैसे क़िला फ़तह कर लिया हो।

माँ से कहा तो उसने मोतियाबिंद से सफेद होती आँख़ें तरेरीं- क्या करूँ मैं, आरती उतारूँ!!! जानहार कहीं का!!! खाट खींचे जाने का गुस्सा अभी भी माँ पर था!

पत्नी ने कोई जवाब न दिया। सूनी आँखों वह मुझे देखती रही। बेटे से कहने को कोई सवाल न था। स्टोव के सामने वह बैठा था, थाली लिए, भिखारी जैसा, रोटी पाने के इंतज़ार में।

स्टोव की रोशनी में पत्नी भड़भूजन लग रही थी जो मरी-मरी सी लौ को बढ़ाने के लिए स्टोव में अंधाधुंध हवा भरे जा रही थी और हवा थी कि स्टोव में जाने से इंकार कर रही थी। इस चक्कर में स्टोव से कई बार तवा गिरा। गिरने पर वह हर बार पत्नी की गाली खाता।

पिल्ले को परे हटाकर चैन की साँस लेने की बात सोची तो इसमें दिक्क़त आ खड़ी हुई। जैसे यही कि छत पर तिवारी दिख गया। वह मुझे ऐसे देख रहा था मानों कह रहा हो कि मेरे घर के आगे बदबू क्यों बढ़ा रहा है? अपने घर की बदबू अपने घर पर रख.... मेरा बढ़ा डण्डा रुक गया और मैं अपने बैठके में आ गया। तखत पर बैठ गया। यह सोचकर कि जैसे ही तिवारी हटेगा, पिल्ला दूर, आगे बढा दूँगा और बस.....

लेकिन मैंने आड़ से देखा, तिवारी हटने का नाम ही नहीं ले रहा था। उसने पड़ोसी शर्मा को आवाज़ देकर बुला लिया था।

अब दोनों सामने छत पर थे। आपस में बात करते, ध्यान मेरी तरफ़ किए

थोड़ी देर बाद मैंने देखा तो दोनों छत पर न थे। बाहर निकला तो दोनों सीढ़ियाँ उतरते नीचे आ खड़े हुए, अपने को बातों में

मशगूल दिखाते।

मैंने यूँ ही सामने गली पर नज़र डाली। गली बहुत ही सकरी थी और बेहद गंदी। हर तरफ़ कूड़े-करकट का ढेर था और उसे बिखेरता आहार ढूँढता मुर्गे-मुर्गी, कुत्तों-सुअरों का दस्ता। गली के बीच नाली जाम थी, पानी के बहाव की वजह से कचरा सड़क पर उमड़ पड़ा था और लोग किसी तरह कूँदते-फाँदते निकल रहे थे। जगह-जगह बच्चे पाखाना फिर रहे थे- मुझे गुस्सा आया- तिवारी और शर्मा को यह गंदगी नहीं दिख रही है। सिर्फ़ मेरा पिल्ले को हटाना दिख रहा है मरदूदों को!!!

सब कुछ कचरा होने के बावजूद मैं शर्म-संकोच को ढो रहा था और गहरे असमंजस में था। तभी मैंने वह रास्ता अपनाया जिससे वह घटना घटी जिसने मुझे बेचैन कर दिया था।

हुआ यह जब तिवारी और शर्मा दरवाज़े से नहीं हटे और पूरी तरह चौकस रहे तो मैंने राजू मेहतर को बुला लाने का मन बनाया। राजू मेहतर पहड़िया पर झुग्गी में रहता था। वैसे वह नगरपालिका का मेहतर था और मुहल्ले की सफ़ाई उसी के ज़िम्मे थी। लेकिन ताड़ी के चक्कर में वह कभी-कभार ही काम पर आता था। संभव है, इस वक्त भी ताड़ी में कहीं धुत्त पड़ा हो तो क्या होगा? तब किसी और को पकड़ूँगा- इस सोच के तहत मैं पहाड़िया की तरफ़ बढ़ा।

धूल-कीच भरी चक्करदार गलियाँ पार करता जब मैं राजू मेहतर की झुग्गी के सामने पहुँचा- राजू ताडी के नशे में डूबा, धूल में पड़ा था, चित्त।

मुझे देखकर उसने उठने की कोशिश की लेकिन उठ नहीं पाया। चक्कर खाकर धूल में लोट गया।

थोड़ी देर में लटपटाती-नकनकाई आवाज़ में वह बोला जिसका आशय था कि हुजूर पहली दफे दरवाज़े पर आए हैं और वह किसी काबिल नहीं, लेकिन हुजूर जो हुकुम देंगे वह पूरा होगा- कहते हुए उसने सिर के ऊपर हाथ जोड़ने की कोशिश की, हाथ जुड़ नहीं पाए- बेकाबू होकर अग़ल-बग़ल झूल गए।

उसने लटपटाती आवाज़ में कहा- हुजूर, चिंता न करें, हमारा यह लौंडा, आपका हुकुम बजाएगा- आप हुकुम करें...

राजू ने ज़मीन पर पड़े-पड़े अधमुँदी आँखों से अपने दस-एक साल के लड़के की तरफ़ इशारा किया जो मेरे सामने तना हुआ-सा खड़ा था। कुछ-कुछ ऐसे जैसे उससे विनती करो तभी वह काम के लिए सोचेगा।

मैंने जब काम बताया तो वह गर्दन टेढ़ी करके, होंठों को बिचकाता, तीखी आवाज़ में बोला- हो जाएगा, पंद्रा रुपये लगेंगे!!!

क्या!!! पंद्रा रुपये! ज़रा-से काम के पंद्रा रुपये!!! तेरी तो... शब्दों को चबाते अंदर ही अंदर ख़ाक़ होते मैंने लड़के की ओर देखा, गाली बकते हुए।

लड़का घिसी-घिसी सी काफ़ी पुरानी जीन्स की चुस्त पैंट पहने था जिसकी आगे की जेबों में वह दोनों हाथों की उंगलियाँ खोंसे हुए मुझे ऐसे देख रहा था जैसे कह रहा हो कि पंद्रा रुपये में हवा ढीली हो गई तो खुद कर लो! उसकी पैंट के पाँयचे उधड़े थे और उसके डोरे काँतर जैसे चिपके थे। पाँव में हवाई चप्पल थी जो नल के नीचे ब्रश से चमचमाई गई थी। पैंट के ऊपर काली टी-शर्ट थी जिसमें चमकीले बटन लगे हुए थे। गले में गोल धागा था जो माला की तरह पड़ा था जिसका छोर टी-शर्ट में अंदर दबा था। वह अभी-अभी नहाकर आया था। आगे को उंछे हुए बालों में पानी चमक रहा था।

उसकी हुलिया पर नज़र डालते मैंने उसे मन में भद्दी गालियाँ दीं, कमीन पंद्रा लेगा, पंद्रा जूते मारूँगा पोंद पे, भूल जाएगा सारी हेकड़ी- ऊपर से मुस्कुराते हुए लाड़ जताया- चल तो सही, पैसे मिल जाएँगे! कहीं भाग नहीं रहे हैं!!!

- नईं, पेले बोलो! - वह सख्त होकर बोला।

पंद्रह रुपये अखर रहे थे। अफ़सोस में सिर हिलाता बोला- पाँच में तो तेरा बाप कर दे!

- बाप को छोड़ो। वह मुफत भी कर सकता है, अपुन करेगा तो पूरे पैसे लेगा, क्या?..... उसने कंधे झटके।

मैंने राजू की तरफ़ देखा जो करवट लेकर खर्राटे भरने लगा था, मुँह उसका खुला था जिसमें से राल टपक रही थी, फिर इस शोख लौंडे को जो बाप से बिलकुल उलट था- चाल-ढाल और व्यवहार से! ज़रा भी लिहाज नहीं। निगाहों से छेदता मैं बोला- कह तो दिया, दूँगा, काहे हुज्जत कर रहा है।

- कित्ते दोगे? पेले ये बताओ? लड़के के भवें तनी थीं।

- वहीं जो कहा।

- वही जो क्या?

सोचा कि कहने में क्या जाता है, कह दो। काम होने पर पाँच दो, ज़्यादा चें चें करे तो गधे की पिछाड़ी- मुस्कुराते हुए कहा- पंद्रा और क्या!

- सच कह रहे हो?

- तो क्या झूठ! हद्द है!!! झूठे अफसोस में मैंने सिर हिलाया। लड़का खुश हुआ। काम के लिए मेरे आगे-आगे मुस्तैदी से चला।

●

घर के पास पहुँचकर वह ईंटों के ढेर पर चढ़-सा बैठा। शिकारी कुत्ते की तरह वह शिकार को सूँघने लगा। जब कुछ हाथ न लगा तो वह ईंटों को हटाने लगा। इंटों के हटते ही पिल्ला सामने था- वह खुश हुआ। ज़हरीले साँप को जैसे सँपेरा मिनटों में पकड़ लेता है, ठीक उसी तरह इस लड़के ने बहुत ही फुर्ती से सामने पड़ी रस्सी का फंदा बनाया और पलक झपकते बिना हाथ लगाए, पिल्ले को फंदे में फँसा लिया। तिरछी नज़रों से मुझे देखा, मुस्कुराया जैसे कह रहा हो कि ऐसे काम होता है और अपुन इसी का पैसा माँगता था! रस्सी को उसने

कलाई में लपेटा, पिल्ले को भद्दी गाली दी जैसे कह रहा हो कि तेरे खलास होने की जगह नाला है, यहाँ क्यों निबटा, चल वहीं, चील कौवे तेरे इंतज़ार में है! अपनी बड़ी आँखों से मुझे देखता, कुत्ते को घिर्राता वह आगे बढ़ा। मानों कहना चाह रहा हो कि बस अभी आया, रफूचक्कर मत हो जाना।

पिल्ले के साथ बदबू ख़त्म हो जानी चाहिए थी, लेकिन वह घर में घर बना चुकी थी- थू-थू करता मैं बाहर आया- लड़का सामने था। पिल्ले को वह नाले में फेंक आया था और भौंहों को मटकाकर उंगलियों के इशारे से पैसे माँग रहा था।

मैंने पाँच का नोट हथेली पर रखा तो उसे मेरी ओर फेंकता तिड़तिड़ाया जैसे कोई गंदी चीज़ आ गई हो- पाँच!!! पंद्रा चाहिए!!!

- जा नहीं, सही कर दूँगा। सख़्त आवाज़ में ऐंठकर मैंने कहा।

- क्या सही कर देंगे? अकड़ता-सा वह बोला।

- तेरी हुलिया!!!

- अपुन की हुलिया राइट है साब, अपनी देखिए और अपुन का मेहनताना दीजिए।

- पंद्रा रुपये नहीं दूँगा। मैंने स्पष्ट कहा।

- क्यों नहीं दोगे?

- काम पाँच रुपये का था!

- अच्छा, बात कित्ते की हुई थी?

- होने से क्या होता है? पचास-सौ की भी हो सकती है। क्या मैं दे दूँगा- चूतिया हूँ क्या?

कमर पर हाथ रखे वह हैरत-सा मुझे देखने लगा। गोया पैसे हासिल करने की नई चाल के बारे में सोच रहा हो।

- उठा पैसे- मैंने कहा- और फूट यहाँ से!

- फूट यहाँ से!- वह आश्चर्य में था- पेसे? पेसे नहीं दोगे? कमर पर मुट्ठी टिकाकर गहरी साँस छोड़ता वह बोला। आँखें फाड़े।

- बिलकुल नहीं। पहाड़ की तरह अचल होकर मैंने जवाब दिया।

- क्यों नई दोगे साब?

- इसलिए कि तू गलत पैसे माँग रहा है।

- फिर आपने हामी काहे भरी थी!

मैंने हामी नहीं भरी थी!

- झूठ काहे बोलते हो साब! दस रुपए में ईमान काहे गलाते हो? उसने मेरी मजबूती में सूराख बनाना चाहा।

- ईमान मैं गला रहा हूँ कि तू?

अचानक छत पर तिवारी दिखा जो संभवत: पुरानी रंजिश निकालना चाह रहा था, इसलिए हमारी बातें सुनते हुए कमीनपन से हँसा, चहककर, जैसे कह रहा हो कि भंगी तक के पैसे मार रहा है कमीन! थू तेरी जात पर!!! लेकिन जाहिरा तौर पर दिखा रहा था कि बेटी की किसी बात पर हँसा है! शर्मा भी उसके पास था। वह भी ज़ोर-ज़ोर से हँसे जा रहा था, ताली बजाते, मटकते हुए। उसने लड़की को अब कंधे पर बैठा लिया और 'क्या ख़ूब है क्या ख़ूब है- कमाल है' ज़ोरों से चीखता गाना-सा गा रहा था।

मुझ पर घड़ों पानी पड़ गया। काटो तो ख़ून नहीं। फिर यकायक दाँत पीसता, फाड़ खाता लड़के से बोला, आँख निकालता है- जाता है कि करूँ बम्बू तेरी...

लड़का पहुंचा खिलाड़ी था, तिवारी और मेरी स्थिति को अच्छी तरह ताड़ गया था- तिवारी और शर्मा के अलावा पूरे मुहल्ले को सुनाता, शेर होता दहाड़ा-एक तो पूरे पैसे नई दे रहे, उस पर बम्बू की धमकी! तेरे जैसा अब अपुन भी सुलूक करेगा, पिल्ला अभी यहीं डाले जाता हूँ, देखता हूँ क्या करते हो, किस मेहतर को बुलाते हो- कहता होंठ चाभता, रोष में भरा, पैर पटकता वह नाले की तरफ बढ़ा, दौड़ता हुआ-सा।

तिवारी की इस पर हँसी गूँजी और शर्मा की 'क्या ख़ूब है, कमाल है' की तीखी बरछी जैसी मार!

मैं दाँव हार गया था। लड़का हाथ से निकल गया था। गला फाड़कर उसे बुलाना चाह रहा और पूरे-पूरे पैसे देना, लेकिन मुँह से आवाज़ नहीं फूट रही थी। जैसे ज़बान न हो।

बदबू से बड़ी बदबू के तले दबा जा रहा था मैं!!!

- 197, सेक्टर-बी, सर्वधर्म कॉलोनी, कोलार रोड, भोपाल (म.प्र.)
फोन : 0755-793312

संगीत शब्दकोश

अब तक प्रकाशित सभी 'संगीत कोश' आवश्यकता की पूर्ति में सहायक सिद्ध नहीं हो सके हैं। इसी अभाव का अनुभव करके डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग ने प्रस्तुत 'संगीत शब्द कोश' का निर्माण किया है ताकि पाठकों के लिए वह अधिक से अधिक उपयोगी सिद्ध हो सके। प्राचीनकालीन, मध्यकालीन और वर्तमानकालीन प्रचलित एंव अप्रचलित संगीत की पारिभाषिक शब्दावली को ही इसमें विशेष स्थान दिया गया है, जो अन्य किसी कोश में उपलब्ध नहीं हैं।

लेखक : डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग **प्रकाशक/मुद्रक : संगीत कार्यालय, हाथरस-204101 (उ.प्र.)**

संस्करण : द्वितीय, 2018 **मूल्य : ₹500/- (डाक व्यय पृथक)**

आलेख

राग-रस-दर्शन

-डॉ. तारूणी कारिया

आप कहेंगे कि संगीत और दर्शन का आपस में भला क्या सम्बन्ध हो सकता है? संगीत गायन, वादन और नृत्य का संगम है **(गीतं वाद्यं तथा नृत्यं, त्रयं संगीतमुच्यते)** और मोटे तौर पर दर्शन है जीव, जगत ब्रह्म और माया का संगम।

अब चाहे गायन हो, वादन हो अथवा नर्तन हो, तीनों का प्राण तत्व है ताल।

यदि ताल, लय या गति न हो तो तीनों की ही रंजकता और सौंदर्याभिमुखता ही न रहे। बेताले गायन, वादन और नृत्य वीभत्स और कर्णेकटु ही समझते जाते हैं, जिससे हममें जुगुप्सा और आक्रोश का भाव ही जागेगा। इसलिए सुर और ताल का यथोचित संगम इन तीनों विधाओं में होना बहुत ही जरूरी है।

जब हम ताल की बात करते हैं तो ताल के 'सम' की बात करना भी ज़रूरी हो जाता है। कोई भी गायक, वादक अथवा नर्तक अपनी कल्पना शक्ति के अनुसार और सांगीतिक ज्ञान के अनुसार विभिन्न स्वरों से अठखेलियाँ करके विभिन्न भाव भंगिमाओं से प्रेक्षकों को भावविभोर करते हुए जब 'सम' पर आकर रुकता है, तब उसकी कला मानो परिपूर्णता पाती है। 'सम' पर आना यानि 'ठहराव'। यानि जहाँ से शुरु किया वहीं पहुँचना। ठीक ऐसे ही जीवन में विभिन्न क्रियाकलाप करके कर्म से विरत होकर सन्तुलन की स्थिति या जिसे कहें 'स्थितप्रज्ञ' की स्थिति में पहुँचना ही 'सम' है। सम्यक भाव, सम्यक चिन्तन, सम्यक दर्शन यही 'सम' है। जीवन की गतिविधियों में शनैः शनैः परिपक्वता का भाव आना ही 'सम' है। संघर्षों के बाद विराम की स्थिति ही 'सम' है। जगत के प्रपंचों के बीच 'जीव' को अपने वास्तविक स्वरूप की पहचान हो जाना ही 'सम' है। ख़याल गायक, ठुमरी गायक या अन्य विधाओं का गायन करने वाले कलाकार राग-विशेष की स्वरावलियों से कला की बारीकियों का खूबसूरती से प्रदर्शन करते हैं। मंद्र मध्य और तार सप्तक में राग का विस्तार करते हैं। किन्तु अंत में 'सा' पर आकर विराम लेते हैं। स्वर संयोजन में यही सम है। राग हो या ताल, 'सम' पर आये बिना संगीत की परिपूर्णता नहीं दर्शायी जा सकती।

यही 'सम' जीव के लिए बेहद जरूरी है। संसार में भटकता मानव सुख की चाह करता है। शान्ति की कामना करता है। किंतु जब वह 'स्व' से रिश्ता जोड़ लेता है, अपने स्वरूप की पहचान कर लेता है, वैसे ही परम तत्व से स्वतः जुड़ जाता है।

लगभग सभी दार्शनिक जगत को भ्रम की संज्ञा देते हैं, या फिर इसे झूठा सपना कहते हैं **(ब्रह्म सत्यं जगन्मिथ्या)**। जगत के विविध आकर्षणों की चर्चा कर जीव को उससे निरत ही ब्रह्म में समा जाने की आज्ञा देते हैं, किन्तु यही जगत है जहाँ जीव कर्म का यज्ञ कर ब्रह्म की ओर जाने का मार्ग पाता है।

संगीत के क्षेत्र में राग विस्तार, स्वर संयोजन और कलाकार की कल्पना ही जगत का वह रूप है जहाँ स्वर साधना से समाधि तक पहुँचा जा सकता है। संगीत सम्राट तानसेन के गुरु स्वामी हरिदास कीर्ति की अभिलाषा से बहुत दूर स्वरों की साधना करके निजानंद हेतु जो गायन करते थे वही ब्रह्म की प्राप्ति का सहज मार्ग है, वही स्वर अनाहत नाद के रूप में परम की पुकार बन जाता है।

उत्कृष्ट कलाकार अपने गायन अथवा वादन में स्वयं के लालित्य से किसी उदास व्यक्ति के मन में उल्लास का भाव भर सकता है आनंद की अनुभूति जगा सकता है। ब्रह्म और भला किसे कहेंगे? सप्तक के सातों सुर ब्रह्म के स्वरूप का ही तो साक्षात्कार कराते हैं। ब्रह्म की प्राप्ति का आनंद यानी ब्रह्मानंद और ब्रह्मानंद सहोदर यानी 'रस' की चर्चा आगे करेंगे।

माया शब्द का सीधा संबंध जुड़ता है, मोह से। कहा जाता है न 'मोह माया' और दूसरा संबंध जुड़ता है ममता से यानी 'माया ममता'।

सीधे शब्दों में कहें तो यह माया ही है जो व्यक्ति को कर्म में प्रवृत्त रखती है। समत्व का भाव ही कर्म की सफलता सुनिश्चित करने के लिए हमें मोह की ओर ले जाता है। कहा भी गया है-

जयन्ति ते सुकृतिनो
रसासिद्धाः कवीश्वरा
नास्ति येषां यशः काये
जरा मरणजं भयम्।।

इसलिए बड़े-बड़े ऋषि मुनि श्री माया मोह से पूर्णतः विरत हो जाने के बावजूद यश और कीर्ति का मोह संवरण नहीं कर पाते। यही माया ममता के रूप में मां के मातृत्व पद की वह गरिमा बन जाती है, जिसमें अपने ही नहीं पराए बालक के लिए भी संवेदना का भाव जग जाता है। जन्म देने, पालने-पोसने बड़ा करने तक 'अहम' की भावना को पूरी तरह मारकर वही एक मां अपने बालक के मल-मूत्र विष्ठा आदि की भी परवाह ना करके उसे अपनी निस्वार्थ ममता का अवदान देती है। उसकी बाल सुलभ हठ को ही नहीं, बड़े हो जाने के बाद उसकी अवहेलना, तिरस्कार, कटु वचन या निष्ठुर व्यवहार से भी अलिप्त रहकर अपनी ममता के आंचल को तनिक भी संकुचित नहीं करती।

माँ की यही ममता मोह या माया के रूप में किसी भी बालक को दीर्घजीवी बनाने में मनोवैज्ञानिक रूप से संबल देती है। यह ममत्व

की भावना पशु पक्षियों में भी इसी रूप में दिखाई देती है। बिल्ली के बच्चे को ज़रा सा छेड़ कर तो देखिए, बिल्ली कितनी आक्रामक हो जाती है यही स्थिति हर प्राणी पर लागू होती है।

तो माया का यह रूप दार्शनिक तत्वों के संदर्भ में जीव का बंधन नजर आता है। किंतु वास्तविक रूप में जीव को जीवन देने के लिए अनिवार्य तत्व के रूप में ही दिखाई देता है। पिता यदि माया मोह से लिप्त ना हो तो क्या पितृत्व पद के कर्तव्य के प्रति निष्ठावान रह सकता है ? पति पत्नी के रिश्ते में माया मोह या कहें स्वार्थपरता का रिश्ता ना हो क्या विवाह की संस्था का रूप पवित्र या उज्जवल रह सकता है ? क्या समाज व्यभिचार से बच सकता है ? क्या नैतिक मूल्यों तथा जीवन मूल्यों का परिपालन किया जा सकता है ?

माना कि 'माया' का स्वरूप स्वार्थपरता के आवरण में निकृष्ट कार्यों की ओर हमें धकेलता जा रहा है, किंतु यही तो संगीत के 'सम' की ज़रूरत है। सम्यक वाणी, सम्यक व्यवहार, सम्यक आचार-विचार, सम्यक चिंतन ही जीवन संगीत में सरसता और समरसता बनाए रखते हैं। जीवन का 'समत्व' जब संगीत के 'सम' से मिल जाए, एकाकार हो जाए तब रस की उत्पत्ति होती है। राग-अनुराग से उत्पन्न रस जीवन दर्शन के प्रति सजग होना सिखाता है।

यही है राग-रस-दर्शन , जिसमें नाद यानि ध्वनि का अर्थतत्व समाया हुआ है।

डॉ. आशीष जैन आचार्य, सुपार्श्वमती माताजी पुरस्कार से सम्मानित

एक किलो 250 ग्राम सोने के ग्रन्थ का किया सम्पादन

डॉ. आशीष जैन आचार्य शाहगढ़ संस्कृत एवं प्राकृत भाषा और जैन दर्शन के जाने-माने विद्वान हैं। आपको पूज्य आचार्य श्री पुष्पदंतसागर जी महाराज, मुनिश्री प्रसन्नसागर जी महाराज एवं मुनिश्री पीयूषसागर जी महाराज के संसघ सान्निध्य में, फिलीपीन्स की राजकुमारी ईशा बेल, थाईलैंड की पर्यटन कैबिनेट मंत्री, नेपाल के सांसद (पूर्व केबिनेट मंत्री), वरिष्ठ पत्रकार और लेखक वेदप्रकाश वैदिक, श्रीलंका से पधारी जानी मानी पत्रकार गीतिकाजी आदि अतिथियों की गरिमामयी उपस्थिति में डॉ. अशीष जैन आचार्य शाहगढ़ को गणिनी आर्यिका माँ सुपार्श्वमती वैशिष्ट्य पुरस्कार-2018अन्तर्मना गुरुभक्त परिवार की ओर से श्रीमान् कैलाशजी संदीपजी बड़जात्या कोलकाता के सौजन्य से श्री पुष्पदंतसागर श्रमण संस्कृति न्यास, पुष्पगिरि तीर्थ (देवास) पर प्रदान किया गया। पुरस्कार से सम्मानित करते हुए (एक लाख रुपये) की राशि, पगड़ी प्रशस्ति पत्र, शॉल, माला, श्रीफल, प्रतीक चिन्ह, यंत्र और गुरु आशीष प्रदान किया गया। आपने एक किलो दो सौ पचास ग्रास सोने पर प्राचीन जैन ग्रन्थों के मंगलाचरण को संजोये ग्रन्थ का सम्पादन किया, उस ग्रन्थ को म्युजिम में रखा जायेगा। यह हजारों वर्षों तक अपनी शोभा बिखेरता रहेगा।

रपट -सुनील सुधाकर शास्त्री, द्रोणगिरि

संगीत द्वारा रोग चिकित्सा

इस पुस्तक में संगीत संबंधी जिन पद्धतियों पर प्रकाश डाला गया है वे म्यूज़िक थेरेपी, ओंकार ध्वनि का महत्व, नाद ,स्वर और तान महिमा, संगीत का मानव स्वास्थ्य पर प्रभाव, पौधों पर संगीत का चिकित्सकीय प्रभाव, संगीत संबंधी सुभाषित, संगीत चिकित्सा से संबंधित प्रकाशित इस ग्रंथ में और भी बहुत कुछ है।

लेखक : डॉ. लक्ष्मीनारायण गर्ग

प्रकाशक/मुद्रक : संगीत कार्यालय, हाथरस-204101 (उ.प्र.)

पृष्ठ संख्या : 316

मूल्य : ₹500/- (डाक व्यय पृथक)

एकल विद्यालय फाउण्डेशन यू.एस.ए.

सुधा अग्रवाल

विगत लगभग 50 वर्ष से यू.एस.ए. में जाकर बस गये कोटा के डॉ. के.के. विजय तथा श्रीमती गिरिजा विजय से उनके कोटा आगमन पर गत माह भेंट हुई। उनके कार्य कलापों तथा विचारों को जानकर मैं आश्चर्य चकित हो गई। उनकी योजनाएँ जानकर उन पर गर्व के साथ-साथ मुझे शर्मिन्दगी भी महसूस हुई कि विदेशों में बसे प्रवासी भारतीय अपने देश व देशवासियों की उन्नति के लिए जितनें समर्पित हैं, चिंतित हैं और जितने जुड़े हुए हैं काश! हमारा समाज भी ओछी राजनीति, जातिवाद, दिखावा और झूठी शान में न पड़कर सच में समाज व जनता की उन्नति के लिए उनके जैसा ही ठोस कार्य करते। श्रीमती गिरिजा एवं डॉ. विजय से उनके द्वारा विदेश में संचालित 'एकल विद्यालय फाउण्डेशन' की जानकारी हेतु उनसे मेरी वार्ता हुई।

- **'एकल विद्यालय फाउण्डेशन' के विषय में कृपया जानकारी देने का कष्ट करें।**

– श्रीमती गिरिजा विजय– यू.एस.ए. में समान विचारधारा वाले कतिपय प्रबुद्ध। प्रवासी भारतीयों ने मिलकर एक संस्था की स्थापना 2001 में की थी, तब 'एकल विद्यालय फाउण्डेशन' नामक एन.जी.ओ. का गठन नो प्रौफिट नो लौस के आधार पर हुई, इसकी संकल्पना थी कि भारत के ग्रामीण इलाकों में जहाँ शिक्षा व जागरूकता का पूर्णतया अभाव है वहाँ यथासम्भव विद्यालय प्रारम्भ किये जायें। यह प्रेरणा हमें पूज्य स्वामी विवेकानन्द के इस कथन से मिली 'अगर गरीब बच्चा शिक्षा के पास नहीं आ सकता तो शिक्षा को उसके पास जाना चाहिये।' मुख्यत: इस संगठन का उद्देश्य दूरस्थ व जनजातीय बहुत ग्रामों में शिक्षा, स्वास्थ, सफाई व पर्यावरण के प्रति जागरूकता उत्पन्न करना रहा।

- **इस योजना की क्रियान्विति के लिए तो बहुत बड़ी धनराशि की आवश्यकता हुई होगी। उसके लिए आपने क्या किया ?**

– श्रीमती गिरिजा विजय– मैं संगीत की विद्यार्थी रही हूँ अत: एटलाण्टा में हमने भारतीय संगीत प्रेमियों का एक ग्रुप तैयार किया और उसमें संगीत के कार्यक्रम आयोजित करके टिकिट द्वारा धन संग्रह किया। साथ ही समान मानसिकता वाले प्रबुद्ध वर्ग से धनराशि एकत्र की हमारा यह प्रयास आशा से अधिक सफल हुआ और उसी धन से भारत के दूरस्थ ग्रामीण इलाकों में विद्यालय प्रारम्भ किये गए।

- **डॉ. विजय समान मानसिकता वाले प्रबुद्ध वर्ग से आपका क्या तात्पर्य है ?**

– डॉ. विजय– मैं स्वयं एटलांटा में मोर हाउस में प्रोफेसर रहा तथा फिर लौक हेड एयर क्राफ्ट कम्पनी में वैज्ञानिक रहा हूँ तथा गिरिजा जी एम्री यूनिवर्सिटी में क्रोफोर्ड लान ऑफ में मेडिकल लायब्रेरी की डायरेक्टर होकर रिटायर हुई है अत: हम दोनों का उच्च आय वर्ग व प्रबुद्ध प्रोफेसरों व डॉक्टरों तथा वैज्ञानिकों से निजी सम्पर्क रहा ऐसे में उन्हें इस विचार से जोड़ना सहज हो गया।

- **आपने एटलाण्टा में कब तक और कैसे-कैसे इस मिशन को चलाया तथा क्या उपाय इसे सफल बनाने के लिए किये ?**

– श्रीमती गिरिजा विजय– प्रारम्भ में छोटे-छोटे संगीत कार्यक्रम किये धीरे-धीरे लोग जुड़ते गए और कारवाँ चलता गया। हमने एकल नेशनल मीटिंग आयोजित की तथा सन् 2005 में एक बड़े संगीत समारोह का आयोजन किया जिसका उद्देश्य मनोरंजन के साथ-साथ इस आन्दोलन के प्रति अधिक से अधिक लोगों को जोड़ना व धन एकत्र करना था और उसका हमें आशातीत फल मिला। फ्लोरीडा के डॉक्टरों की यूनिट ने प्रतिवर्ष 100 विद्यालयों के लिये दान देने की घोषणा व शपथ ली। अधिकतर जन ने दस हजार, पाँच हजार व एक हजार की राशि दान में दी।

– डॉ. विजय– गिरिजा जी को एटलाण्टा 'एकल वालिण्टियर विद म्यूजीशियन' की उपाधि दी गई। 2003 से 2006तक आप 'रीजनल वाइस प्रेसीडैण्ट' रहीं जिसमें इन्होंने नेशनल मीटिंग में भाग

लिया तथा इनके क्षेत्र में अलबामा, साउथ कैरोलीना, मिसिसीपी, कैण्टूकी, टेनिसी तथा नौर्थ कैरोलीना आये जहाँ अनेक कार्यक्रम आयोजित कर यथेष्ट धन एकत्र किया और 'प्रौमीनेण्ट एकल वालिण्टियर यू.एस.ए.' का खिताब प्राप्त किया।

- **आप आजकल लॉसवेगास में हैं। वहाँ इस आन्दोलन को आपने किस हद तक लोकप्रिय बनाया ?**

– गिरिजा जी– सेवा निवृत्ति के पश्चात 2006में हमने लॉसवेगास को अपना स्थाई निवास बना लिया। यहाँ आकर भी संगीत के कार्यक्रम आयोजित करके लक्ष्य प्राप्त किया तथा धीरे–धीरे 754 सदस्य बना लिये। इस पुनीत यज्ञ का विधिवत 11 सितम्बर 2010 को श्रीगणेश किया। हमने एकल सगीत कार्यक्रमों का प्रचार दानकर्ताओं व विद्यालयों के चयन का स्थान, दान प्राप्त करना, कार्यक्रमों का आयोजन तथा टिकिट बेचकर धन एकत्र करना आदि कार्यों से 4000 व्यक्तियों को इस आन्दोलन से जोड़ा है। सन् 2018तक इसके द्वारा 200 एकल

विद्यालयों को संचालित करने को क्रियान्वित किया है।

- **अब तक भारत में कितने एकल विद्यालयों का संचालन प्रारम्भ हो चुका है ?**

– डॉ. विजय– अब तक यह आन्दोलन अपनी 19 वर्ष की सफल यात्रा पूर्ण कर चुका है। जिसके द्वारा भारत सहित 10 देशों में अब तक 83.269 विद्यालयों में 2,259.414 बच्चों को शिक्षित करने का अभूतपूर्व कार्य सम्पादित हो रहा है। प्रदेशवार इन विद्यालयों की संख्या इस प्रकार है–

1. उत्तर प्रदेश 14,370, 2. हिमाचल प्रदेश 6,630, 3. झारखण्ड 5,384, 4. मध्यप्रदेश 5,640, 5. छत्तीसगढ़ 4,440, 6. उड़ीसा 3,572, 7. वेस्ट बंगाल 3,570, 8. जम्मू काश्मीर 7,410, 9. बिहार 4,767, 10. पंजाब 2,280। इसके साथ ही 6065 नवीन विद्यालय प्रारम्भ होने की प्रक्रिया चल रही है।

- **यह कार्य तो अकल्पनीय और अद्‌भुत है परन्तु इसमें आप स्थान का चयन कैसे करते हैं ?उसकी कार्यविधि, व्यय तथा स्वरूप क्या है ?उसके विषय में कुछ बतायें।**

– डॉ. विजय– एक एकल विद्यालय को एक वर्ष तक संचालित करने का व्यय 25000 रुपये यानि 365 डॉलर आता है, अर्थात् 1 डॉलर प्रतिदिन, इस नगण्य ही मानी जाने वाली राशि का गणित जानकर प्रवासी सहज ही इस दान के लिये सहर्ष तैयार हो जाते हैं। उसी राशि से अध्यापक का वेतन, कक्षा संचालन हेतु आवश्यक सामग्री, पुस्तकें तथा समस्त प्रशासनिक व्यवस्था व आवश्यक प्रबन्ध वहन किये जाते हैं। रही बात स्थान के चयन की तो दानकर्ता जिस स्थान के निवासी है मूलत:, अर्थात भारत के जिस स्थान पर वे पले–बढ़े हैं तथा जहाँ उनको आत्मीय एवं परिजन रह रहे हैं, जाहिर है वे उसी स्थान के विकास हेतु रुचि लेते हैं उससे उन परिजनों का सहयोग व देख–रेख की निश्चितता हो जाती है। विद्यालय के लिए स्थान का चयन भी उन्हीं के सहयोग से किसी पेड़ के नीचे, मंदिर के प्रांगण या चौपाल के चबूतरे पर कर दिया जाता है। इमारत के नाम पर कोई खर्चा नहीं किया जाता है। दूसरी बात, समय का निर्धारण भी परिस्थितियों को ध्यान में रखकर, सुविधा व आवश्यकतानुसार किया जाता है, जिससे बालकों द्वारा आर्थिक व घरेलू कार्यों की व्यस्तता व पूर्ती में व्यवधान न पड़े और वे व उनके पालक सहर्ष विद्यालय में पढ़ने के लिए तत्पर रहें, यह कार्य ग्राम समितियों द्वारा किया जाता है तथा एक अध्यापक का चयन भी उसी गाँव से किया जाता है। इस प्रकार युवा वर्ग को नौकरी का अवसर भी मिल जाता है।

- **इस महान आन्दोलन के विषय में हम लोगों को व हमारी सरकार को कोई जानकारी क्यों नहीं है ?आज तो प्रचार तन्त्र बड़ा विकसित व महत्वपूर्ण है। क्या आपने इस ओर कोई प्रयास नहीं किया ?**

– श्रीमती विजय– 'कर्मण्ये वाधिकारस्ते मा फलेषू कदाचन:' फिर भी ऐसा नहीं है हमारी भारत सरकार द्वारा आदिवासी व जनजातीय बहुल ग्रामीण इलाकों में शिक्षा के प्रसार तथा महिला सशक्तिकरण हेतु एकल फाउण्डेशन को सराहनीय कार्य करने के उपलक्ष्य में 'गाँधी शान्ति पुरस्कार' से सम्मानित किया है तथा एक करोड़ रुपये की अनुदान राशि भी प्रदान की गई है। हमारे प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी ने इस सिद्धि की प्रशंसा करते हुए कहा– "Education is a strong means to empowerment and "EKAL ABHIYAN TRUST" is working in remote areas, so that children from tribal families get the apportunity"

- **कितने एकल विद्यालय विभिन्न प्रदेशों में चल रहे हैं। क्या राजस्थान में संचालित विद्यालय किन ग्रामों में हैं कुछ के नाम बताइए।**

– इस प्रश्न के उत्तर में श्रीमती गिरिजा ने तत्काल फाउण्डेशन के प्रैसीडेण्ट श्री रमेश भाई शाह जो ह्यूस्टन में रहते हैं, आजकल वे अहमदाबाद आए हुए हैं, से फोन पर सम्पर्क किया। उन्होंने कुछ स्थानों के नाम इस प्रकार बताये– बाँरा के निकट गीगसा ग्राम, जोधपुर

के पास बरली सादरी, जावली फली, बीकानेर के पास जलेरा कला, जयपुर के पास में बन्द मुजफ्फ, काकारना और पफरी, उदयपुर के पास खाखरखेड़ा तथा अजमेर के पास लेटवा, प्रचण्डा आदि ग्रामों में ये विद्यालय चल रहे हैं।

- **क्या आपने कभी इन विद्यालयों से सम्पर्क किया? कभी वहाँ जाकर निरीक्षण किया?**

– गिरिजा जी– जी हाँ! हमने मध्यप्रदेश में ग्राम जैतगर तथा ग्राम कारटोली जाकर जानकारी ली तथा छात्र–छात्राओं को प्रोत्साहित भी किया।

- **आपके प्रयासों की जितनी प्रशंसा की जाए कम है। इसी उद्देश्य को लेकर भविष्य में कुछ नवीन योजना व योगदान के विषय में आपने कुछ विचार किया है क्या?**

– डॉ. विजय– जी हाँ! यथाशीघ्र पाँच विद्यालय– चार जम्मू काश्मीर तथा एक महाराष्ट्र में खोलने की प्रक्रिया चल रही है। हमने कुल 109 विद्यालयों के लिए इस वर्ष योगदान दिया है तथा व्यक्तिगत 25000 डॉलर (लगभग 1750000 रुपये) के व्यय से शीघ्र ही 'पहियों पर एकल' (Ekal on wheel) प्रारम्भ करने की योजना है जिसमें एक मोबाईल वैन को कम्प्युटर लैब के रूप में उन्नत करके पूर्ण साज सज्जा के साथ आधुनिक डिजिटल जानकारी देने की व्यवस्था रहेगी। इसके संचालन के लिए एक प्रशिक्षित ट्रेनर रहेगा जो स्थानीय एकल शिक्षक के सहयोग से एक ग्राम में 2.30 घण्टे का प्रशिक्षण प्रदान करेगा। इस प्रकार 15 केद्रों पर यह कार्यक्रम संचालित करने की योजना शीघ्र ही प्रारम्भ हो जायेगी। इससे जिन ग्रामीणों ने कम्प्यूटर क्या होता है यह भी नहीं देखा सुना था वे साक्षात इसका प्रशिक्षण लेकर सभ्य समाज की अधुनिक धारा से जुड़ने की योग्यता अर्जित कर पायेंगे।

- **एक बड़ा सवाल– आप लोग विदेश में रहकर अपनी जन्मभूमि के लिए इतना धन जुटा रहे हैं, प्रयास कर रहे हैं, जनजागरण, शिक्षा व स्वास्थ्य आदि के लिए। क्या आज के भ्रष्टाचार के युग में सचमुच आपके उद्देश्य व आन्दोलन का क्रियान्वयन ईमानदारी व निष्ठापूर्वक हो रहा है? क्या इसकी मानिटरिंग के लिए भी आपने कोई प्रावधान रखा है?**

– गिरिजा जी– सचमुच है तो यह बहुत ही दुख की बात! परन्तु इस पर भी हमारा ध्यान है। हमारे प्रैसीडेण्ट श्री रमेश भाई शाह प्रतिवर्ष 6माह के लिए भारत रहकर इसकी मॉनिटरिंग करते हैं।

- **इतने बड़े देश में, इतने सारे एकल विद्यालयों की मॉनिटरिंग वे अकेले तो कर नहीं सकते। क्या कुछ अन्य व्यक्तियों को प्रदेश स्तर पर सम्भाग स्तर पर यह दायित्व सौंपा गया है?**

– श्रीमती गिरिजा– जी हाँ! इस ओर भी हमारा प्रयास है जैसे कोटा के ग्रामीण क्षेत्रों वाले विद्यालयों के निरीक्षण हेतु हमने श्री रामेश्वर जी को यह दायित्व सौंपा हुआ है। सुधा जी, यदि आप इन विद्यालयों के निरीक्षण में रुचि रखती है तो हम रामेश्वर जी को कहेंगे कि वे आपके आवागमन व विजिट की व्यवस्था करें। हम इस ओर अधिक ध्यान देने के लिए संस्था से अपील करेंगे आपको जानकर प्रसन्नता होगी कि प्रवासी श्री विनोद झुन्झुनवाला ने पाँच हजार मिलियन डॉलर का दान कुछ दिन पूर्व ही दिया है।

श्रीमती गिरिजा एवं डॉ. विजय के साथ इस अप्रतिम वार्ता के पश्चात् भी मैंने धन्यवाद अर्पित करते हुए उन्हें सुझाव दिया कि इन विद्यालयों की मॉनिटरिंग को पुख्ता करें। इसमें आप यदि क्षेत्र विशेष के प्रबुद्ध सेवा निवृत्त शिक्षक– अधिकारी कर्मठ समाज सेवी जन को तथा प्रतिष्ठित समाचार पत्र के सम्वाददाता आदि को जोड़ें तो अच्छा परिणाम मिल सकता है जैसे कोटा की ही सेवा निवृत्त स्कूल शिक्षा की डिप्टी डायरेक्टर सुश्री गायत्री विजय, जो डॉ. विजय की भांजी है तथा संभागवार दो दो निरीक्षक नियुक्त करेंगे तो यह महान योजना और सुदृढ़ रूप से चल सकती है कृपया इसे सुनिश्चित करने का प्रस्ताव जरूर पारित कराने का श्रम करें।

अंत में एकल की संकल्पना व इसके कर्मठ कार्यकर्ताओं व दानदाताओं को शत–शत नमन्, धन्यवाद! साधुवाद!

वरिष्ठजनों के लिए देश का पहला समाचार

प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स

वरिष्ठजनों द्वारा, वरिष्ठजनों का, वरिष्ठजनों के लिए मुखपत्र

संपादक : अरुण तिवारी

वरिष्ठजनों द्वारा लिखित रचनाएँ जैसे - आलेख, कहानी, लघुकथा, कविता, ग़ज़ल, व्यंग्य तथा वरिष्ठजनों से संबंधित समाचार, उनकी समस्या प्रकाशनार्थ आमंत्रित है।

पृष्ठ संख्या : 8 (बहुरंगीय)

कार्यालय : प्रेरणा सीनियर सिटीजन टाइम्स, 26–बी, देशबंधु भवन, प्रेस कॉम्पलेक्स, एम.पी. नगर, जोन–1, भोपाल–462001

फोन: 0755–4940788, ई–मेल : prernasctimes@gmail.com

पुस्तक समीक्षा

लोक से लुप्त होती माटी की गंध को सहेजने का स्तुत्य प्रयास : कृति - मालवा के लोक छंद उदभव और विकास

घनश्याम मैथिल 'अमृत'

एक आम प्रचलित शब्द है लोक-परलोक, जिसमें सहज स्पष्ट होता है जहां हम निवास करते हैं, हमारी समूची धरा लोक है और इससे परे जो, अलौकिक जगत है वह परलोक है। इस लोक में रहकर इसकी चिंता करना हर प्राणि का प्रथम कर्तव्य है और हमारे यहाँ यह कहावत है और मान्यता भी कि जिसने अपना यह लोक सुधार लिया उसका परलोक अपने आप सुधर जाता है। लोक में व्याप्त है हमारी जड़ें हमारी पहचान, हमारी प्राचीन परम्पराएं हमारे नीति-रिवाज, हमारे संस्कार हमारी संस्कृति, हमारी बोली-वानी, हमारा खान-पान, हमारी वेशभूषा, यानी हम अपने लोक से विलग होकर नहीं रह सकते। कोई पेड़ भला अपनी जड़ों से कट कर कैसे रह सकता है, यदि हम अपनी ज़मीन अपनी जड़ों से कट गए तो निश्चित अपनी पहचान खो देंगे और अपनी पहचान खो देने का अर्थ क्या होता है यह हम भली-भांति जानते हैं। यह लोक होता है हमारे लोक-गीतों में, लोक संगीत में, लोक-भाषा में, लोक में मनाये जाने वाले पर्व-त्यौहारों में। आज पाश्चात्य संस्कृति के प्रभाव में हम धीरे-धीरे खासकर हमारी युवा पीढ़ी अपने लोक से तेजी से अलग होती जा रही है, हम आधुनिकता के नाम पर जितना कुछ प्राप्त कर रहे हैं उससे कहीं अधिक खोते भी जा रहे हैं, इसी चिंतन और चिंता को लेकर हमारे समाज के कुछ विद्वान इस लोक को सहेजने, बचाने के लिए अपने स्तर पर जो भी बन सकता है वह कर रहे हैं, ऐसे ही महत्वपूर्ण प्रयासों के अंतर्गत समर्पित भाव से एक निष्काम योगी की भांति चुपचाप अपना काम करने वाले शब्द-साधक का नाम है मालवा अंचल के जाने माने साहित्यकार भाई बंशीधर बन्धु का, आप कर्म से शिक्षक हैं और धर्म से साहित्यकार आप अपनी माटी से बेहद प्यार करते हैं, उसका प्रमाण हैं लोकभाषा मालवी की गद्य और पद्य विधाओं में उनका प्रचुर सृजन, परिणाम स्वरूप मालवी भाषा में उनकी अनेक कृतियां नामचीन प्रकाशकों से प्रकाशित होकर पाठकों के बीच खासी लोकप्रिय हो चुकी हैं। आपकी लोक- भाषा मालवी में प्रकाशित कृतियों में प्रमुख हैं 'अलाव' मालवी काव्य संग्रह, 'हिवड़ो हेला पाड़े' मालवी हायकू संग्रह, 'पपइवो बोली बोल' मालवी गीत संग्रह 'बच्चों के परंपरागत मालवी खेल' और अब पाठकों के सम्मुख आई है उनकी सद्य प्रकाशित कृति 'मालवा के लोक छंद उद्भव और विकास 'मध्यप्रदेश हिंदी साहित्य अकादमी संस्कृति परिषद भोपाल, मध्यप्रदेश लेखक संघ, प्रभात साहित्य परिषद् सहित अनेक महत्वपूर्ण पुरस्कारों और सम्मानों से विभूषित बन्धु जी की प्रकाशित कृतियों को पढ़ने का मुझे सौभाग्य मिला है, साथ ही मैं उन्हें व्यक्तिगत रूप से भी जानता हूँ, यानी वे जैसा लिखते हैं वैसा दिखते भी हैं और वैसा ही जीते भी हैं। उनकी हर सांस में मालवी-भाषा की मिठास है, मालवी के अपनत्व का अहसास है। वे आज भी अपने गांव अपनी माटी से यानी अपने लोक से सीधे जुड़े हुए हैं, और परिणाम है निरन्तर मालवी लोक-भाषा के माध्यम से उनके सृजन प्रकाशन का पाठकों के सम्मुख आना।

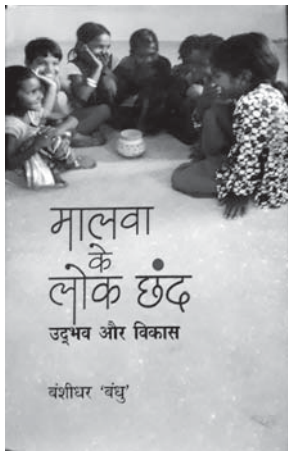

जैसा कि हम सब जानते हैं मालवा भूमि भारत के मध्य स्थित समस्त साहित्यिक सांस्कृतिक धार्मिक आर्थिक सम्पदाओं से परिपूर्ण भू-भाग है, जिसके बारे में एक लोक प्रचलित कहावत उसका सम्पूर्ण परिचय देने हेतु पर्याप्त है- 'मालवा माटी गहन गम्भीर, डग-डग रोटी पग-पग नीर'। ऐसी मालवा माटी के एक लोकप्रिय छंद 'छल्ला' को सहेजने का प्रयास किया है बन्धु जी ने, इस छंद के उदभव से लेकर इसकी सम्पूर्ण विकास यात्रा को उन्होंने बड़े श्रम बड़े जतन से सम्पूर्ण मालवा लोक से एकत्रित कर इस कृति में प्रस्तुत किया है। 'पुरोवाक' के अन्तर्गत में इस छंद को परिभाषित करते हुए वे लिखते हैं कि 'छल्ला मालवा की लोक-संस्कृति का एक ऐसा छंद है जिसमें बाल्य जीवन का चित्रण मुख्य रूप से रेखांकित होता है और सामाजिक स्थितियों-परिस्थितियों, वेश-भूषा, रीति-रिवाज तथा व्यवस्थाओं के साथ सामाजिक व भौगोलिक परिवेश का वास्तविक स्वरूप भी प्रतिविम्बित होता है।' बन्धु जी ने विलुप्त होते जा रहे इस छंद को मुद्रित रूप देकर इसे संरक्षित करने का महत्वपूर्ण प्रयास किया है। आपके इस प्रयास पर लोक-साहित्य के मर्मज्ञ विद्वान वरिष्ठ साहित्यकार पद्मश्री नर्मदा प्रसाद उपाध्याय ने 'लोक छंद उद्भव और विकास : अमर संगीत का अमिट साक्ष्य' शीर्षक से लम्बी भूमिका लिख इस कृति के महत्व को रेखांकित किया है उन्होंने ठीक ही लिखा है कि 'श्री बन्धु का यह प्रयास वास्तव में उनके दृढ़ संकल्प और सृजन सामर्थ्य की

परिणीति है। श्री बन्धु की दृष्टि इन छंदों के संकलन के सम्बंध में जिसे छल्ला कहा जाता है बड़ी वैज्ञानिक रही है। इन छल्ला छंदों, कुछ पहेलियो आदि को संकलित करते हुए उन्हें आल्हादकारी अनुभव हुआ कि सर्वाधिक छंद उन्हें बच्चों से प्राप्त हुए। वास्तव में हमारी कंठ परम्परा की यही विशेषता है कि वह पीढ़ी अपनी विरासत को सहेजती है।'

इस कृति के अनुक्रम से आप सहज अनुमान लगा सकते हैं कि बन्धु ने छल्ला छंद के एकत्रीकरण के साथ ही छल्ला छंद के बारे में कितना गहन अध्ययन व शोध किया है। लोक और लोक छंद के परिचय के साथ ही छल्ला छंद का सामान्य परिचय, छल्ला छंद का उद्‌भव और विकास, छल्ला छंद के भेद, प्यादी छल्ला के माध्यम से विस्तार पूर्वक पाठकों को दी गई है। छल्ला यानी मूँदरी या अंगूठी से है यह मुख-सुख के प्रगीत हैं, जिनमें लय और स्वरालाप के साथ चटखता होती है, यह हास-परिहास और व्यंग्य विनोद से भरे होते हैं, इनमें आंचलिक लोक-जीवन की मनमोहक झांकी के साथ ही आंचलिक लोक की सामाजिक व्यवस्था की झलकियां, लोक-जीवन शैली का यथार्थ और सांस्कृतिक सृष्टि की चटखता के अनुपम अनुभव होते हैं।

इस कृति में से कुछ छल्ला छंद पाठकों के सम्मुख उदाहरण स्वरूप यहां उद्धरण स्वरूप प्रस्तुत करना समीचीन होगा। जैसे हास्य विनोद और चुलबुलेपन की एक अनूठी बानगी देखिए-

ऊंची-निच्ची ओटली रे, लागी ताला में कूँची। लाल्यो लायो लाड़ी, तो नाम-कान से बूंची। छल्लो बोलो छल्ला रे... । एक और मजेदार मनभावन छल्ला देखें.... 'टूटो-फूटो चुल्लो रे, मियां पकाए दाल, दाल-दाल जली गयी, तो बीबी तोड़े गाल। छल्लो बोलो छल्लो रे... । मुझे इसमें एक टेसू गीत (छंद) भी पढ़ने को मिला जो मालवा से इतर दूर-दूर तक बच्चों द्वारा गाया जाता है- ''मेरा टेसू यहीं अड़ा, खाने को मांगे दही बड़ा, दही बड़े से पूँछी बात, कितने लोग तुम्हारे साथ।'' और इसी के साथ गड़बड़िया प्रगीत भी। इसी के साथ 'सुण छला रे छला। राम नाम की लूट है रे, लूट सके तो लूट, थारी सौं, म्हारी सौं, भूल गयो फिर से कूँ, लूट सके तो लूट। अंतकाल पछतायेगा रे प्राण जाएगा छूट। भक्ति-भाव से भरा उदाहरण- ''सुण छला रे छला! राम नाम की कोठरी रे, चन्दन घड़ियां किमाड, थारी सौं म्हारी सौं, भूल गयो फिर से कूँ, चन्दन घड़िया किमाड़, लाला-कूँची प्रेम का रे, खोलो श्री भगवान। इसी प्रकार कबीर की उलटबांसी जैसा एक उदाहरण ''एक अचंभा हमने देखा, कुएं में लग गयी आग। थारी सौं म्हारी सौं, भूल गयो फिर से कूँ, कुएं से लग गयी आग, पाणी जल के भसम हुआ रे, मछली खेले फाग। और अंत में कटाक्ष करता हुआ एक और उदाहरण- ''सुण छला रे छला! काला-काला खेत में रे, टीटोडी का अंडा, थारी सौं म्हारी सौं भूल गयो फिर से कूँ, टिटौड़ी का अण्डा, राम-घाट पर रगईं छानें, उज्जैनी को पण्डा।''

इस प्रकार इस कृति में इस छल्ला छंद की विविधता के रूप से पाठक परिचित होते हैं, इन छंदों के कितने राग हैं कितने रंग हैं, यह हमें इन छंदों से गुजरते हुए अनुभव होता है, इन छंदों का आनन्द सिर्फ मालवा भूमि के ही नहीं अपितु देशभर के अन्य प्रांतों के लोग भी सहज उठा सकते हैं, इस कृति को पढ़ते हुए हमें मालवा की शस्य-श्यामल भूमि में अपने होने का अनुभव होता है, यह बन्धु जी के श्रम और शब्द-कौशल का ही परिणाम है, एक साफ-सुथरी आकर्षक आवरण वाली कृति को लोक तक पहुंचाने हेतु, जो इन लोक-छंदों का सम्वर्धन, संरक्षण करेगी। भाई बन्धु को कोटि-कोटि बधाई और साधुवाद।

कृति- मालवा के लोक छंद उद्‌भव और विकास, लेखक- बंशीधर बन्धु, पृष्ठ- 150 मूल्य- 400 रु., प्रकाशक-नारवाल प्रकाशन, मैन मार्केट, रतनलाल रूंगटा के पास, पिलानी-31

- जी/एल-434 अयोध्या नगर, भोपाल-462041
मो. 9589251250

डॉ. भानावत लिखित कठपुतली पुस्तक का लोकार्पण

उदयपुर। प्रसिद्ध लोकसंस्कृतिविज्ञ डॉ. महेन्द्र भानावत लिखित 102वीं कृति कठपुतली का लोकार्पण भारतीय सांस्कृतिक इतिहास के विशेषज्ञ विद्वान सुरेश कारूणिक तथा संस्कृतिचेता डॉ. सत्यनारायण द्वारा किया गया। सांस्कृतिक स्रोत एवं प्रशिक्षण केन्द्र नई दिल्ली के उदयपुर स्थित केन्द्र में ग्यारह राज्यों के 65 शिक्षकों की उपस्थिति में आयोजित 267वीं कार्यशाला में कठपुतली कला परम्परा तथा उसकी शैक्षणिक उपयोगिता विषयक व्याख्यान के दौरान डॉ. भानावत ने बताया कि कठपुतली के प्रकाशक बालसाहित्य के जानेमाने हस्ताक्षर राजकुमार जैन 'राजन' हैं। इससे पूर्व श्री राजन ने डॉ. भानावत लिखित गवरी पुस्तक प्रकाशित की थी। श्री राजन पूरे देश में भ्रमणकर अपने द्वारा बालोपयोगी ऐसे अब तक पैंतालिस हजार से अधिक प्रकाशन शिक्षालयों में निशुल्क भेंट कर चुके हैं। सुरेश कारूणिक ने कहा कि सांस्कृतिक स्रोत नई दिल्ली द्वारा पिछले 23 वर्ष से पूरे देश में ऐसी एक

हजार से अधिक कार्यशालाएं आयोजित कर 28 राज्यों में शिक्षा के साथ सांस्कृतिक समन्वय की दिशा में आठ हजार से अधिक शिक्षक प्रशिक्षित किये जा चुके हैं।

आयोजन

छोटे से गांव बकायन में मना 125 वर्षीय शास्त्रीय संगीत समारोह

गुरु ज्ञान का भंडार हैं। बिना गुरु ज्ञान की परिकल्पना भी नहीं की जा सकती। यहाँ जन्मे महान गुरुओं के कारण ही भारत विश्व गुरु माना जाता है। अज्ञान के अंधकार से ज्ञान के प्रकाश की ओर ले जाने वाले गुरुजन सदैव पूज्यनीय हैं। भारत में इस दिवस को खास तौर से मनाने के लिए गुरु पूर्णिमा का विशेष महत्व है। आषाढ मास की पूर्णिमा गुरु पूर्णिमा कहलाती है। इस दिन शिष्यगण अपने गुरुजनों को पुष्पहार पहनाकर, रोली चन्दन से टीका करते हैं, मिष्ठान खिलाते तथा दक्षिणा आदि भी उनके चरणों में अर्पित करते हैं। इसी परिपाटी को आगे बढ़ाते हुए लगभग 5 पीढ़ी पूर्व जन्मे मूर्धन्य मृदंगाचार्य नाना साहब पानसे की शिष्य परम्परा के अग्रज ग्राम बकायन, जिला दमोह, मध्यप्रदेश में अपने परिजनों और ग्राम वासियों के साथ आज भी नाना साहब की पूजा अर्चना करते हैं तथा उन्हें श्रद्धांजलि देने और उनका आशीर्वाद प्राप्त करने के लिए शास्त्रीय संगीत समारोह का आयोजन करते हैं। इस वर्ष दिनांक 16और 17 जुलाई 2019 को मूर्धन्य मृदंगाचार्य नाना साहब पानसे की स्मृति में 125 वां संगीत समारोह आयोजित हुआ जिसमें देश के मूर्धन्य कला साधकों ने नाना साहब पानसे को स्वर और तालमयी श्रद्धांजलि अर्पित की। संगीत समारोह में चार संगीत सभाएँ- दो प्रात:कालीन तथा दो रात्रिकालीन सभाएँ केंद्रीय संगीत नाटक अकादमी, दिल्ली, उस्ताद अलाउद्दीन खान संगीत कला अकादमी, भोपाल, दक्षिण मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र, नागपुर, उत्थान साहित्यिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक संस्था, दमोह तथा स्थानीय प्रशासन के सहयोग से आयोजित किया गया।

संगीत समारोह का शुभारम्भ 16जुलाई को सद्गुरु नाना साहब पानसे की झांकी पूजन, आमंत्रित कलाकार एवं शिष्य मंडली द्वारा स्वरांजलि एवं आयोजन स्थल के निकट में स्थित इमली के पेड़ से स्वयं प्रकट हनुमानजी की पूजा अर्चना से हुआ। प्रात: कालीन सभा की पहली प्रस्तुति थी श्री अनुराग कामले (इंदौर) के सुमधुर वायलिन वादन की। श्री अनुराग कामले ने राग बैरागी की सुन्दर अवतारणा करते हुए बिलंबित, द्रुत रचनाएं एवं झाला प्रस्तुत किया। आपके साथ तबले पर थे बनारस के सुप्रसिद्ध तबलाविद पंडित पुंडलीक भागवत।

दूसरी प्रस्तुति युवा एवं उदीयमन गायक श्री गन्धार देशपाण्डे (मुम्बई) का शास्त्रीय गायन। प्रखर शास्त्री गायक पण्डित राम देशपाण्डे के सुपुत्र गन्धार ने अपनी प्रस्तुति का शुभारंभ राग नट भैरव में पंडित बबनराव हलदनकर की रचनाओं से किया। सबसे पहले एकताल में निबद्ध विलंबित ख्याल ''**भोर भई आली, सगरी रैन जागी**'', द्रुत ख्याल ''**प्रीतम घर आये रस मोरे**'' सुंदरता से किया। आपने अपनी प्रस्तुति का समापन अपने पिता द्वारा रचित एवं राग किरवानी में स्वरबद्ध भजन ''**सबरी सुरता मन भई कान्हा**'' की भावपूर्ण प्रस्तुति से किया। आपके साथ मध्यप्रदेश के युवा एवं होनहार तबला वादक श्री रामेन्द्र सोलंकी, हारमोनियम संगत सुप्रसिद्ध संगीतविद पंडित देवेन्द्र वर्मा (दिल्ली) एवं सारंगी संगत उस्ताद फारुख लतीफ ने करके कार्यक्रम को लाजवाब बना दिया।

तृतीय प्रस्तुति थी पण्डित विनोद द्विवेदी एवं श्री आयुष द्विवेदी (कानपुर) का ध्रुपद गायन। आपने राग मियाँ मल्हार में नोम तोम के आलाप के पश्चात चारताल में निबद्ध ध्रुपद ''**सावन घन बूँद बरस**'', तत्पश्चात सूलताल में निबद्ध ''**धन धन गुरु के चरण**'' और अंत में एक विशेष राग-ताल माला जो 9 मात्रा से 28मात्रा के तालों में और 20 रागों में निबद्ध थी, प्रस्तुत की जिसका प्रारम्भ राग यमन के बोल ''**यमन कल्याण गाओ हरि नाम**'' से हुआ। आपके साथ पखावज पर श्री मनोज सोलंके, सारंगी पर ग्वालियर के श्री अब्दुल मजीद खान तथा हारमोनियम पर पंडित देवेन्द्र वर्मा ने संगत करके प्रस्तुति को खास बना दिया।

सभा की चौथी प्रस्तुति थी जबलपुर से पधारीं सुश्री सुचि कौशल का कथक नृत्य। सुचि कौशल ने तीनताल में आमद, ठाट, तोड़े, चक्करदार आदि प्रस्तुत किये। आपके साथ तबले पर सुश्री मनु कौशल, पखावज पर विमर्श मालवीय (इलाहाबाद), हारमोनियम पर श्री आनन्द किशोर मिश्र (बनारस) सारंगी पर श्री मोहम्मद हनीफ हुसैन (भोपाल) की कुशल संगत ने प्रस्तुति को सुन्दर बना दिया।

अंतिम प्रस्तुति थी देश के युवा एवं अद्भुत प्रतिभा के धनी श्री यशवंत वैष्णव का एकल तबला वादन। श्री यशवंत ने तीनताल में पंजाब अंग का पेशकार, भिन्न भिन्न प्रकार के कायदे, रेले, टुकड़े, चक्करदार, परण इत्यादि कुशलतापूर्वक प्रस्तुत किये। पंडित योगेश शम्सी के सुयोग्य शिष्य यशवंत का एकल तबला वादन सराहनीय रहा। आपके, बोलों की सफाई, अच्छा निकास, तैयारी और चमत्कारिक पढ़न्त प्रस्तुति ने श्रोताओं को आद्योपांत बांधकर रखा। संगीत जगत की यशवंत से बहुत संभावनाएं हैं। आपके साथ हारमोनियम पर श्री ईश्वर दास महन्त तथा सारंगी पर उस्ताद फारुख लतीफ ने कुशलता से संगत की।

16जुलाई 2019 रात्रिकालीन सभा

रात्रिकालीन सभा की प्रथम प्रस्तुति थी सुश्री अस्मिता ठाकुर (पुणे) का कथक नृत्य। सुश्री अस्मिता ठाकुर ने कथक नृत्य की परंपरागत प्रस्तुति करते हुए आमद, ठाट, ततकार, टुकड़े, चक्करदार, परनें, गतभाव, गत निकास, कवित्त, लयकारियाँ इत्यादि सुंदरता से प्रस्तुत किये। आपकी तैयारी, पढ़न्त एवं भाव पक्ष सराहनीय रहा। आपके साथ तबले पर श्री अक्षय कुलकर्णी, हारमोनियम पर श्री देवेन्द्र देशपाण्डे, सारंगी पर उस्ताद फारुख लतीफ खां, सहगायन में श्री नागेश अडगांवकर तथा पढ़न्त में सुश्री मेघा नागरद के साथ ने प्रस्तुति को अविस्मरणीय बना दिया।

द्वितीय प्रस्तुति थी सुप्रसिद्ध युवा शास्त्रीय गायक श्री जयतीर्थ मेवुंडी (हुबली) का ख्याल गायन। आपने राग मेघ मल्हार में दो बंदिशें प्रस्तुत की जिनमें पहली बंदिश बिलंवित एकताल में तथा दूसरी बंदिश द्रुत तीनताल में निबद्ध थी। तत्पश्चात आपने राग वसन्त की चिरपरिचित बंदिश **''फगवा बृज देखन को चलो री''** प्रस्तुत की। आपने अपनी प्रस्तुति का समापन **''बाजे रे मुरलिया बाजे''** भजन से किया। आपका मधुर कण्ठ, गले की तैयारी आदि सराहनीय थी परन्तु सुधी श्रोताओं की अपेक्षा अधूरी रही। आपके साथ गायन में सहयोग कर रहे थे श्री आकाश, तबले पर पण्डित पुंडलीक भागवत (वाराणसी), हारमोनियम पर श्री जमीर खान (भोपाल) एवं सारंगी पर उस्ताद फारुख लतीफ (मुम्बई)।

आगामी प्रस्तुति थी देश के मूर्धन्य सितार वादक पद्मभूषण पंडित बुद्धादित्य मुखर्जी का एकल सितार वादन। पंडित बुद्धादित्य मुखर्जी ने राग रागेश्री में आलाप - जोड़ अद्भुत रूप से प्रस्तुत किया। तत्पश्चात आपने बिलंबित तीनताल में निबद्ध मसीतखानी गत और द्रुत तीनताल में निबद्ध रजाखानी गत एवं झाले को बहुत अच्छी तरह से प्रस्तुत किया। आपके द्वारा प्रयुक्त विविध स्वर समुदाय, लयकारियों, तिहाइयों का प्रयोग, गजब की तैयारी, लय पर जबरदस्त पकड़ के जादू ने श्रोताओं को अपने अपने स्थान पर बाँध दिया। आपकी प्रयोगधर्मिता लाजवाब थी। आपके साथ तबले पर श्री सौमेन नन्दी (कोलकाता) ने बहुत ही शानदार संगत की। आपका एक एक बोल पर संतुलन, तैयारी, संगत में चातुर्य और ध्वनि नियंत्रण सराहनीय था।

आगामी प्रस्तुति थी सुश्री मनीषा मिश्रा (लखनऊ) का कथक नृत्य। मनीषा मिश्रा ने तीनताल में वंदना, आमद, ठाट, ततकार, टुकड़े, चक्करदार, परण कवित्त आदि प्रस्तुत करते हुए लखनऊ घराने की भाव प्रधान शैली को आद्योपांत बनाये रखा। आपने दादरा **''जाओ कान्हा करो न मुझसे रार''** और भजन **'जगत में झूठी देखी प्रीत''** प्रस्तुत करके अपनी प्रस्तुति को भावपूर्ण बना दिया। आपके साथ तबले पर आपके पिता एवं गुरु पंडित रविनाथ मिश्रा, सारंगी पर पंडित विनोद कुमार मिश्रा, गायन एवं हारमोनियम संगत में श्री प्रवीण कश्यप एवं तबले पर ही आपका साथ दे रहे थे आपके सुपुत्र श्री आराध्य प्रवीण। मनीषा की प्रस्तुति ने बकायन के श्रोताओं को अपने 10 वर्ष पूर्व के दमखम का अहसास कराया।

रात्रिकालीन सभा की अंतिम प्रस्तुति थी ग्वालियर, जयपुर और आगरा घराने की त्रिवेणी के सशक्त, संवाहक पद्मश्री पंडित उल्हास कशालकर (पुणे) का सुमधुर एवं विशुद्ध शास्त्री गायन। पंडित कशालकर ने सर्वप्रथम नायकी अंग के कौशी कान्हड़ा राग से अपनी प्रस्तुति को प्रारम्भ किया। कौशी कान्हड़ा में आपने विलंबित एकताल में निबद्ध बड़ा ख्याल **''नैया मोरी पार करो अब''** और तीनताल में निबद्ध द्रुत ख्याल **''लालन तुम बिन कौन करे, तुम ही रखवारे''** अधिकार पूर्वक प्रस्तुत किया। द्रुत ख्याल में कोमल धैवत पर सम अपनी खासियत स्वयं ही कह रहा था। आपने बकायन के सुधी श्रोताओं की विशेष मांग पर राग परज की अद्भुत प्रस्तुति करते हुए द्रुत तीनताल में निबद्ध द्रुत ख्याल **''पवन चलत आली कियो चन्द्र**

खेल'' प्रस्तुत करके श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। आपके साथ तबले पर श्री मयंक बेड़ेकर (गोवा), हारमोनियम पर श्री अभिषेक शिनकर (पुणे) और गायन में साथ दे रहे थे डॉ. सदानन्द ब्रह्मभट्ट (आगरा) एवं श्री विवेक करमोहे (जबलपुर)।

17 जुलाई 2019 प्रात:कालीन सभा

समारोह के दूसरे दिन प्रात: 8बजे से नाना साहब का उनकी शिष्य परम्परा के सदस्यों द्वारा पूजन, आरती एवं पंडित रामचरण तिवारी जी के निर्देशन में नाना साहब की बन्दिशों का गायन वादन सम्पन्न हुआ।

तत्पश्चात दूसरे दिन के संगीत समारोह का प्रात:कालीन सत्र प्रारम्भ हुआ जिसमें पुणे से पधारी सुश्री श्रेयसी पावगी का शास्त्रीय गायन सम्पन्न हुआ। आपके साथ तबले पर श्री मयंक बेड़ेकर (गोवा) एवं हारमोनियम पर श्री जितेन्द्र शर्मा (भोपाल) ने कुशल संगत की।

दूसरी प्रस्तुति थी सुश्री ऋचा बेड़ेकर (उज्जैन) का एकल सरोद वादन। सुश्री ऋचा ने बिलासखानी तोड़ी में सुन्दर आलाप जोड़ प्रस्तुत करके दो बन्दिशें प्रस्तुत कीं। प्रथम बंदिश विलंवित तीनताल में तथा दूसरी बंदिश मध्यलय तीनताल तथा तीसरी द्रुत गत भी तीनताल में ही निबद्ध थी। अंत में आपने झाला बजाकर अपनी प्रस्तुति को विराम दिया। आपके साथ श्री मयंक बेड़ेकर (गोवा) ने कुशल तबला संगत थी।

तीसरी प्रस्तुति थी सुश्री अनुजा झोकरकर (इंदौर) का शास्त्रीय गायन। आपने राग जौनपुरी की सुन्दर अवतारणा करते हुए एकताल में निबद्ध बड़ा ख्याल ''**हूँ तो जय हो**'' और तीनताल में निबद्ध द्रुत ख्याल ''**मनहरवा मोरी रे चुनरिया**'' बड़ी कुशलता से प्रस्तुत किया। आपने अपनी प्रस्तुति का समापन राग भिन्न षडज में निबद्ध कजरी ''**नजरिया लागे नहीं कहीं और**'' से किया। आपकी खुली आवाज, राग पर अच्छी पकड़, विधिवत विस्तार, तानों की तैयारी और वैविध्य सराहनीय था। आपके साथ तबले पर पंडित पुंडलीक भागवत (बनारस), हारमोनियम पर पंडित देवेन्द्र वर्मा (दिल्ली) और सारंगी पर उस्ताद फारुख लतीफ (मुम्बई) ने बेजोड़ संगत करके प्रस्तुति को लाजवाब बना दिया। आपके साथ तानपूरे पर थीं अंशिका चौहान।

अगली प्रस्तुति थी पंडित राजेन्द्र गंगानी की सुयोग्य शिष्या सुश्री देवांगी पुरंदरे (दिल्ली) का कथक नृत्य। देवांगी पुरंदरे ने तीनताल में आमद, ठाट, ततकार और उसका प्रस्तार, टुकड़े, चक्करदार, गतभाव, कवित्त इत्यादि प्रस्तुत किये। देवांगी के नृत्य में जयपुर घराने की चपलता आद्योपांत दिखती रही। आपके साथ तबले पर उस्ताद शकील अहमद (दिल्ली), हारमोनियम और गायन में श्री विनोद गंगानी और सारंगी पर मोहम्मद अयूब ने कुशल संगत की।

अंतिम प्रस्तुति थी मुम्बई से पधारे युवा सन्तूर वादक श्री सत्येन्द्र सिंह सोलंकी का एकल सन्तूर वादन। सत्येन्द्र ने राग पटदीप का सुन्दर आह्वान करते हुए आलाप-जोड़ एवं दो बन्दिशें प्रस्तुत कीं। पहली बंदिश विलंवित रूपक ताल में तथा दूसरी बंदिश द्रुत तीनताल में निबद्ध थी। आपका राग के साथ सार्थक बर्ताव, क्रमश: बढ़त, तैयारी, लयकारियों और तिहाइयों का सुन्दर प्रयोग एवं झाले की तैयारी सराहनीय रही। आपके साथ तबले पर थे आपके अग्रज एवं सुप्रसिद्ध युवा तबला वादक श्री रामेन्द्र सिंह सोलंकी (भोपाल)।

समापन के पश्चात नाना साहब की कचहरी में झंडा बंधन, प्रसाद वितरण तथा स्वयं प्रकट हनुमान मन्दिर के लिये संगीत यात्रा प्रारम्भ हुई। मंदिर में नाना साहब की शिष्य परम्परा के पंडित रामचरण तिवारी, पंडित अरुण पलनितकर एवं अन्य सदस्यों ने परम्परागत बंदिशों का गायन किया। तत्पश्चात दिल्ली के युवा एवं प्रतिभाशाली शास्त्री गायक श्री रवि पाल ने केदार मल्हार की द्रुत एकताल में निबद्ध सुपरिचित बंदिश ''**सावन की बूंदनिया**'' और भजन ''**राम का गुणगान करिये**'' प्रस्तुत किया। आपके साथ तबले पर डॉ. राहुल स्वर्णकार (सागर) एवं हारमोनियम पर पंडित देवेन्द्र वर्मा (दिल्ली) ने कुशल संगत की।

हनुमान मन्दिर में अंतिम प्रस्तुति थी कानपुर से पधारे पंडित विनोद द्विवेदी एवं श्री आयुष द्विवेदी का ध्रुपद गायन। पंडित विनोद द्विवेदी एवं श्री आयुष द्विवेदी ने नाना साहब का चारताल में निबद्ध पारम्परिक ध्रुपद ''**तू है करुणा निधान**'' एवं सूलताल में निबद्ध स्वरचित रचना ''**जय जय हनुमान**'' प्रस्तुत की। आपके साथ पखावज पर श्री मनोज सोलंके (ऋषिकेश) एवं हारमोनियम पर पंडित देवेन्द्र वर्मा ने बेजोड़ संगत की। कार्यक्रम अत्यंत सराहनीय रहा। अंत में मन्दिर में आरती एवं प्रसाद वितरण सम्पन्न हुआ।

अब समय था 17 जुलाई 2019 की अंतिम रात्रि सभा का। रात्रिकालीन अन्तिम सभा का शुभारंभ मूर्धन्य बांसुरी वादक पण्डित हरिप्रसाद चौरसिया के सुयोग्य शिष्य पंडित संतोष संत (मुम्बई) का सुमधुर बाँसुरी वादन पंडित संतोष संत ने सर्वप्रथम राग दुर्गा में आलाप, जोड़, झाला तथा तीन बन्दिशें प्रस्तुत कीं। प्रथम बंदिश 9 मात्रा मत्त ताल में, दूसरी रचना मध्यलय तीनताल में तथा अंतिम रचना द्रुत तीनताल में प्रस्तुत कीं। दूसरा राग था देश, जिसमें प्रथम रचना मध्यलय झपताल में तथा दूसरी रचना द्रुत एकताल में निबद्ध थी। आपने अपनी प्रस्तुति का समापन भटियाली धुन से किया। आपके साथ आपके शिष्य श्री विशाल पाठक बाँसुरी पर अच्छा साथ दे रहे थे। तबले पर आपके साथ थे उस्ताद साबिर खान के सुयोग्य शिष्य श्री अनुतोष देघारिया। श्री अनुतोष देघारिया की बेजोड़ संगत ने प्रस्तुति में चार चाँद लगा दिये। आपके साथ तानपूरे पर थीं सुश्री नियति तिवारी (सागर)।

दूसरी प्रस्तुति थी सुश्री लिप्सा सत्पथी (दिल्ली) का ओडीसी नृत्य। आपने मंगलाचरण, पल्लवी, गीत गोविन्द की कुछ रचनायें एवं दुर्गा स्तुति आदि प्रस्तुत किये। आपका सशक्त अभिनय एवं प्रस्तुतिकरण प्रशंसनीय था। आपके साथ पखावज पर श्री प्रदीप

महाराणा, वायलिन पर श्री गोपीनाथ स्वाईं, बाँसुरी पर श्री धीरज पाण्डेय तथा गायन में आपका साथ दे रहे थे श्री सुकान्त नायक। वैसे तो सभी कलाकार बहुत अच्छी संगत कर रहे थे लेकिन श्री सुकान्त नायक की आवाज का जादू अलग था।

तीसरी चिरप्रतीक्षित प्रस्तुति थी तालयोगी पद्मश्री पंडित सुरेश तलवलकर एवं उनके शिष्यों द्वारा प्रस्तुत पखावज संकीर्तन। पंडित सुरेश तलवलकर अपनी प्रयोगधर्मिता के लिए एवं भारतीय ताल शास्त्र को एक नई व विशेष दृष्टि देने के लिए सुप्रसिद्ध हैं। पंडित जी ने प्रस्तुति के लिए सूलताल को चुना और उसमें मूर्धन्य मृदंगाचार्य नाना साहब पानसे की रचनाओं को अद्‌भुत अंदाज में प्रस्तुत किया। तत्पश्चात आपने पखावज के राजा ताल, चौताल में परम्परागत प्रस्तुति दी। प्रस्तुत एक एक रचना अपनी दिव्य गाथा स्वयं कह रही थी।

आपके साथ पखावज में आपके शिष्यगण श्री भगवत चव्हाण, श्री सुजीत लोहार, श्री कृष्ण सालुंके एवं श्री ओंकार दलवी ने अत्यन्त सशक्त प्रस्तुति दी। आपके साथ गायन में साथ दे रहे थे श्री सुरंजन खंडालकर। मूर्धन्य गायक पंडित अजय पोहनकर के शिष्य श्री सुरंजन खंडालकर की मधुर आवाज, स्वारों का लगाव एवं बंदिश प्रस्तुति सराहनीय थी परन्तु ध्रुपद की बंदिश को सुरंजत ख्याल की बंदिश की तरह ही गा रहे थे। हारमोनियम पर साथ दे रहे थे श्री अभिषेक शिनकर। प्रस्तुति के सभी कलाकार पुणे से ही पधारे थे।

श्रोताओं की विशेष मांग पर पंडित सुरेश तलवलकर ने झपताल में विधिवत पेशकार, कायदे, टुकड़े, चक्करदार एवं विविध तिहाइयों की रचनाओं को लेकर तबला वादन भी प्रस्तुत किया। तबले पर आपका साथ दे रहे थे आपके ही शिष्य श्री मयंक बेड़ेकर (गोवा) तथा हारमोनियम पर थे श्री अभिषेक शिनकर। प्रस्तुति के दौरान ऐसा लग रहा था कि पं. सुरेश जी के शरीर में नाना साहब की आत्मा प्रवेश कर गई हो।

चौथी प्रस्तुति थी पण्डित रघुनंदन पणशीकर का शास्त्रीय गायन। मूर्धन्य गायिका विदुषी किशोरी अमोणकर के सुयोग्य शिष्य पंडित रघुनंदन पणशीकर जी सहज, सरल, अद्‌भुत प्रतिभा सम्पन्न और चिंतनशील शास्त्रीय गायक है जिनके गायन में किशोरी ताई की झलक स्पष्ट दिखाई देती है। श्रोताओं की विशेष मांग पर पंडित जी ने सम्पूर्ण मालकौंस राग की सुन्दर अवतारणा करते हुए दो बंदिशें प्रस्तुत की। पहली बंदिश विलंबित एकताल में निबद्ध। ''**बरज रही**'' और पंडिता मोगूबाई कुर्डीकर की तीनताल में निबद्ध द्रुत रचना ''**बनवारी श्याम**'' प्रस्तुत की। आपने अपनी गायन प्रस्तुति का समापन पंडिता किशोरी अमोणकर द्वारा स्वरबद्ध मराठी अभंग ''**बोलावा विठ्ठल**'' से किया। आपके साथ तबले पर श्री भरत कामत (पुणे) एवं हारमोनियम पर उस्ताद जमीर खान (भोपाल) ने सधी हुई संगत की।

गुरुपूर्णिमा महोत्सव की अंतिम प्रस्तुति थी जवाहरलाल नेहरू मणिपुरी डांस अकादमी, इम्फाल की मणिपुरी नृत्य प्रस्तुति जिसमें ''वसन्तरास'' प्रस्तुत किया गया जो चैत्रमास की पूर्णिमा को सम्पन्न होता है। रासलीला में कृष्ण और गोपियों की विविध लीलाओं और अबीर-गुलाल की होली का सुन्दर मंचन किया गया जो आत्मा और परमात्मा के मिलन का परिचायक है। मणिपुरी समूह नृत्य ''वसंतरास'' में कृष्ण-निरीना यांबेम, राधा-संगीता टी.एच. गोपी-डब्ल्यू टेलिश देवी, गोपी-अतिला लेरिक्येगबम, गोपी-बबीना चानम, गोपी- एम नोंगडाबी चानू, गोपी-एल मोनिका देवी, गोपी-निर्मलादेवी गोपी-एन सी लेइशेबी, गोपी-रोशाली आर कब, सूत्रधारी- ए अपाबी देवी, रासधारी-एन जी रंजीत सिंह, बाँसुरी-पी मेघचंद्र सिंह, व्हायलिन-के एच रमेश कुमार सिंह, जिकेंद्र सिंह-प्रभारी अधिकारी के रूप में अपनी अपनी भूमिका निभाई।

डॉ. हरी सिंह गौर केन्द्रीय विश्वविद्यालय, सागर के माननीय कुलपति महोदय द्वारा संगीत विद्यार्थियों का एक दल इस शास्त्रीय संगीत महाकुंभ में शैक्षिक, सांगीतिक अध्ययन एवं मूर्धन्य कलाकारों के साक्षात्कार हेतु डॉ. राहुल स्वर्णकार एवं डॉ. अवधेश प्रताप सिंह तोमर के निर्देशन में भेजा गया जिन्होंने कार्यक्रम में बढ़ चढ़कर हिस्सा लिया। इन विद्यार्थियों में श्री यशगोपाल श्रीवास्तव, पार्थ घोष, अखिलेश अहिरवार, सुरभी खरे, चंद्रकांत गौतम, रीतिका तिवारी, तेजस पटेल, राजेन्द्र प्रताप, नमन सेन, कृतिका पाराशर, स्तुति खंपरिया, गगन राज, अर्जुन गौर, सत्यम रजक, पारुल शर्मा, खुशबू सैनी, कृति तिवारी, कौशल मेहरा, आशुतोष श्रीवास्तव, अतुल पथरोल, अपूर्वा भदौरिया, मोहनी भट्ट, समीक्षा त्रिवेदी आदि सभी की भूमिका सराहनीय थी।

आज मृदंगाचार्य नाना साहब पानसे गुरूपूर्णिमा संगीत समारोह को एक छोटे से गांव के समारोह से निकालकर विश्वविख्यात समारोह बनाने में वैसे तो पूरे पलनीटकर परिवार का ही योगदान है परन्तु पण्डित अरुण पलनीटकर एवं श्री संजय पलनीटकर के अद्‌भुत योगदान को कदापि भुलाया नहीं जा सकता।

रपट -पंडित देवेन्द्र वर्मा
353, भूतल, सूर्य नगर, फेस-2, सेक्टर-91, फरीदाबाद-121013 (हरियाणा)
मो. 9999539998, 9868361132

समवेत

कला विशेषज्ञा डॉ. मुक्ति पाराशर को राज्य स्तरीय महिला सशक्तिकरण अवार्ड

कला विशेषज्ञा और इतिहासकार डॉ. मुक्ति पाराशर (कोटा) को जयपुर में विगत दिनों ''जी राजस्थान'' न्यूज चैनल द्वारा महिला सशक्तिकरण अवार्ड-2019 से दिनांक 09 अगस्त 2019 को सम्मानित किया गया। उन्हें यह सम्मान हाड़ौती क्षेत्र में बालिका उत्थान, स्वावलम्बन तथा बालिका व नारीवर्ग में समाज सेवा तथा कला के प्रति समर्पण भाव जाग्रत करने के लिये प्रदान किया गया ज्ञातव्य कि डॉ. मुक्ति ने अपनी इसी मुहिम के माध्यम से भारत के अनेक प्रान्तों तथा दुबई तक महिला सशक्तिकरण के दौरान उल्लेखनीय सेवायें दी है। उन्हें उन्हें सम्मान, समारोह की अध्यक्षता कर रहे राजस्थान विधानसभा के अध्यक्ष डॉ. सी.पी. जोशी तथा मुख्य अतिथि राजस्थान महिला एवं बाल कल्याण विभाग की मंत्री श्रीमती ममता भूपेश तथा चैनल हेड पुरुषोत्तम वैष्णव ने प्रदान किया। इस अवसर पर राजस्थान प्रदेश की अन्य क्षेत्रों में उल्लेखनीय कार्य करने वाली 18महिलाओं को भी सम्मानित किया गया ज्ञातव्य है कि डॉ. मुक्ति की अभी तक कला एवं

इतिहास पर 4 ग्रन्थ एवं 250 से अधिक इतिहास विषयक लेख प्रकाशित हो चुके हैं।

रपट : ललित शर्मा, इतिहासकार, झालावाड़

एक शाम मिर्ज़ा ग़ालिब के नाम

कला संस्कृति को समर्पित दिल्ली से प्रकाशित पत्रिका प्रेस जोन, संगीत नायक पंडित दरगाही मिश्र संगीत अकादमी गुरुग्राम एवं सम्मान आर्ट्स सोसाइटी के संयुक्त तत्वावधान में पिछले दिनों महान् शायर ग़ालिब की याद में एक शाम त्रिवेणी कला संगम सभागार में सजाई गई जिसमें गालिब के जीवन के कई अनदेखे पक्षों को भी जानने के सार्थक प्रयास हुए। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में सुविख्यात अभिनेत्री सुषमा सेठ और सुविख्यात कवि डॉ. लक्ष्मी शंकर वाजपेयी

की उपस्थिति ने इस आयोजन को एक नया आयाम दिया। सुषमा सेठ ने अपने संक्षिप्त वक्तव्य में ग़ालिब के जीवन में आये तमाम तरह की परेशानियों और उनके परिणाम स्वरूप लिखी गई ग़ज़लों पर प्रकाश डाला, जब कि डॉ. लक्ष्मी शंकर वाजपेयी ने साहित्यिक परिप्रेक्ष्य में ग़ालिब की विभिन्न रचनाओं की सारगर्भित व्याख्या करते हुए उनके जमाने के एक और मशहूर शायर जौक जो बादशाह बहादुर

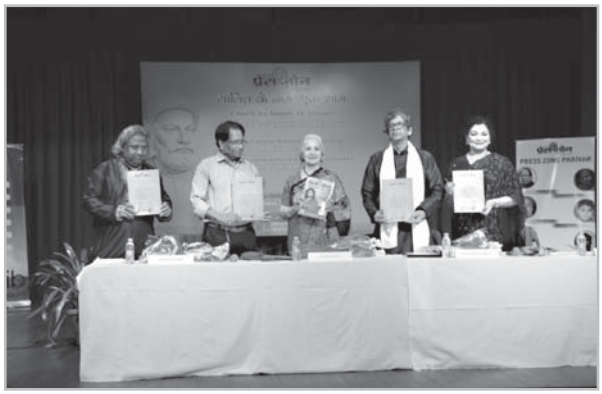

शाह जफर के उस्ताद भी थे से उनकी छेड़-छाड़, नौंक झोंक और प्रतिद्वंदिता और रोचक ढंग से प्रकाश डाला, प्रेस जोन पत्रिका के प्रकाशक और प्रधान संपादक जनाब सरफराज अहमद तथा संगीत नायक पंडित दरगाही मिश्र संगीत अकादमी के अध्यक्ष पंडित विजय शंकर मिश्र ने दोनों सम्मानित अतिथियों को लाइफ टाईम एचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित किया।

डॉ. मीलू वर्मा नई पीढ़ी की बहुचर्चित गायिका हैं, उन्होंने इस शाम ग़ालिब की कई सुनी- अनसुनी रचनाओं को गाकर इस शाम को यादगार बना दिया, जैसी ग़ज़लों को जब मीलू वर्मा ने अपनी रेशमी और कशिश भरी आवाज से छुआ तो महफिल वा वाह कह उठी। मीलू

की आवाज में एक अलग तरह की गहराई है, वे शायर के ज़ज्बात को समझकर गाती हैं।

दिल ए नादाँ तुझे हुआ क्या है, रहिये अब ऐसी जगह चलकर जहाँ कोई ना हो, जौर से बाज़ आये पर बाज़ आये क्या है बस कि हर एक उनके इशारे पे निशां और बेख़ुदी बेसबब नहीं ग़ालिब। बाजीचा ऐ अतफाल है दुनिया मेरे आगे। हर एक बात पे कहते हो कि तुम कि तू क्या है। दिया ये दिल अगर उसको बशर् है क्या कहिये।

इसके बाद सुविख्यात युवा कथक नृत्यांगना अस्मिता मिश्र ने मंच सम्भाला और ग़ालिब की एक से बढ़कर एक रचनाओं पर सम्मोहक अभिनय किया। अस्मिता ने नृत्य के पहले कहा कि ग़ालिब की रचनाओं को नाचना बहुत कठिन है क्योंकि वे दर्द में डूबी हुई हैं। लेकिन अस्मिता ने अपने शानदार अभिनय से ग़ालिब को जैसे मंच पर साकार कर दिया। डॉ. मीलू वर्मा और अस्मिता मिश्र को सुषमा सेठ ने प्रेस जोन पत्रिका की ओर से क्रमशः स्वर तारिका और अभिनय तारिका सम्मान से सम्मानित किया। इसके अलावा सुविख्यात गायिका विदुषी मिताली चक्रवर्ती, शोभना राव और सुमन देवगन तथा अभिनेता डॉ अश्विनी कुमार को भी प्रेस ज़ोन पत्रिका की ओर से लाइफ टाईम अचीवमेंट अवार्ड से नवाजा गया। अतिथियों का स्वागत और आभार प्रदर्शन पंडित विजयशंकर मिश्र ने किया इस अवसर पर प्रेस ज़ोन पत्रिका के ग़ालिब विशेषांक का भी लोकार्पण हुआ।

मशहूर अभिनेता अब्बास हैदर नकवी- जिन्होंने ग़ालिब की वापसी के नाम से ग़ालिब पर 50 से ज्यादा शो किये हैं ने जब ग़ालिब की वेषभूषा और रूप सज्जा में मंच पर पर्दापण किया तो एक बार तो पूरा सभागार ही चौंक पड़ा। फिर उन्होंने अपनी दमदार आवाज में ग़ालिब के जीवन की कुछ घटनाओं का जिक्र इस अंदाज़ में किया जैसे वे ही ग़ालिब हैं, मंच पर उनके आगमन और अभिनय ने इस आयोजन को एक अलग ही रंग दे दिया। सब मिलाकर यह आयोजन अनूठा बन गया.... जिसके लिए प्रेस ज़ोन पत्रिका परिवार के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं।

रपट : पं. विजयशंकर मिश्र

सुर-ताल के आनन्द में झूमे श्रोता

स्नेह लता मेमोरियल फाउंडेशन द्वारा त्रिदिवसीय ''शुद्धध्वनि'' फेस्टिवल, त्रिवेणी कला संगम के सभागार में आयोजित किया गया। जिसमें देश के कई श्रेष्ठ कलाकारों में उस्ताद साबिर खान, केडिया ब्रदर्स, पंडित गोबिंद बोस, पंडित दीपक महाराज इत्यादि कलाकार शामिल थे। इस समारोह के दूसरे दिन अर्थात 25 अगस्त रविवार की शाम को पहला कार्यक्रम देश के शीर्षस्थ कलाकारों का था जिसमें पंडित रोनू मजूमदार (बांसुरी) व विद्वान कुमारेश जी (वॉयलिन) की जुगलबंदी ने श्रोताओं को आत्मविभोर कर दिया जिनके साथ तबले पर पंडित तन्मय बोस व मृदंगम पर पंडित हरिकुमार बी. थे। उसके बाद मंच सम्हाला युवा गायक रवि पाल ने। रवि ने अपने गायन की शुरुआत वर्षाकालीन राग मेघ से की। इसमें विलम्बित एकताल ''**पिया नाही घर**'' व झपताल में ''**गरजे घटा घन**'' और द्रुत तीनताल में ''**घन घनन घन घोर घोर**'' निबद्ध बंदिशों में चौनदारी और तैयारी, दोनों का सम्मोहक प्रदर्शन किया। मेघ के स्वरूप को सारंग अंग के कई मिलते-जुलते रागों से बचाना अपने आप में एक चुनौती है और जब सभागार में सामने रोनू मजूमदार, उस्ताद करीम नियाजी, तन्मय बोस, चेतन जोशी, विनोद पाठक, प्रदीप चक्रवर्ती, देवशीष अधिकारी इत्यादि जैसे महान संगीत पंडित मौजूद हों इसमें रवि पूरी तरह से कामयाब रहे और कई बार श्रोताओं की तालियां भी प्राप्त कीं। इसके बाद उन्होंने भिन्न षड्ज की ठुमरी ''**याद पिया की आए**'' गाई। हम सब इसमें ''**हाय राम**'' शब्दों पर बड़े गुलाम अली खां साहब की गाई तान की प्रतीक्षा कर रहे थे। जब रवि ने वह तान लगाई, तो दिल खुश कर दिया।

बाद में श्रोताओं की फरमाइश पर ''**आओगे तुम जब ओ साजना**'' गाकर अपना गायन समाप्त किया। रवि पाल के साथ तबले पर संगत कर रहे थे दिल्ली के एक और प्रतिभाशाली युवा तबला वादक श्री रोमान खान। तबले का चैनदारी के साथ सही समय पर सही इस्तेमाल करने वाले कलाकारों में से एक हैं रोमान। आज भी उन्होंने सबको मोह लिया। खास कर झपताल में ठेके की विविधता और ठुमरी के साथ बजाई लग्गी तो कमाल के थे। सारंगी पर ऐजाज ने अच्छा साथ निभाया। मंच पर इन सभी प्रतिभावान युवाओं को पंडित चेतन जोशी ने सम्मानित किया।

रपट- पंडित देवेन्द्र वर्मा

संगीत विदूषी सुधा अग्रवाल का सम्मान

मुखिया मदन लाल जोशी स्मृति संस्थान जो विगत पन्द्रह वर्षों से हवेली संगीत तथा भारतीय कला एवं संस्कृति के प्रसार हेतु समर्पित संस्था है, उसके द्वारा श्री वल्लभम् कथक समारोह एवं श्रीकृष्ण जन्मोत्सव का भव्य आयोजन 18अगस्त को किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि लोकसभा अध्यक्ष माननीय श्री ओम बिरला जी थे तथा अध्यक्षता वल्लभकुलतिलक श्री श्री 1008श्री विनय बाबा तथा श्री 108श्री शरद बाबा द्वारा की गई।

कार्यक्रम में रेडियो के हवेली संगीत गायक की प्रस्तुति के पश्चात् कथक गुरु श्रीमती बरखा जोशी व नन्हीं-नन्हीं बालिकाओं द्वारा कथक नृत्य व श्रीकृष्ण की लीलाओं व रास नृत्यों की भावपूर्ण व मनोहारी प्रस्तुति अत्यन्त सराहनीय थी। तत्पश्चात् संगीत एवं कला के क्षेत्र में उल्लेखनीय योगदान के लिये संगीत विदूषी श्रीमती सुधा अग्रवाल जी को माल्यार्पण, प्रशस्ति-पत्र तथा शॉल ओढ़ाकर सम्मानित किया गया। साथ ही सेवा निवृत्त विभागाध्यक्ष डॉ. निशि माथुर तथा हवेली संगीत गायक को भी सम्मानित किया गया।

लंदन में संदीप राशिनकर की कलाकृतियों का प्रदर्शन

इंदौर। शहर के चित्रकार संदीप राशिनकर की कलाकृतियों का इन दिनों ग्रीनविच आर्ट गैलरी लंदन में प्रदर्शन चल रहा है । विस्तृत जानकारी देते हुए जोनाक्वेस्ट । आर्ट की सुश्री जोना ने बताया कि अपनी अभिनव रेखांकन शैली से भारत में प्रसिद्धि प्राप्त प्रतिष्ठित चित्रकार संदीप के मिक्स मीडिया में किये गए पंद्रह कलाकृतियों को यहां प्रदर्शित किया गया है। उल्लेखनीय है कि संदीप के इन समसामयिक चित्रों की श्रृंखला में किये गए कामों की विषयवस्तु में एक अभिनव चिंतन अपनी दार्शनिकता के साथ उपस्थित होता है । आकर्षक संकेतों का प्रभावी व संतुलित संयोजन जहां दर्शकों को सम्मोहित करता है वहीं रंगों का चयन , बर्ताव व उनके उपयोग की कुशलता दर्शकों को प्रभावित करती है । ओनस पोर्टर नेचर व्हिसपर्स , पेरोल , लॉन्चिंग द पिस जैसे शीर्षकों की कलाकृतियों का प्रदर्शन यहां

सितम्बर के अंत तक जारी रहेगा । अलहदा दर्शन , विषयवस्तु की अभिनव शैली की ये कलाकृतियां यहां के दर्शकों को आकर्षित और प्रभावित कर रही है ।

राष्ट्रीय ख्याति के बाईसवें अम्बिका प्रसाद दिव्य स्मृति पुरस्कारों हेतु कृतियाँ आमंत्रित

साहित्य सदन, भोपाल द्वारा राष्ट्रीय ख्याति के बाईसवें अम्बिका प्रसाद दिव्य स्मृति प्रतिष्ठा पुरस्कारों हेतु साहित्य की अनेक विधाओं में पुस्तकें आमंत्रित की गई हैं। उपन्यास, कहानी, कविता, व्यंग्य, निबंध एवं बाल साहित्य विधाओं में, प्रत्येक विधा के लिए इक्कीस सौ रुपये राशि के साहित्य-पुरस्कार प्रदान किये जाएँगे। दिव्य-पुरस्कारों हेतु पुस्तकों की दो प्रतियाँ, लेखक के दो छायाचित्र एवं प्रत्येक विधा की प्रविष्टि के साथ दो सौ रुपये प्रवेश शुल्क भेजना होगा। हिन्दी में प्रकाशित पुस्तकों की मुद्रा अवधि 1 जनवरी 2015 से लेकर 31 दिसंबर 2018के मध्य होना चाहिए। राष्ट्रीय ख्याति के इन प्रतिष्ठापूर्ण, चर्चित दिव्य पुरस्कारों हेतु प्राप्त पुस्तकों पर गुणवत्ता के क्रम में दूसरे स्थान पर आने वाली पुस्तकों को दिव्य प्रशस्ति पत्रों से सम्मानित किया जाएगा। श्रेष्ठ साहित्यिक पत्रिकाओं के सम्पादकों को भी दिव्य प्रशस्ति पत्र प्रदान किये जाएँगे। अन्य जानकारी हेतु उपरोक्त पते एवं मोबाईल पर सम्पर्क किया जा सकता है। पुस्तकें प्रेषित करने का पता है- श्रीमती राजो किजल्क, साहित्य सदन, 145-ए, साईंनाथ नगर, सी-सेक्टर, कोलार रोड, भोपाल-462042, पुस्तकें प्राप्त होने की अंतिम तिथि है 30 दिसंबर 2019।

रपट - जगदीश किजल्क

संयोजक दिव्य पुरस्कार, साहित्य, सदन, 145-ए, साईनाथ नगर, सी-सेक्टर, कोलार रोड, भोपाल-462042, सम्पर्क : 09977782777, 0755-2494777

ओटला पार्टी समूह प्रदर्शनी इंदौर

'फ्रेंडशिप डे' के अवसर पर 4 अगस्त 2019 को इंदौर की देवलालीकर कलाविथिका में एक चित्रकला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जो कि अपनी तरह की पहली एवं अनूठी कला प्रदर्शनी थी। 'ओटला पार्टी-स्पेक्ट्रोम ग्रुप' के सदस्यो की दशको पुरानी इस दोस्ती को समर्पित इस कला प्रदर्शनी का उद्घाटन इसी ग्रुप के सदस्य एवं इंदौर स्कूल ऑफ आर्ट्स के भूतपूर्व विद्यार्थी श्री वसंत चिंचवड़कर, श्री वसंत आगाशे एवं श्री भालू मोढ़े द्वारा किया गया। इसके बाद इस ग्रुप के ऊपर श्री अभ्युदय केलकर द्वारा बनाई गयी एक डॉक्यूमेंट्री फिल्म दिखायी गई। इसके पश्चात् कलाचर्चा का आयोजन हुआ जिसमें श्री चिंचवडकर, श्री आगाशे, श्री मोंढे के अलावा इंदौर, म. प्र. के वरिष्ठ चित्रकार श्री श्रेणिक जैन जी भी उपास्थित थे। इनसे बातचीत व इस पूरे कार्यक्रम की एंकरिंग श्री संजय पटेल ने की। स्मिता नागदेव का कहना है कि मेरे पिता भी सचिदा नागदेव जी से कई बार सुना था कि 1958 - 60 में वो और इंदौर के अन्य कई संघर्षरत- युवा कलाकार इंदौर के जेल रोड स्थित 'लाल रेडियों' के पास एक रंग की दुकान के सामने के एक ओटले पर बैठकर सेव - परमल खाते हुऐ आधी रात तक कला-चर्चा किया करते थे। कभी - कभी पास की स्टारलिट टॉकीज में 'माइकल एंजिलो', 'वॉनगॉग' जैसे विश्वप्रसिद्ध चित्रकारों की अंग्रेजी फिल्में लगती तो ये सब देखने जाते थे। चूँकि एक ओटले पर इनकी महफिल जमती थी इसलिये इस गुप का नाम 'ओटला पार्टी' पड़ा। इस ग्रुप के सदस्य श्री सचिदा नागदेव, श्री नरीन नाथ, श्री वसंत आगाशे, श्री वसंत चिंचवडकर, श्री नारायण मोंढे, श्री सुहास निंबालकर, श्री भालू मोंढे, श्री चन्दू नाफड़े, श्री पाण्डु पारनेरकर, श्री सुरेश वराडकर, श्री विजय जाधव, श्री माटे एवं श्री पण्डित, श्री सुरेश चौधरी थे। ये सभी कलाकार म.प्र. के कलाजगत की नींव माने जाते है एवं इनमें से कई अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त चित्रकार बने।

'फेंडशिप डे' केअवसर पर इस कलाप्रदर्शनी का आयोजन स्मिता नागदेव (सितार वादिका) श्रीमती भावना चौधरी (चन्द्रा) ...एवं श्रीमती प्रज्ञा आगाशे (दुराफे), चित्रकार द्वारा किया गया था जिसका उद्देश्य इनके काम को जनता, कलाकारो के सामने लाना एवं इन सबकी निस्वार्थ, निश्छल दोस्ती की मिसाल नयी, युवा पीढ़ी के सामने रखना था, जो कि आजकल के युग में नहीं देखने मिलती। यह कला प्रदर्शनी 3 दिनों के लिये लगायी गयी थी। जिसमें दूसरे व तीसरे दिन भी कला-चर्चा आयोजित की गयी। पहले दिन की कलाचर्चा में श्री श्रेणिक जैन ने 60 से 80 के दशक के कला परिदृश्य की जानकारी दी। श्री वसंत चिंचवडकर जी ने बताया कि किस तरह ये ग्रुप बने, इनके कार्य, इत्यादि पर विस्तारपूर्वक बताया। श्री वसंत आगाशे ने बताया कि उस वक्त ये सभी दोस्त बहुत कड़की में रहते थे व साधनों के अभाव के बावजूद भी इन्होंने कई सफल प्रदर्शनियाँ देश के अलग-अलग शहरों में की। इतना उत्साह व साहस था कि अपनी प्रदर्शनी के उद्घाटन के लिये बड़े-बडे मंत्री, कलाकार, राजदूत आदि को आमंत्रित करते थे। बडे चित्रकारों को अपनी पेंटिंग दिखाकार उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करते थे। श्री भालू मोंढे ने बताया कि वो इस ग्रुप के सबसे छोटे सदस्य थे एवं इन सबको असिस्ट करते थे उन्होंने यह भी बताया कि ये सभी दोस्त एक - दूसरे की प्रदर्शनी हेतु पूरे जतन से हम्माली भी करते थे जैसे- फ्रेम बनाना, पेंटिंग स्ट्रेच करना, कारपेंटरी, केनवास तैयार करना, पेंटिंग भेजना इत्यादि। (आज की पीढ़ी को यह समझना मुश्किल है कि ये सभी काम एक चित्रकार उस वक्त खुद अपने हाथो से ही करता था) इंदौर के सुप्रसिद्ध एंकर श्री संजय पटेल ने उद्घाटन के पश्चात् के इस कला परिचर्चा सत्र को बहुत ही बखूबी लोगों के सामने पेश किया। उन्होंने मंचासीन सभी कलाकारों से उनके उस जमाने के अनुभव याद करवाये। कार्यक्रम के शुरुआत में सितार वादिका स्मिता नागदेव ने बताया कि किस तरह से इन कलाकरों की इस प्रदर्शनी के आयोजन का ख्याल मन में आया एवं इस 'ओटला पार्टी' के अपने पिता सचिदा नागदेव (अन्तर्राष्ट्रीय चित्रकार) द्वारा सुने अनुभव उन्होंने दर्शकों के साथ साझा किये। किस तरह इस ग्रुप के नरीननाथ किस्मत आजमाने दिल्ली गये एवं बहुत छोटे से कमरे में रहते थे और वही उनके दूसरे दोस्त काम की तलाश में आकर कई - कई दिन रूकते थे। एक दोस्त कमाता था और बाकी दोस्तों की मदद करता था। काम का उद्देश्य कला में सतत् निखार लाना था ना कि सिर्फ पैसे कमाना।

इस प्रदर्शनी में विशेष रूप से 'इंदौर स्कूल ऑफ आर्ट्स'

एवं 'इंदौर म्यूजिक कॉलेज' के प्रिंसिपल श्री अरुण मोरोणे भी उपस्थित थे। कार्यक्रम के अंत में 'ओटला पार्टी' व 'स्टौक्ट्रोम' के सदस्य कलाकरों को उनके ही पुराने फोटो के कोलाज के रूप मे 'स्मृति - चिन्ह' भेंट किये गये। इस प्रदर्शनी का विशेष आकर्षण कलाविथिका के Entrance पर इस ग्रुप के 60 से 80 के दशक के कई पुराने व दुर्लभ फोटो लगाये गये थे। अंत में सभी कलाकारो व दर्शको का आभार चित्रकार श्रीमती प्रज्ञा आगाशे (दुराफे) ने किया।

रपट - स्मिता नागदेव

मुंशी प्रेमचंद जयंती का आयोजन

भोपाल, 3 जुलाई। साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्था 'कलामंदिर' भोपाल एवं शा. विद्या विहार उ. मा. कन्या विद्यालय भोपाल के संयुक्त तत्वावधान में मुंशी प्रेमचंद की जयंती का आयोजन, विद्या विहार, कन्या हायर सेकंडरी स्कूल, प्रोफेसर कालोनी, भोपाल के सभा कक्ष में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता डॉ. गौरीशंकर शर्मा, गौरीश ने की। मुख्य अतिथि के रूप में वरिष्ठ कहानीकार श्री मुकेश वर्मा, विशिष्ट अतिथि, लेखिका संघ की अध्यक्ष श्रीमती अनीता सक्सेना, एवम वरिष्ठ साहित्यकार द्वैय श्री घनश्याम सक्सेना, श्री युगेश शर्मा तथा प्राचार्य श्रीमती निशा कामरानी भी मंचासीन रहे। कार्यक्रम का सफल संचालन साहित्यकार गोकुल सोनी ने किया। कार्यक्रम में विद्यार्थियों द्वारा एवं आमंत्रित अतिथियों द्वारा वर्तमान में ''मुंशी प्रेमचंद की प्रासंगिकता'' पर विचार व्यक्त किये गये। श्री घनश्याम सक्सेना ने कहा कि हम जो अपने जीवन में जीते हैं, उन्हीं घटनाओं से साहित्य का सृजन होता है। श्री युगेश शर्मा का विचार था कि प्रेमचंद जैसे साहित्यकार अपने समृद्ध साहित्य से समाज को समृद्ध करते हैं हमें उनसे शिक्षा लेना चाहिए। डॉ. गौरीशंकर शर्मा गौरीश ने कहा कि मैं इस विद्यालय से ही प्रधानाचार्य पद से सेवानिवृत्त हुआ अत: मेरा आत्मीय लगाव इस विद्यालय से है। विद्यार्थियों के साहित्यिक उत्थान हेतु मैं कलामंदिर के माध्यम से भरपूर प्रयास करूंगा। उन्होंने प्रेमचंद के लेखन से प्रेरणा लेने की बात कही। प्राचार्य श्रीमती निशा कामरानी ने विद्यालय की साहित्यिक गतिविधियों पर प्रकाश डाला। विशेष अतिथि श्रीमती अनीता सक्सेना ने कहा कि प्रेमचंद गरीबों की आवाज थे, उन्होंने दलित, नारी विमर्श तथा समाज के शोषित और गरीब वर्ग पर अपनी कलम चलाई। मुख्य अतिथि कहानीकार श्री मुकेश वर्मा ने प्रेमचंद के लेखन की बारीकियों पर विस्तार से प्रकाश डालते हुए कहा,

कि आज से लगभग सौ वर्ष पूर्व हिंदी का यह समृद्ध स्वरूप नहीं था, जो आज है। हिंदी के विकास में मुंशी प्रेमचंद और उन्हीं जैसे अनेक साहित्यकारों का योगदान है। हम सब को उनसे प्रेरणा लेकर प्रतिदिन कुछ न कुछ अवश्य लिखना चाहिए। विद्यालय में ओपन माइक प्रतिस्पर्धा के माध्यम से विद्यार्थियों का साहित्यिक विकास किया जा सकता है। उन्होंने राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त को भी याद किया। कु. अनामिका एवं श्रीमती साधना श्रीवास्तव ने भी अपने उद्‌गार व्यक्त किये अंत में आभार श्रीमती नंदिनी पाठक ने व्यक्त किया। कार्यक्रम में कक्षा नौ से बारहवीं कक्षा तक की सभी छात्राओं के साथ ही, सर्वश्री महेश सक्सेना, चरणजीत सिंह कुकरेजा, भँवरलाल श्रीवास, बिहारीलाल सोनी, दुर्गारानी श्रीवास्तव, सुषमा श्रीवास्तव, कमल किशोर दुबे, रमेश नन्द, जवाहर सिंह, कर्नल गिरजेश सक्सेना के साथ ही कई साहित्यकारों ने अपनी उपस्थिति दी।

रपट - गोकुल सोनी

जब हम अच्छा खाने, अच्छा पहनने और अच्छा दिखने में खर्च करते हैं
तो अच्छा पढ़ने-लिखने और सोचने-समझने की खुराक में खर्च क्यों न करें !

कलासमय

प्रबंध संपादक

सम्पर्क- जे-191, मंगल भवन, महावीर नगर, ई-6, अरेरा कॉलोनी, भोपाल- 462016 फोन : 0755-2562294, मो.-94256 78058
ई-मेल : kalasamaymagazine@gmail.com / bhanwarlalshrivas@gmail.com

आपके पत्र

पत्रिका के बहाने

आदरणीय श्रीवास साहब,

सादर वन्दे, आपके सुयोग्य तथा सुदृष्टिबंध संपादन का 'कला समय' पत्र कला का समय और समय की कला की संचेतना तथा संलेखना बन साहित्य कला संगीत संस्कृति की विविध धारणाओं को रससिक्त करता अनेकों प्रबुद्ध-प्रज्ञालुओं में उपयोगी दस्तक दे रहा है। मेरे क्षेत्र में लोक से जुड़े साहित्य-संस्कृति-कला से संबंद्ध जीवनधर्मियों को वैद्यराज की पुड़िया की तरह कला समय को मैं स्वर्ण भस्म सी वापरने की सलाह देता हूँ। यह अतिशयोक्ति नहीं, मेरी विनम्र पठनीय उक्ति है। सौवां अंक सवा सौ साल तक के लिए संग्रहणीय संरक्षणीय तथा अ-क्षरणीय बने। मूल्यवान पुरानी पत्र-पत्रिकाएँ जहाँ भी हैं वे मूल्यांकन हीरे से भी अधिक मूल्यवान बनी प्रकाशमणि बनी हुई हैं। मेरी शुभकामनाएँ। सादर आभार।

- डॉ. महेन्द्र भानावत
(उदयपुर, राज.)

कला समय का मई-जून 2019, अंक-6, मेरे हाथ में जैसे ही आया इस अंक की साज़ सज्जा गेटअप ने मन मोह लिया। निसंदेह इसका हर अंक पहले अंको की तरह किसी न किसी विशिष्ट विषय के इर्द-गिर्द घूमता है मगर इसकी अपनी विशेषताएँ हैं जो पाठको को प्रथम दृष्टया बाह्य आवरण की बदली फिज़ा ही मन मोहक दृश्य आँखों मे नाचने लगता है। पन्ना पलटते ही बदला संपादन कला का रंग बिखेरता नज़र आता है यों तो अंतर्वस्तु कला संस्कृति और अनूठे विचारों और भावनाओं को सहजता से सहेजती संवारती चलती है परन्तु अनेक अछूते विषयों पर पाठक को परिचित कराती चलती है। मैं इस विषय का मर्मग्य नहीं हूँ परंतु विश्व कविता में एक से एक मूर्धन्य रचनाकारों की कव्तायों से गुजरते हुआ अविभूत हो गया। मुझे कुछ ऐसा लगा कि पत्रिका में फॉण्ट छोटा होने से महज जैसे पाठक को कठिनाई होगी। समग्रत: पत्रिका पठनीय और धरोहर के रूप में सहेजने योग्य है। शत्-शत् बधाई।

- डॉ. जयजयराम आनंद (भोपाल, म.प्र.)

पत्रिका ही नहीं, एक रचनात्मक अनुष्ठान

पत्रिका मुफ्त मांग कर, कृपया हमारे अनुष्ठान को आघात न पहुँचाएं

'कला समय' के सदस्य बनें- ❍ पत्रिका की वार्षिक/द्वैवार्षिक /आजीवन सदस्यता ग्रहण करें। सदस्यता शुल्क मनीआर्डर, ड्राफ्ट, ऑनलाइन अथवा व्यक्तिगत रूप से भुगतान किया जा सकता है।

'कला समय' की एजेंसी के नियम- ❍ आपके गांव, कस्बे, शहर में सांस्कृतिक पत्रिका 'कला समय' की एजेन्सी के लिए सम्पर्क करें। ❍ कम से कम दस प्रतियों से एजेन्सी शुरू की जायेगी। ❍ पत्रिका कुरियर अथवा रजिस्टर्ड बुक पोस्ट से भेजी जायेगी। डाक खर्च एजेन्सी को वहन करना होगा। ❍ कमीशन, प्रतियों की संख्या के आधार पर।

स्थायी तथा सम्पादकीय पता और दूरभाष क्रमांक के साथ सम्पर्क करें- जे-191, मंगल भवन, महावीर नगर, ई-6, अरेरा कॉलोनी, भोपाल- 462016 Email : bhanwarlalshrivas@gmail.com मो. 9425678058, 0755-2562294

लेखकों/कलाकारों से ❍ कला, संस्कृति और विचार के अछूते पहलुओं पर सृजनात्मक, शोधात्मक और सूचनात्मक आलेख, टिप्पणियां, रिपोर्ताज, साक्षात्कार, ललित निबंध, कविताएँ, छायाचित्र, रेखांकन तथा शोध आमंत्रित हैं। ❍ रचनाएँ कागज के एक ओर टाइप की हुई तथा मौलिकता का प्रमाण पत्र संलग्न हो। कृपया रचना के साथ पर्याप्त डाक टिकिट लगा लिफाफा भी संलग्न करें। रचनाएँ और चित्र ई-मेल से भी भेजे जा सकते है।

प्राथमिकता के साथ : Chanakya फोंट / वर्ड फाइल / PDF फॉर्मेट में ही भेजें।

अनुरोध : वे सदस्य जिनका वार्षिक / द्विवार्षिक सदस्यता शुल्क समाप्त हो रहा है, कृपया अपनी सदस्यता का नवीनीकरण करायें। सदस्यों को पत्रिका साधारण डाक से भेजी जाती है। नहीं मिलने की स्थिति में सदस्यता शुल्क के साथ ₹ 120/- का प्रतिवर्षानुसार रजिस्टर्ड डाक शुल्क अतिरिक्त भेजा जाना होगा।

-संपादक

स्वतंत्रता दिवस पर प्रदेशवासियों को हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएं

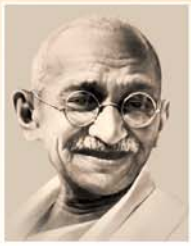

सर्वोच्च कोटि की स्वतंत्रता के साथ सर्वोच्च कोटि का अनुशासन और विनय होता है। अनुशासन और विनय से मिलने वाली स्वतंत्रता को कोई छीन नहीं सकता है।

– महात्मा गांधी

भारत की सेवा का मतलब लाखों पीड़ित लोगों की सेवा करना है, इसका मतलब गरीबी, अज्ञानता, बीमारी और अवसरों की असमानता को समाप्त करना है .... जब तक पीड़ितों के आँसू खत्म नहीं हो जाते, तब तक हमारा काम खत्म नहीं होगा।

– पं. जवाहर लाल नेहरू

''स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर हम देश के सभी स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के त्याग एवं बलिदान का स्मरण कर उन्हें शत्–शत् नमन करते हैं। आइये सब मिलकर संकल्प लें कि हम प्रदेश के एक–एक व्यक्ति को खुशहाल बनाकर एक नया मध्यप्रदेश बनायेंगे।''

कमल नाथ

मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

मध्यप्रदेश जनसम्पर्क द्वारा जारी

आकल्पन : मध्यप्रदेश माध्यम/2019

D-17001

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं स्वत्वाधिकारी भँवरलाल श्रीवास द्वारा दृष्टि ऑफसेट, 36-37, प्रेस कॉम्प्लेक्स, जोन नं-1, एम.पी. नगर, भोपाल से मुद्रित एवं जे-191, मंगल भवन, ई-6, महावीर नगर, अरेरा कॉलोनी, भोपाल (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक-भँवरलाल श्रीवास